Index

Topics **Page**

1. Introduction

श्री गणेशाय नमः

गणपति परिवारं चारुकेयूरहारं,

गिरिधरवरसारं योगिनी चक्रचारम्।

भव–भय–परिहारं दुःख दारिद्रय–दूरं

गणपतिमभिवन्दे वक्रतुण्डावतारम्।।1।।

जो अपने समस्त परिवार के साथ सुशोभित हैं, जिन्होंने केयूर (बाहों के आभूषण) और मोती की माला धारण कर रखी है, जो कृष्ण के समान श्रेष्ठ बल से युक्त, एवं साक्षात् वक्रतुण्ड के अवतार माने जाते हैं, उन सांसारिक भय, दुःख दरिद्रता को हरने वाले भगवान् गणपति की मैं, वन्दना करता हूँ।

गजाननाय पूर्णाय सांख्यरूपमयाय ते।

विदेहेन च सर्वत्र संस्थिताय नमो नमः।।

जिनका रूप सांख्यशास्त्र से जानने योग्य है, जो शरीर से अदृश्य होते हुए भी सभी जगह स्थित है, ऐसे पूर्ण परमेश्वर गजानन को, बार–बार नमस्कार है।

ज्योतिषस्य बीजं गणितम, अंक ददाति तत्फलम्।

यथा ज्योतिष चमत्कृत्य, अंकंमहात्म्यं तदृशम्।।

ज्योतिष का उत्पत्ति कारक गणित है, अंक शास्त्र भी ज्योतिष के समान ही फल प्रदान करता है। जिस प्रकार ज्योतिष का चमत्कार प्रभावशाली होता है। उसी प्रकार अंक भी प्रभावशाली है।

2. Nature of Number

विज्ञान और अंक शास्त्र में अन्योन्याश्रय सम्बन्ध है। ज्योतिष का ही नहीं यद्यपि संसार का प्रारम्भ **''अंक''** से ही हुआ है। जहाँ से काल का प्रारम्भ हुआ वह भी काल का उत्पन्न कारक पिता **''अंक''** ही है। इस प्रकार जीवन में अंक का बहुत बड़ा महत्व है।

अंक के बिना जब सृष्टि का प्रारम्भ संभव नहीं, तो अंक के बिना कोई भी कार्य का शुभारम्भ भी असंभव होता है। अंक ही वैदिक गणित का सृजन किया और अंक के आधार पर ही ब्रह्म स्वरूप का दर्शन हुआ।

ज्योतिष वेदांग, सृष्टि के उदय से प्रलय काल तक की सभी घटनाओं का आधार स्तम्भ है, ज्योतिष तथा समय का विवरण अंक शास्त्र के अनुसार प्राप्त होता है। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि अंक और ज्योतिष में सम्बन्ध है।

सांसारिक वस्तुओं को देखने से ऐसा प्रतीत होता है, कि किसी भी वस्तु के अनेकानेक रूप हैं। अलग–अलग रंगों को एक दूसरे के साथ मिला देने से एक तीसरा रंग जैसे रक्त (लाल) और पीत (पीला) रंग मिला देने से एक तीसरा नारंगी रंग बन जाता है। नीला और पीला मिलाने से हरा इस प्रकार हजारों रंग बन सकते हैं, परन्तु वास्तव में ये रंग मात्र सात हैं। सात रंगों का मूल रंग सफेद अर्थात् रंग रहित है जिसे शुद्धप्रकाश कहते हैं। सूर्य प्रकाश पर ये सात रंग दृश्य होते हैं परन्तु सूर्य की किरण शुद्ध उज्ज्वल एवं रंगहीन प्रतीत होती है।

इसी प्रकार सृष्टि की संरचना पंचतत्व–पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश तत्व से हुई है। यह सम्पूर्ण संसार पंच तत्वों का स्वरूप है। इन तत्वों की उत्पत्ति, आकाश से हुई है। सांसारिक पदार्थों का मूलगुण, शब्द है इसी कारण शब्द को "शब्द ब्रह्म" अर्थात् ईश्वर का प्रतीक माना गया है और इसे ही परमात्मा कहते हैं। प्रत्येक शब्द को अंक अथवा संख्या में परिवर्तित कर,

उसकी माप की जा सकती है। शब्द से मंत्र का निर्माण हुआ है, मंत्र को शक्ति प्रदान करने के लिए एक अनुपातिक गणना कर मंत्र को पूर्ण शक्ति प्राप्त हो जाती है, तब वह मंत्र अपना पूर्ण प्रभाव प्रदान करता है। किसी भी शब्द या मंत्र को निश्चित संख्या में जपने अथवा पढ़ने से वह शक्तिशाली हो जाता है। सूर्यग्रह का मंत्र 7000 जपने से सूर्य की अनुकूलता प्राप्त होती है। इसी प्रकार चन्द्रमा का 11000, मंगल का दस हजार, बुध का नौ हजार बृहस्पति का उन्नीस हजार शुक्र का सोलह हजार शनि का तेईस हजार, राहु का अठारह हजार एवं केतु के सतरह हजार निर्धारित मंत्र का जाप करने से सूर्यादिग्रह की अनुकूलता होती है। संख्या और शब्द का परिचय हमें ऋषि मुनियों से प्राप्त हुआ है। किसी देवता के मंत्र में 22 अक्षर होते हैं, तो किसी देवता के मंत्र षडक्षरी भी होते हैं।

इसी प्रकार संख्या और क्रिया का घनिष्ठ सम्बन्ध है, अंक की गणना शून्य से की जाती है, ''शून्य'' निराकार ब्रह्म का प्रतीक है तथा पूर्ण ब्रह्म का द्योतक है। शून्य का सृष्टि में बड़ा भारी महत्व है, अंक का किसी वस्तु से सम्बन्ध होना यह प्रमाणित करता है कि, ज्योतिष शास्त्र में अंकविद्या का सम्बन्ध अधिक महत्वपूर्ण है।

अंक किसी भी वस्तु और क्रिया सम्बन्ध को प्रमाणित करता है, हमारे शास्त्र में 108 मणियों की माला बनाने का विधान है, तथा इन संख्याओं का अपना अलग–अलग महत्व है। जैसे धन की प्राप्ति हेतु 30 मणियों की माला का प्रयोग किया जाता है, तो सभी प्रकार की सिद्धियों के लिए 27 मणियों की, इसी प्रकार 54 मणियों की माला और 108 मणियों की माला सभी प्रकार की सिद्धियाँ प्रदान करती हैं। अभिचार कर्म के लिए 15 मणियों की माला व्यवहार में लायी जाती है।

मूलांक और भाग्यांक किसे कहते हैं ?

किसी भी जातक की जन्म तारीख अथवा जन्म तारीख के योग को मूलांक कहा जाता है।

उदाहरण— 1. किसी भी जातक की जन्म तारीख 4 = 4 है। अथवा जन्म तारीख 13 (1+3) = 4 है इसे मूलांक कहते हैं।

2. किसी भी जातक की जन्म तारीख महीना और इस्वीसन् सभी के योग जैसे 24.12.1973 है अर्थात् 2+4+1+2+1+9+7+3 = 29 (2+9) = 11=1+1=2 को भाग्यांक कहते हैं।

ज्योतिषीय विचार हेतु जब किसी भी जातक की जन्मपत्रिका बनाई जाती है तो जन्मपत्रिका निर्माण की प्रक्रिया में जन्म तारीख जन्म मास जन्म वर्ष, जन्म समय एवं जन्म स्थान की जानकारी के पश्चात् ही, किसी भी प्रकार का ज्योतिषीय विचार संभव हो पाता है।

ज्योतिष में अंक का बहुत बड़ा महत्व है। ज्योतिष की प्रथम प्रक्रिया गणना ही मानी जाती है। यदि गणित की प्रक्रिया पूरी नहीं हो तो, फलादेश भी संभव नहीं है, अर्थात् ज्योतिष और अंक का सम्बन्ध स्थापित होता है। प्रस्तुत पुस्तक अंक ज्योतिषीय गणना हेतु एक पृथक प्रक्रिया प्रदर्शित करती है, जो पूर्णतः वैदिक गणित, अंक विज्ञान अर्थात् अंक विद्या पर आधारित है, ज्योतिषीय विद्याओं में अंक विज्ञान अर्थात अंक शास्त्र विधान इस प्रकार है।

अंक विधान

जिस किसी भी व्यक्ति की जन्म तारीख, मास, वर्ष समय एवं जन्मस्थान तथा ज्योतिष के आधार पर जन्मपत्रिका बना ली जाती है, तथा जन्मनक्षत्र के आधार पर नामकरण भी कर लिया जाता है। उस जातक का नाम चन्द्र नक्षत्र के अतिरिक्त अन्य नाम भी रखते हैं। जिस प्रभाव से जन्मराशि और प्रचलित नाम राशि दोनों का शुभाशुभ प्रभाव जीवन पर पड़ता है। दूसरी ओर अंक ज्योतिष में जन्म तारीख के आधार पर मूंलाक एवं जन्म तारीख माह और ईस्वी सन् इन सभी अंको को जोड़कर जो अंक प्राप्त होते हैं। **''उसे भाग्यांक कहते है।''** इस प्रकार अंक विचार से फलादेश किया जाता है। परन्तु जिस किसी व्यक्ति की जन्मतारीख अर्थात जन्मविवरण ज्ञात नहीं है। अंक विज्ञान उस व्यक्ति के प्रसिद्ध नाम अर्थात् प्रचलित नाम के आधार पर वैदिक एवं पाश्चात्य पद्धति के अनुसार अंक विचार करते आए हैं, उस विचार का मानव जीवन से गहरा सम्बन्ध माना जाता है। अंक (विज्ञान) को पाश्चात्य ज्योतिष की देन मानते हैं क्योंकि बाजारों में आंग्ल भाषा तथा हिन्दी भाषा में भी

कीरो–सैफेरियल आदि पाश्चात्य भविष्यवक्ता की अनेक पुस्तकें उपलब्ध हैं। अंग्लभाषी भारत वर्ष में भी बहुत अधिक है परन्तु अपनी देव भाषा, वेदभाषा, संस्कृत भाषा ,के विद्वान कम हैं, जो वैदिक गणित का अध्ययन करते हुए भी अंक विज्ञान का प्रचार–प्रसार विलम्ब से पाकर इस Numerology (वैदिक गणित) को विदेश की देन समझ बैठे हैं। ज्योतिष और अंक का स्वाभाविक संबंध, वैदिक काल से है, अनेक विद्वानों ने वैदिक गणित का अध्ययन कर, इस निष्कर्ष पर विलम्ब से पहुँचे और स्वीकार किये– कि अंक विज्ञान वास्तव में वैदिक गणित है,जिसका सीधा सम्बन्ध, प्रकृति और ग्रहों से है।

यह स्वीकार करने योग्य बात है कि, हिन्दी वर्णाक्षर के अंक और अंग्रेजी वर्णाक्षर के अंको में, सुगतमता पूर्वक अंग्रेजी अल्फाबेट के आधार पर अंक ज्योतिषीय विचार अधिक सुगम प्रतीत होता है।

प्राचीन ऋषियों ने ''शब्द'' काल संख्या आदि सभी का इस प्रकार सामंजस्य कर दिया था कि, प्रत्येक नाम और नामाक्षरों की संख्या पिंड बनाने से उसके गुण उस संख्या से प्रकट हो जाते थें, क्योंकि प्रत्येक संख्या का संम्बन्ध राशियों से है। इस प्रकार सभी ग्रह एवं राशियों के अपने–अपने गुण, स्वभाव, अंक से प्रकट हो जाते हैं। इस अंक विद्या का सीधा सम्बन्ध मंत्र–यंत्र और तंत्र विद्या से भी है, जिसके आधार पर हानि–लाभ, जय–पराजय, सफलता असफलता आदि, शुभाशुभ बातों का ज्ञान प्राप्त हो जाता है।

इस प्रकार किसी भी नाम को संख्या में परिवर्तित करके यह ज्ञात हो जाता है कि, किस अंक से संम्बन्धित कौन सा व्यक्ति किस प्रकार का है।

स्मरण रहे कि जिस नाम के पुकारने से सोया–व्यक्ति जग जाए, आगे जाता मनुष्य पीछे मुड़कर देख ले, उस नाम का जीवन पर निश्चय ही प्रभाव पड़ता है। साथ ही उस नाम से बनने वाले अंकों का प्रभाव भी मानव जीवन पर निश्चित् रूप से पड़ता है। नाम और नाम की संख्या अनादि काल से फलादेश में उपयुक्त होती आ रही हैं। अंक विद्या में प्रत्येक अंक के गुण के अनुसार, एक अंक किसी अन्य अंक का मित्र, शत्रु या सम होता है ।

अंकों में सबसे छोटी संख्या 1 तथा सबसे बड़ी संख्या 9 है। उसी प्रकार अंग्रेजी वर्णाक्षर का अंकों से मूल्यांकन होता है, जो प्रस्तुत तालिका से स्पष्ट होता है, इसे स्वामी अंक कहते हैं।

अंक विवरण तालिका

वर्णाक्षर	स्वामी अंक	वर्णाक्षर	स्वामी अंक
A,I,J,Q,Y	1	E,H,N,X	5
B,K,R	2	U,V,W	6
C,G,L,S	3	O,Z	7
D,M,T	4	F,P	8
			9

नौ अंक सबसे श्रेष्ठ है तथा इसे किसी भी वर्णाक्षर का स्वामित्व नहीं मिला। प्रस्तुत अंक तालिका कीरो के सिद्धान्त के अनुसार प्रस्तुत है।

नाम और संख्या–नाम और जन्मतारीख अर्थात् व्यक्ति, वस्तु और संख्या में सामंजस्य है इस कारण किसी व्यक्ति के जीवन में अथवा, राष्ट्र देश के जीवन में किसी संख्या विशेष का महत्त्व हो जाता है, यह मात्र कल्पना या संयोग नहीं, यद्यपि महत्त्वपूर्ण तथ्य है।

अंकविद्या का रहस्य इतना गम्भीर है कि, इसमें जितनी गहराई तक जायेंगे उतने ही हस्तगत होंगे।

यदि अंक विद्या के नियमों को जानकर अपने जीवन से सम्बन्धित अंको के शुभ–अशुभ दिन–मास वर्षादि के सम्बन्ध में विवेचना करें तो आप अपने को अधिक लाभान्वित अनुभव करेंगे।

सभी विद्याओ में कुछ अपवाद हुआ करता है, अंक विद्या के जो साधारण नियम बताये गये हैं उसमें भी आंशिक अपवाद हैं, यदा–कदा गणित किया गया वर्ष

मास दिन अपनी शुभता के स्थान पर अशुभता अथवा निष्फल होता है। यह निरूत्साहित होने का विषय नहीं है। गहन अध्ययन तथा दीर्घकाल तक अनुभव करने से यह स्पष्ट हो जाता है कि कौनसा अंक शुभ है अथवा अशुभ कौनसा अंक प्रभावशाली है अथवा कौनसा प्रभावहीन है।

अंक विद्या, ज्योतिष या अन्य शास्त्र की मौलिकता, विषय की दार्शनिकता पर निर्भर करती है तथा अंक शास्त्र का भी पृथक दर्शन है, जो विश्वास और आकर्षण द्वारा अपनी सार्थकता प्रस्तुत करता है। सभी अंकों का अपना–अपना अलग महत्व है।

अंको के मित्र–शत्रु

अंकों के प्रभाव की जानकारी हेतु अंक और ग्रह की निम्नांकित तालिका प्रस्तुत की जाती है।

अंक	स्वामी ग्रह	मित्रांक	समांक	शत्रु अंक
1	सूर्य	4–8	2,3,7,9	5,6
2	चन्द्रमा	7–9	1,3,4,6	5,8
3	गुरु	6–9	1,2,5,7	4–8
4	हर्षल–राहु	1–8	2,6,7,9	3,5
5	बुध	3–9	1,6,7,8	2,4
6	शुक्र	3–9	2,4,5,7	1,8
7	नेप्चून–केतु	2–6	3,4,5,8	1,9
8	शनि	1–4	2,5,7,9	3,6
9	मंगल	3–6	2,4,5,8	1,7

अंक प्रभाव का उदाहरण

BHARAT VARSHA

2,5,1,2,1,4,6,1,2,3,5,1 = 33 (3+3) = 6

भारतवर्ष का नामांक 6 है अतः 6 संख्या से सम्बन्धित मास दिवस वर्ष आदि में शुभाशुभ घटनायें अधिकाधिक होती हैं।

1. अपने देश मे 24–1–1950 को संविधान लागू = 24 (2+4) =6

2. गाँधी की प्रसिद्ध डंडी यात्रा 6 (अप्रैल) को हुई = 6

3. अपना देश भारत स्वतंत्र हुआ 15 (अगस्त 1947) = 6

4. पं. जवाहर लाल नेहरू देश के प्रथम प्रधान मंत्री बनें 15(अगस्त 1947)=6

5. डा. राजेन्द्र प्रसाद प्रथम राष्ट्रपति चुने गए 24 (जनवरी 1950) = 6

6. सरदार बल्लभ भाई पटेल का निधन 15 (दिसम्बर 1950) = 6

7. भारत पाक का प्रथम युद्ध हुआ 6.9.1965 = 6

8. श्रीमती इन्दिरा गाँधी प्रधानमंत्री बनी 24.1.1966 = 6

9. श्री वी.वी. गिरि भारत के राष्ट्रपति बने 24.8.1969 = 6

10. डॉ. फखरूद्दीन अली अहमद राष्ट्रपति बने 24.8.1974 = 6

11. मोरारजी देसाई ने प्रधानमंत्री पद की शपथ ली 24.1.1977 = 6

12. भारतीय जनता पार्टी का गठन हुआ 6.4.1980 = 6

13. आचार्य विनोवा भावे का निधन 15.11.1982 = 6

14. मोरारजी देसाई भारत रत्न बनें 24.8.1991 = 6

15.जलियांवाला अग्निकाण्ड हरियाणा (400 बच्चो की मृत्यु) 24.12.1995 = 6

16. पटना उच्च न्यायालय में लालू यादव की अर्जी, नामंजूर 24.7.1997 = 6

17. काठमाण्डू से इंण्डियन एयर लाइन्स के एयर बस सहित 189 यात्री का अपहरण 24.12.1991 = 6

अंको के देवता जपादि तालिका 3

अंक	देवता	धातु	रंग	दिशा	वस्तुएँ	धान्य	पदार्थ	मंत्र	जप संख्या
1.	सूर्य	स्वर्ण,ताम्र	भूरा,पीला, सुनहरा	पूर्व	लाल वस्त्र,केशर, र.चंदन,ताम्र	गेहूँ	घृत	ऊँह्रांह्रींह्रौंसःसूर्यायनमः	6000
2.	शिव	रजत,	श्वेत हरित, काला	वायव्य	शंख,कपूर, श्वेतचं.श्वेतवस्त्र	चावल	दही	ऊँश्रांश्रींश्रौंसःचन्द्रमसेनमः	13,000
3.	विष्णु	स्वर्ण	चमकीला, हरा गुलाबी,जामुनी	ईशान	हल्दी,पुस्तक, पीला वस्त्र	चनादाल	घृत	ऊँग्रांग्रींग्रौंसःगुरवेनमः	10,000
4.	गणेश	शीशा	नीला, खाकी	नैर्ऋत्य	कम्बल,तेल, तिल,नीली	तिल	तेल	ऊँ छ्रांछ्रींछ्रौंसःराहुवेनमः	18,000
5.	लक्ष्मीना.	स्वर्ण, पीतल	खाकी,श्वेत, चमकीला	उत्तर	साबुतमूंग,कस्तूरी, कांसा,हरा वस्त्र	साबुत मूंग	घृत	ऊँब्रांब्रींब्रौंसःबुधायनमः	9000
6.	देवी	प्लेटिनम रजत	नीला,आसमानी	आग्नेय	मिश्री,दहीश्वेतचं. चावल,श्वे.वस्त्र	चावल	दूध	ऊँद्रांद्रींद्रौंसःशुक्रायनमः	16,000
7.	नृसिंह	अभ्रक, स.धातु	श्वेत,हरा,काफूरी	नैर्ऋत्य	स.धान्य,नारियल, शस्त्र,धूम्रवस्त्र	स.धान्य	तेल	ऊँस्रांस्रींस्रौंसःकेतवेनमः	7000
8.	भैरव	लौह	गहरा,नीला, काला,काकरोजी	पश्चिम	सरसों,खड्ग,तेल, तिल,काला वस्त्र	उड़द	तेल	ऊँप्रांप्रींप्रौसःशनयेनमः	23,000
9.	हनुमान	ताम्र	गुलाबी, गहरा लाल	दक्षिण	लालवस्त्र,केशर, रक्तचंदन,ताम्र	मसूर	घृत	ऊँक्रांक्रींकौसःभौभायनमः	10,000

18. उड़ीसा में ईसाईयों को जिन्दा जलाया गया 24.1.1999 = 6

19. कारगिल में सेना द्वारा चार प्रमुख चोटियों पर कब्जा 6.7.1999 = 6

20. काठमाण्डू नई दिल्ली जाने वाले विमान को कांधार ले गए 24.12.1999 =6

उपरोक्त सभी घटनाएँ अंक 6 की विशेषता को दर्शाती हैं।

अंक के अनुसार अनुकूल नाम

जन्म तारीख के अनुसार बनने वाले अंक के अनुकूल, जातक का नाम है, अथवा नहीं–यदि जन्मांक अनुकूल है तो, क्या जीवन पर उसका प्रभाव अंक के अनुसार पड़ रहा है अथवा नहीं, इस सम्बन्ध में कतिपय तथ्यपूर्ण विचार एवं उदाहरण प्रस्तुत किया जाता है।

उदाहरण– एक अंक घटाने की विधि

G A N E S H A   G A N E S H

3+ 1+ 5+ 5+ 3+ 5+ 1=23=5   3+ 1+ 5+ 5+ 3+ 5 = 22=4

दो अंक बढ़ाने की विधि

B I N D R A   B R I N D R A

2+ 1+ 5+ 4+ 2+ 1=15=6   2+ 2+ 1+ 5+ 4+ 2+ 1=17=8

तीन अंक बढ़ाने की विधि

R A M C H A N D   R A M C H A N D R A

2+1+ 4+ 3+ 5+ 1+ 5+ 4=25=7   2+1+ 4+3+ 5+1+5+4+ 2+ 1=28=1

नामांक फल

जातक के नाम के योग संख्या को नामांक कहते हैं। उदाहरण के तौर पर, किसी जातक का नाम योग 17 होता है, तो उस जातक के जीवन में अंक–1,7,8 इन तीन अंकों का मिला जुला फल मिलता है । अर्थात सूर्य, केतु और शनि तीनों का प्रभाव जातक के जीवन को प्रभावित करता है।

उदाहरणः–

B R I N D R A

2+2+1+5+4+2+1=17=8 नामांक

अंक 1 स्वामी सूर्य अंक 7 स्वामी केतु अंक 8 स्वामी शनि

उपर्युक्त जातक का नाम योग सत्रह होता है, जो कि उनके नाम योग 1 और 7 के फलस्वरूप 8 होगा। अतः नामांक आठ का स्वामी शनि, अंक एक का स्वामी सूर्य, अंक सात का स्वामी केतु है। इन तीनों ग्रहों के, गुण अवगुण, जातक के नाम को प्रभावित करेंगे। ऐसे जातक के जीवन में संघर्ष अधिक होता है परन्तु ऐसे जातक धैर्य और मेहनत से उन्नति प्राप्त करते हैं। ऐसे जातक के जीवन में दूर देशों से भी लाभ होता है तथा ऐसा रोजगार और व्यापार करते हैं, जिसमें दूर देशों का सम्पर्क बना रहे। प्रारम्भ में ऐसे लोग खूब संघर्ष करते हैं, पर मध्य अवस्था से अंतिम अवस्था तक उन्नति करते हैं।

इस प्रकार सूर्य, केतु एवं शनि तीनों ग्रहों का मिलाजुला प्रभाव इस जातक के जीवन को प्रभावित करेगा।

नामांक मूलांक तथा भाग्यांक का शुभाशुभ सम्बन्ध

संसार में नाम का बहुत महत्व है,, दूसरे शब्दों में यह भी कहा जा सकता है कि, नाम नहीं तो कुछ भी नहीं,, मनुष्य का नाम यदि सही और सटीक होगा तो वह नाम अधिक ख्याति प्राप्त करता है, सही फलदायी नाम से ही मनुष्य देश–विदेश में प्रसिद्धि पाता है। अतः हमेशा ऐसे नाम का चुनाव करना चाहिए,, जो समाज में यश, कीर्ति तथा प्रतिष्ठा दिलाये और सदियों तक समाज में उस नाम को आदर के साथ याद किया जाये।

जातक का नाम–भाग्य, व प्रतिष्ठा को बढ़ाने में कितना सहयोगी हो रहा है ? यदि नामांक अनुकूल नहीं है तो नाम के अंक को भाग्यांक और मूलांक का मित्र बनाने से भाग्य में वृद्धि होती है।

किसी भी जातक के जीवन का भविष्य जानने के लिए, उस जातक के नामांक

का, **भाग्यांक एवं मूलांक** से संबंध देखा जाता है।

जातक का **नामांक** – भाग्यांक और मूलांक से सम+मित्र, मित्र+मित्र, सम+सम होना शुभ माना जाता है। यदि **नामांक** – भाग्यांक और मूलांक से, शत्रुता रखता है तो, नाम में सामान्य परिवर्तन करने से नाम, अनुकूल हो जाता है तथा जीवन में सफलता देता है।

उदाहरण :–

A N I L   K U M A R   C H A B R A

1+ 5+ 1+ 3   2+ 6+ 4+ 1+ 2   3+ 5+ 1+ 2+ 2 + 1=3+9=1+2=3

जन्म – 23.8.1962 = मूलांक –5–भाग्यांक = 4 नामांक = 3

मूलांक स्वामी = बुध, भाग्यांक स्वामी = राहु/हर्षल, नामांक स्वामी = गुरु

व्याख्या– जातक ANIL KUMAR CHABRA का नामांक **3** है तथा मूलांक **5** है, इन दोनों अंकों का सम संबंध है। नामांक तीन की भाग्यांक **4** से शत्रुता है, अतः जातक का नाम, परिवर्तन करने से, शुभ फल की वृद्धि होगी। ऐसी स्थिति में जातक को अपने नाम में ऐसा परिवर्तन करना चाहिए, जो भाग्यांक और मूलांक से समान संबंध स्थापित करे।

भाग्यांक और नामांक अथवा नामांक और मूलांक परस्पर शत्रु होने पर, भाग्योदय में अवरोध उत्पन्न करते हैं। जातक के नामांक **3** से मूलांक **5** का **सम** संबंध है, यद्यपि जातक के भाग्यांक **4** से शत्रु संबंध है। अतः नामांक का पूर्ण फल प्राप्त करने में जातक असफल हो सकता है, तथा भाग्यांक के साथ नामांक शत्रु होने पर असफलता का द्योतक कहा जाता है। ऐसी स्थिति में जातक अपना नाम इस प्रकार परिवर्तित करें – कि नाम के अक्षरों में अधिक परिवर्तन न हो तथा वह मूलांक एवं भाग्यांक के साथ उत्तम ताल–मेल स्थापित करे। अतः इस नाम में परिवर्तन करने के लिए **6** और **8** अंक शुभ रहेंगे। जातक ANIL KUMAR CHABRA के नाम में परिवर्तन किया गया,,

क्योंकि जातक के नाम को अनुकूल बनाने के लिए हमें 8 अंक की आवश्यकता थी जो कि जातक के नामांक से 5 अंक पीछे है। अतः जातक के नाम में पविर्तन के समय 5 अधिक अंक की आवश्यकता थी, इस कारण CHABRA में H – अतिरिक्त जोड़कर जातक के नामांक को 8 बनाया गया,, जो कि जातक के मूलांक और भाग्यांक से अच्छा ताल–मेल रखता है।

परिवर्तित नाम

A N I L   K U M A R   C H H A B R A
1+5+1+3   2+ 6+4+ 1+ 2   3+5+5+ 1+2+2+1

जन्म – 23.8.1962 = मूलांक –5–भाग्यांक = 4 नामांक = 8

मूलांक स्वामी = बुध, भाग्यांक स्वामी = राहु/हर्षल, नामांक स्वामी = शनि

परिवर्तित नाम का नामांक **8** है, जो कि मूलांक **5** से सम एवं भाग्यांक **4** का मित्र है। अतः' यह परिवर्तन जातक के भाग्य में वृद्धि कारक है। इसी प्रकार अन्य जातक के नाम को परिवर्तित करें, जिससे भाग्यांक और मूलांक से **नामांक** की मित्रता स्थापित हो सके।

जब कोई जातक शुभाशुभ कार्य को प्रारम्भ करता है, तो उसे चाहिए कि अपने मूलांक से संबंधित शुभ तारीख, वार, महिना, सन आदि का विचार करके विशेष कार्यों को आरम्भ करे। ऐसा करने से जातक के मूलांक से संबंधित ग्रह शुभ प्रभाव देते हैं तथा कार्य में सफलता के आसार अधिक होते हैं। जिन जातकों का मूलांक–भाग्यांक से शत्रुता रखता है, उन्हें उसका उपाय करना चाहिए तथा मूलांक के स्थान पर नामांक को आधार मानकर शुभाशुभ विचार करें।

मूलांक	अतिशुभ अंक	शुभ अंक	अशुभ अंक
1	4,8	2,3,7,9	5,6
2	7,9	1,3,4,6	5,8
3	6,9	1,2,5,7	4,8
4	1,8	2,6,7,9	3,5

5	3,9	1,6,7,8	2,4
6	3,9	2,4,5,7	1,8
7	2,6	3,4,5,8	1,9
8	1,4	2,57,9	3,6
9	3,6	2,4,5,8	1,7

मूलांक के आधार पर विचार फल

ज्योतिष के आधार पर मानव का वर्तमान जीवन पूर्वकृत कर्म के अनुसार निर्धारित हैं। परन्तु यदि किसी जातक के जन्म तारीख की विवेचना कर, उसके गुण–धर्म आहार–व्यवहार एवं व्यक्तित्व आदि विशेषताएँ, शिक्षा, नौकरी, विवाह, व्यवसायिक सफलता के सम्बन्ध में ज्ञात होता है, तो मानव जीवन के वर्तमान कालिक बातों का स्पष्टीकरण होता है। इससे व्यक्ति की सामाजिकता आध्यात्मिक अभिरूचियों, तथा धन, सम्पत्ति एवं व्यवसाय सौभाग्य आदि पर अंकों का प्रभाव पड़ता है।

मूलांक 1 सूर्य

वर्ष के किसी भी मास की तारीख 1, 10, 19 और 28 तारीख को जन्म लेने वाले जातक का मूलांक 1 होता है, जन्म तारीख जन्म मास और जन्म वर्ष के सभी अंको का योग कर जो पिंडाक प्राप्त होता है, उसे भाग्यांक कहते हैं।

इस (1) अंक के मूलांक का जातक कर्मठ, कर्मपारायण, परिश्रमी और उद्यमी होता है तथा स्थिर विचार धारा का एवं दृढ़निश्चयी होता है। उसकी प्रकृति में स्थिरता होती है अपनी राय, विचार और कृतसंकल्प के अनुसार सुस्थिर रहता है। मूलांक (1) के जातक हेतु सभी महीने की 1,10,19 और 28 तारीख शुभ सूचक एवं महत्वपूर्ण होती है। मूलांक 1 वाले जातक को रविवार, सोमवार का दिन शुभ होता है। यदि सम्बन्धित तारीखों में सम्बन्धित दिन का योग हो तो अमृत सिद्ध योग बन जाता है।

इस अंक वाले जातकों के लिए जनवरी, अक्टूबर, जुलाई एवं अप्रैल का माह

शुभ सूचक होता है। मूलांक 1 का स्वामी ग्रह सूर्य हैं, सम्बन्धित माह में जन्म लेने वाले जातकों पर सूर्य का विशेष प्रभाव रहता है तथा सूर्य की अनुकूलता प्राप्त होती है। मूलांक 1 के प्राणी अनुशासित होते हैं, वे किसी के दबाव अथवा प्रभाव में रहना नहीं चाहते हैं। यह किसी भी प्रकार से संस्था संचालक, प्रधान, अध्यक्ष अथवा उच्चाधिकारी होते हैं, अथवा प्रतिभा सम्पन्न प्रशासनिक प्रवृति के होते हैं, सूर्य प्रधान जातक के जीवन में राजयोग का सुख प्राप्त होता है। उच्च पद पर आसीन राष्ट्रपति, राष्ट्राध्यक्ष, प्रधानमंत्री, उच्चाधिकारी प्रतिरक्षा मंत्री अथवा पतिरक्षा, पुलिस, जिलाधीश आदि राजपत्रित, प्रशासनिक पदाधिकारी आदि उच्चस्तरीय कार्यकर्त्ता का सूर्य बलवान होता है। उच्चस्तरीय कार्य–व्यवस्था एवं प्रभाव हेतु सूर्य का बलवान, होना तथा अनुकूलता से ही, सफलता की प्राप्ति होती है। जन्म दिनांक 1–10–19–28 होने से मूलांक एक होता है। मूलांक एक के प्रभाव से स्थिर विचारधारा के व्यक्ति होते हैं। ये अपने निश्चय पर दृढ़ रहते हैं। जीवन में जब भी किसी को वचन इत्यादि देते हैं, तो उन्हें निभाने की पूर्ण कोशिश करते हैं। इनकी इच्छा शक्ति दृढ़ रहती है एवं अपने मनोनुकूल संबंधों में स्थायित्व रखते हैं। लम्बे समय तक जो भी विचार बना लेते हैं उनका पालन करने में निरंतर कोशिश करते हैं। इनके प्रेम सम्बन्ध स्थायी बने रहते हैं यदि किसी कारणवश किसी से विवाद या शत्रुता होती है, तो ऐसी स्थिति में शत्रु या विवादित व्यक्ति से भी मन–मुटाव दीर्घकाल तक बना रहता है।

मानसिक स्थिति स्वंतत्र विचारधारा की होने से, पराधीन रहकर कार्य करने में असुविधा महसूस करते हैं। किसी के अनुशासन में कार्य करने की अपेक्षा स्वतंत्र रूप से कार्य करना अधिक पसंद करते हैं। निरंतर इनमें यह कोशिश एवं महत्वाकांक्षा रहेगी कि जो भी कार्य करें वह निष्पक्ष एवं स्वतंत्र हो, कार्य में किसी का भी हस्तक्षेप इन्हें मंजूर नहीं होता। मूलांक एक का स्वामी सूर्य ग्रह होने के कारण इसके प्रभाववश दूसरों का उपकार, उपचार करने की प्रवृत्ति प्रचुर मात्रा में विद्यमान रहती है सामाजिक क्षेत्र में सूर्य के समान ही प्रकाशित होना पसंद करते हैं। सामाजिक संगठनों में मुखिया का पद पाने की चाहत बनी रहती है।

मूलांक 1 वाले प्राणी के लिए अंक 4 एवं 8 के जातक मित्र 2,3,7 एवं 9 अंक

के जातक सम एवं 5, 6 अंक के जातक शत्रु होते हैं। उपरोक्त मित्र शत्रु समांक के आधार पर अंक से सम्बन्धित दिन तारीख मास, वर्ष ग्रहादि भी प्रभाव प्रदान करते हैं। 1 अंक के जातक के लिए ईशान, वायव्य एवं दक्षिण दिशा शुभ है इनके लिए माणिक्य, मूँगा, मोती एवं पोखराज रत्न अनुकूल फलादायी होंगे। पीला हीरा भी धारण करना अनुकूल होगा। पुरुष गहरे या हल्के पीले, भूरे, रंग के वस्त्र पहनें तो उनके लिए शुभ रहेगा।

इनके लिए श्वेत, गुलाबी, पिंक, ताम्रवर्ण एवं पीला रंग अनुकूल हैं। मुनक्का केसर, लवंग, जायफल, खट्टा+मीठा मिश्रित स्वाद वाले फल, तेजपत्र, संतरा, नीबू, खजूर आजवायन, लोबान, अदरख, जौ का उपयोग इस अंक वाले के लिए अति अनुकूल है। इस अंक वालों के जीवन के 19 , 28 , 37, एवं 55 वें वर्ष स्वास्थ्य परिवर्तन की दृष्टिकोण से महत्त्वपूर्ण होता है। इनको हृदय रोग, उच्च रक्तचाप एवं आँखों के रोग होने की आशंका होती है।

1 का अंक सकारात्मक तथा सक्रिय सिद्धांत के रूप में प्रयुक्त होता है। यह शब्दों के लिए भी प्रयुक्त होता है, जो अनंत तथा अव्यक्त की अभिव्यक्ति हैं। यह 'अहं' का प्रतिनिधित्व करता है, आत्मस्वीकार, सकारात्मकता, पृथकवाद, आत्मत्त्व, श्रेष्ठता, आत्मनिर्भरता, गरिमा तथा प्रशासन का भी प्रतीक है। यह धार्मिक अर्थ में स्वयं ईश्वर का प्रतीक है। दार्शनिक व वैज्ञानिक अर्थ में यह संश्लेषण तथा वस्तुओं में मूलभूत अखंडता का प्रतीक है। यह शून्य का प्रकट भाव और सूर्य का प्रतीक है। 1 का अंक स्वतंत्र व्यक्तित्व व संभावित अहं, आत्मनिर्भरता, प्रतिज्ञापन व विशिष्टता का सूचक है।

हमेशा इन लोगों को सफलता मिलती है तथा सामाजिक जीवन में प्रतिष्ठा भी मिलती है। इन लोगों का क्रोध क्षणिक होता है, क्योंकि इस अंक के व्यक्ति सत्यप्रिय होते हैं और उन्हें सत्य अधिक पसंद होता है। जिससे ये लोग मित्रता करते हैं, उसके लिए कुछ भी करने को तैयार होते हैं। जरूरत पड़ने पर ये लोग प्राण देने से भी पीछे नहीं हटते। इस अंक के लोगों को उनके विशिष्ट गुणों के अनुसार जरूरत पड़ने पर पैसे की मदद भी मिलती रहती है। ये किसी की सलाह पसंद नहीं करते और कोई उनसे कहे ऐसा या वैसा तो

उसको स्वीकार कर हां में हां भी नहीं करते। कुदरती प्रेरणाशक्ति के कारण ये इच्छित कार्य करने के लिए शक्तिमान होते हैं। ये लोग प्रेम के पीछे पागल होते हैं, जिसे ये लोग चाहते हैं, उसके लिए जान देने को भी तैयार होते हैं। ये लोग बात बात में गुस्सा होते हैं, इसका मुख्य कारण इन लोगों का गर्विष्ठ स्वभाव होता है। ये इतने अधिक विशिष्ट गुणों के स्वामी होते हैं कि, अच्छा खासा धन भी कमाते हैं। इन लोगों को हमेशा गुप्त शत्रुओं से सावधान रहना चाहिए। इस अंक का स्वामी सूर्य है। ता. 1,10,19,28 को पैदा हुए लोगों के लिए रविवार, सोमवार और गुरुवार शुभ है। अप्रैल, मई, नवम्बर, दिसम्बर महीना अच्छा रहता है। जून, जुलाई, सितम्बर, मार्च महीने में सावधान रहें। ये लोग सुंदर, स्वरुपवान और अच्छे देहधारी होते हैं। इन लोगों की तेजस्वी आखों में गजब का तेज होता है। ये लोग खर्चीले होने के बावजूद काफी उदार भी होते हैं। इस अंक का स्वामी सूर्य होने से अध्यात्म की ओर इनके मन को आकर्षित करता रहता है।

मूलांक 2 चन्द्रमा

मूलांक 2 का अधिष्ठाता स्वामी ग्रह चन्द्रमा हैं। वर्ष के किसी भी मास की तारीख 2,11,20 एवं 29 तारीख को जन्म लेने वाले जातक का मूलांक 2 होता है और जन्म तारीख, मास और जन्म वर्ष के सभी अंको का योग कर जो पिण्डांक प्राप्त होता है उसे भाग्यांक कहते हैं, सूर्य और चन्द्रमा में मित्रता है। मूलांक 1 वालों के लिए 2 का अंक भी शुभ सूचक है। स्वाभाविक रूप से सूर्य में तेज एवं चन्द्रमा में शीतलता का प्रभाव रहता है। इस अंक वाले व्यक्ति कल्पना शक्ति कलाप्रिय तथा कलाप्रेमी होते हैं। इनकी शारीरिक शक्ति मध्यम बल से युक्त होती है, परन्तु मानसिक शक्ति अच्छी होती है– ये दिमागी कामों में तेज एवं बुद्धिमान होते हैं, किसी भी महीने की 2 तारीख को अथवा 2 अंक बनाने वाली तारीख जैसे– 2,11,20,29 तारीख को जन्म लेने वाले जातक अथवा जिस नाम के प्रथम शब्द से दो अंक बनता हो उस जातक का मूलांक 2 होता है। पाश्चात्य ज्योतिषियों के मतानुसार 20 जून से 25 जुलाई तक जिस जातक का जन्म होता है उस जातक पर चन्द्रमा का विशेष प्रभाव रहता है।

2 मूलांक वाले जातक को कोई भी महत्वपूर्ण कार्य माह की 2, 11, 20, 29 तारीख को करना अनुकूल एवं शुभफलदायी होता है। इस प्रकार के जातक कोई भी नया–कार्य व्यवसाय रवि, सोमवार, मंगल या शुक्रवार को प्रारम्भ करें तो अनुकूल फल प्राप्त होगा।

2 मूलांक वालों के लिए प्रत्येक मास की 2,11,20,29 / 7,16,25 एवं 9,18,27, तारीख शुभ सूचक रविवार चन्द्रवार, भौमवार एवं गुरूवार का दिन भी शुभसूचक होगा।

जन्म दिनांक दो होने से अंक ज्योतिष के आधार पर इनका मूलांक दो होता है। मूलांक दो का स्वामी चन्द्र ग्रह को माना गया है। जिसके प्रभाववश ये एक कल्पनाशील, कलाप्रिय एवं स्नेहशील स्वभाव के जातक होते हैं। इनकी कल्पनाशक्ति उच्च कोटि की रहती है, लेकिन शारीरिक शक्ति बहुत अच्छी नहीं रहती है। इनकी बुद्धि चातुर्य काफी अच्छी होगी एवं बुद्धि विवेक के कार्यों

में दूसरों से बाजी मार ले जायेंगे। जिस प्रकार से इनके मूलांक स्वामी चन्द्रमा का रूप एकसा नहीं रहता समयानुसार घटता–बढ़ता रहता है, उसी तरह ये भी अपने जीवन में एक विचार या योजना पर दृढ़ नहीं रहते हैं।

इनकी योजनाओं में बदलाव होता रहता है एवं इनमें एक योजना को छोड़कर दूसरी को प्रारम्भ करने की प्रवृत्ति होती है तथा धीरज एवं अध्यवसाय की कमी होती है। इससे इनके कई कार्य समय पर पूर्ण नहीं होते। आत्म विश्वास की मात्रा इनके अन्दर कम होती है। इनकी सामाजिक स्थिति उत्तम होती है एवं मानसिक रूप से जिसे ये अपना लेंगे वैसे ही इनको लाभ प्राप्त होगा। जनता के मध्य ये एक लोकप्रिय व्यक्ति होते हैं तथा स्वयं की मेहनत से अपनी सामाजिक स्थिति निर्मित करते हैं। अवस्थानुसार नेत्र, उदर, एवं मूत्र संबंधी रोगों का सामना करना पड़ता है, मानसिक तनाव तथा शीतरोग भी परेशान करेंगे। जल से उत्पन्न रोग कफ, सर्दी–जुकाम, सिरदर्द की शिकायतें भी यदाकदा होगी।

इस प्रकृति के जातक शिष्ट, उदार शान्तचित्त, कल्पनाशील, कलाप्रेमी, विनम्र मृदुभाषी एवं रोमांचित स्वभाव के होते हैं। ऐसे जातक में स्त्रीगुणों की प्रधानता होती है। इनमें शारीरिक सुकोमलता परन्तु प्रखरता, तेजस्विता विद्यमान रहती है एवं मेधावी गुणों से युक्त होते हैं। ये शरीर से सुकोमल होने के कारण कठिन एवं परिश्रम युक्त कार्य में शिथिल रहते हैं। इनके लिए रंग श्वेत अंगूरी, हरा एवं क्रीम अनुकूल एवं भाग्यवर्धक हैं। इनके लिए ब्लू, लाल, काला रंगादि अशुभसूचक एवं प्रतिकूल फलदायी हैं।

इस अंक वालों के लिए उत्तर, उत्तरपूर्व एवं पश्चिम दिशाएँ शुभ सूचक हैं। इनके लिए हीरा, मोती, मूनस्टोन, स्फटिक, पीला रत्न धारण करना श्रेयष्कर होता है। 2 अंक वाले प्राणी पेटकी बिमारी से परेशान रहते हैं। इन्हें चुकन्दर गोभी, शलजम, खीरा, खरबूजा, तोरी, करमकल्ला, जलकदली एवं अलसी का प्रयोग अधिक करना चाहिए।

इन अंक वालों को सदैव शान्त रहना एवं एकान्त वास करना अनुकूल रहेगा। इन्हे संकल्पित कार्यों के प्रति जी–जान से जुट जाना चाहिए ताकि सफलता

सुनिश्चित हो सके। ये अपने विचार पर दृढ नहीं रहते तथा कभी–कभी महत्वपूर्ण कार्य को भी त्याग देते हैं, एवं योजना को अपूर्ण छोड़कर पुनः अन्य कार्य में लग जाते हैं। इनमें धैर्य एवं अध्यवसाय की कमी रहती है, ये अपने कार्य को अपूर्ण छोड़कर मार्ग बदल लेते हैं, इस स्वभाव के कारण सफलता नहीं मिलती अथवा देर से सफल होते हैं। इनमें आत्मविश्वास की कमी रहती है तथा थोड़े से परिश्रम अथवा बिलम्ब होने से निराश एवं उदासीन हो जाते हैं। यदि भावुकता पर विजय पा लें तो ये निश्चित् रूप से सफल होते हैं।

इनके जीवन का मूल रहस्य इस बात में है कि, ये बाधाओं मुसीबतों तथा कठिनाइयों में भी मुस्कराते रहते हैं। प्रत्येक बाधा इनके संकल्प को और ज्यादा मजबूत करती है ये कठिनाइयों से हताश नहीं होते अपितु अधिक जोश से कार्य में जुट जाते हैं और जब तक कार्य सम्पन्न नहीं हो जाता तब तक ये विश्राम नहीं करते हैं, यही इनका जीवन–रहस्य है। मूलांक 2 का स्वामी चन्द्रमा एवं देवता शिव हैं इनके लिए शुभ धातु रजत (चांदी) शुभ रत्न मोती, चन्द्र मणि एवं मून स्टोन है। इनका शुभ रंग श्वेत, हरित, अंगूरी, काफूरी, दिशा वायव्य वस्तु शंख कपूर, श्वेत चंदन, श्वते वस्त्र और अन्न चावल तरल पदार्थ दही है। चन्द्रमा का **मंत्र ऊँ श्रां श्रीं श्रौ सः चन्द्रमसे नमः** एवं जाप संख्या 13000 है।

2 का अंक विपरीतता का प्रतीक है तथा यह प्रमाण और पुष्टि का भी द्योतक है। यह द्विगुण संपन्न अंक है, जैसे एक ओर जोड़ का है तो दूसरी ओर घटाने का, एक ओर क्रियाशीलता का तो दूसरी ओर निष्क्रियता का, एक ओर स्त्रीलिंग का तो दूसरी ओर पुल्लिंग का, एक ओर सकारात्मकता का तो दूसरी ओर नकारात्मकता का, एक ओर लाभ का तो दूसरी ओर हानि का प्रतीक है। 2 के अंक का संबंध मानसिक आकर्षण, भावना, सहानुभूति, घृणा, संदेह व दुविधा से है।

अपने बच्चों के प्रति इन लोगों का अथाह प्रेम होता है तथा ये लोग बच्चे के लिए कोई समझौता करने को तैयार नहीं होते आवश्यकता पड़ने पर बालक के लिए अपनी पत्नी के साथ, संबंध खराब कर लेते हैं। ये अशांत मन, शांत होने पर ही, कमजोर स्वभाव पर काबू प्राप्त कर सकते हैं। पुरानी वस्तु अधिक

पसंद करते हैं। खेतीवाड़ी, बाग, फार्म हाऊस आदि में अच्छी रुचि होती है। यदि ऐसे लोग नाट्यकला, लेखन, चित्रकला, सिनेमा, अभिनय अथवा कोई सार्वजनिक सेवा प्रवृत्ति में रुचि लें तो इन्हें सफलता मिलती है। कुदरती सौंदर्य, सुन्दरता, सुंदर स्त्री, संगीत, कला आदि में सफल होते हैं। ये गूढ़ स्वभाव के होते हैं, जिससे ये लोग चाहने पर ज्योतिष, मंत्र, तंत्र, विद्या में पारंगत बन सकते हैं। ऐसे लोग मानहानि से सदा डरते रहते हैं तथा मान और धन प्राप्त करने के लिए सदैव इच्छुक होते हैं। ये लोग सामान्यतः उदास और निराश दिखायी देते हैं क्योंकि बहुत थोड़े से व्यक्ति या परिवार उनकी भावना को समझ सकते हैं।

ऐसे लोगों को अध्ययन की तुलना में धनप्राप्ति में अधिक रुचि होती है, जिससे इनका अध्ययन अल्प होता है। ऐसे लोग विवाहित होने पर अन्य स्त्रियों के साथ भी प्रेमसंबंध बनाते हैं तथा पैसा लापरवाही से उड़ाते हैं। कई बार दूसरी स्त्री के प्रेम में आसानी से फंस जाते हैं और उनकी शांति अशांति में बदल जाती है। अंक 2 में पैदा हुए लोगों में सर्दी और कफ की प्रकृति होती है तथा अपनी मां के प्रति हमेशा संवेदनशील रहते हैं। कई बार आनेवाली घटना से घबराकर बीमार न होने के बावजूद भी बीमार पड़ जाते हैं। हमेशा इन लोगों के स्वभाव में उतार चढ़ाव आता है तथा शरीर भरा भरा और वर्ण लगभग गोरा होता है एवं परिवार प्रेमी होते हैं, परन्तु इन्हें परिवार से हमेशा दुःख मिलता है, इसके बावजूद ये लोग परिवारवालों से अलग नहीं रह सकते। परिवार से अलग होने पर ये मन ही मन रोते रहते हैं। इनका शेयर, सट्टा, जुआ के प्रति भी झुकाव होता है। इनमें सामान्य बात को भी बढ़ा चढ़ाकर कहने की आदत होती है, जिसमें दूसरे को उबन होती है, परन्तु उसकी परवाह उनको नहीं होती तथा इन्हें सफर करने का शौक होता है। यदि ये लोग अध्यात्मवाद में रुचि लें, तो अच्छा यश प्राप्त करते हैं। इन्हें शनिवार को सावधानी रखना जरूरी होता है। संभव हो तो ऐसे लोगों को मोगरा के सफेद फूल को साथ रखना चाहिए, इससे कार्य में सफल होते हैं। इनके बहुत से मित्र होते हैं। मित्रों को ऐसे लोग मन से चाहते हैं, परन्तु किसी मित्र के अनुचित बर्ताव से बहुत उदास हो जाते हैं। यदि हो सके तो इन्हें अच्छी मोती की अंगूठी बनाकर पहननी चाहिए।

मूलांक 3 गुरू

पाश्चात्य ज्योतिषीय विचार के अनुसार 19 फरवरी से 20 मार्च तक, अथवा 21 नवम्बर से 20 दिसम्बर के मध्य जन्मे जातक पर गुरु (बृहस्पति) का विशेष प्रभाव रहता है। इस प्रकार यदि किसी जातक का जन्म उपरोक्त काल में हुआ हो और जन्मतारीख भी 3, 12, 21, अथवा 30 हो तथा नामांक भी 3 हो तो उस जातक पर बृहस्पति का अधिक प्रभाव रहता है। इस अंक का जातक महत्वाकांक्षी, शासक प्रवृतिवाला, एवं कठोर अनुशासन वाला होता है। ऐसा व्यक्ति प्रतिरक्षा, प्रधान, राजकीय, प्रशासनिक, पदाधिकारी अथवा किसी भी विभाग का अध्यक्ष हो तो, अपने कार्यों में शिथिलता नहीं आने देता है। यह कठोर शासक जैसे व्यवहार करता है, फलस्वरूप इसके आधीन कार्यरत कर्मचारी, विरोधी बन जाते हैं।

मूलांक 3 वाले जातक को किसी भी कार्य का शुभारम्भ किसी भी महीने की 3, 12, 21 अथवा 30 तारीख को करना चाहिए। साथ ही 19 फरवरी से 21 मार्च तक के सुअवसर पर एवं 21 नवम्बर से 21 दिसम्बर वाले समय पर 3 अंक वाली तारीख पर नये कार्य का शुभारंम्भ करें तो सफलता की विशेष संभावना रहती है। मूलांक 3 वाले जातक के लिए जीवन का 3,12, 21, 30, 39, 48, 57, 66 की आयु का वर्ष अनुकूल होता है। इनका जन्म दिनांक 3,12,21,30 होने से अंक ज्योतिष के आधार पर, इनका मूलांक तीन होता है, मूलांक तीन का स्वामी गुरु है। गुरु ग्रह के प्रभाववश ये अनुशासन के मामले में काफी कठोर होते हैं तथा अपने आधीनस्थ से सख्ती से कार्य लेंगे। काम में ढील या शिथिलता बर्दाश्त नहीं करते हैं, इस कारण कभी–कभी इनके मित्र ही इनसे शत्रुता करने लगते हैं।

ये एक महत्वाकांक्षी व्यक्ति होते हैं और दूसरों पर शासन करने की इनकी सहज इच्छा होती है। गुरु ग्रह के प्रभाववश इनकी विचारधारा धार्मिक होती है तथा विद्या, अध्ययन, अध्यापन, बौद्धिक स्तर के कार्य तथा धर्म–कर्म के क्षेत्र में इनको अच्छी उपलब्धियाँ एवं ख्याति प्राप्त होती है। मानसिक रूप से ये काफी संतुलित एवं विकसित व्यक्ति होते हैं तथा किसी भी विषय को समझने

की इनमें विशेष क्षमता होती है, तर्क एवं ज्ञान शक्ति इनकी अच्छी रहती है, मन से किसी का भी अहित नहीं करते हैं। सामाजिक स्थिति इनकी काफी अच्छी रहती है तथा समाज में ये अग्रणी एवं मुखिया पद का निर्वहन करना अधिक पसन्द करते हैं। दूसरों को सच्ची सलाह देना, ये अपना धर्म समझते हैं।

स्वभाव से ये शान्त, कोमल हृदय, मृदुवाणी एवं सत्यवक्ता होते हैं, सत्य के मार्ग पर चलते हुये कष्टों को भी सहन करते हैं एवं अन्त में विजयश्री को प्राप्त करते हैं। स्वास्थ्य साधारणतः अनुकूल होता है, लेकिन कभी–कभी मंदाग्नि, जठराग्नि, उदर विकार इत्यादि रोगों का सामना करना होता है। 3 अंकवालों के मित्रांक 6 एवं 9 हैं, 3 अंक वालों के लिए सम 1,2,3, एवं 7 अंक हैं जबकि 3 अंक वाले के लिए 4 एवं 8 शत्रु अंक हैं। उपर्युक्त शुभ अंक अथवा मित्र अंक वाले वर्ष प्रगति कारक उन्नति कारक एवं शुभफल दायी होंगे जबकि शत्रुअंक वाले वर्ष अशुभसूचक, अवनति कारक एवं जीवन को प्रभावित करने वाले वर्ष होंगे। स्मरण रहे– कि जीवन में किसी भी माह की निम्मांकित तारीख शुभ एवं अनुकूल फलदायी होंगी।

इस प्रकार 3 अंक वालों के लिए सप्ताह के गुरुवार,शुक्रवार एवं मंगलवार शुभ फलदायी तथा रविवार– सोमवार, बुधवार सम एवं शनिवार अशुभ फलदायी दिन होंगे। यदि शुभ तारीख को शुभ दिन भी पड़ जाए तो यह योग, अमृत सिद्धि योग कारक एवं शुभकारक रहेगा। यदि किसी भी मास के 6,15,24 तारीख को शुक्रवार 9,18,27 तारीख को मंगलवार तथा 3,12,21,30 तारीख को गुरुवार पड़ जाए तो उपरोक्त शुभ योग होंगे।

इस अंक में दैवी गुणों की प्रचुरता रहती है ये आध्यात्मवादी तथा विचित्र आकर्षण वाले होते हैं। इनके लिए मार्च, दिसम्बर, सितम्बर एवं जून अनुकूल एवं शुभ सूचक होता है। इनके लिए चमकीला गुलाबी, बैंगनी, हल्का जामुनी, हल्का पीला और हरा आदि रंगों के कपड़े अनुकूल होते हैं। इनके लिए अपने आवासीय कमरों का रंग, बेड सीट तथा पर्दे आदि भी इसी रंग के अनुकूलता प्रदान करेंगे। इनके लिए दक्षिण पश्चिम एवं पूर्व और उत्तर दिशाएँ प्रत्येक कार्य के लिए शुभ फलदायी होती हैं। इस अंक वालों के लिए भाग्यशाली रत्न,

पोखराज, विल्लौर, नीलमणि एवं माणिक्य रत्न अनुकूलता प्रदान करेंगे। मूलांक 3 वाले व्यक्ति नाड़ी शोथ, गठिया, चर्मरोग से प्रभावित होते हैं। इन्हें चुकन्दर, बेर, शताब्दी कुकरौंधा, कासनी, स्वर्णधान्य, वरी, झरबेटी, सेव, शहतूत, काजू, लवंग, मकोय, अनार, अनन्नास, अंगूर, पुदीना, कस्तूरी, जायफल,जैतून, बादाम, अंजीर, गेहूँ आदि का सेवन करना लाभकारी होगा। स्वास्थ्य परिवर्तन हेतु जीवन का 48 वाँ एवं 57 वाँ वर्ष महत्वपूर्ण होंगे।

इनके जीवन का रहस्य इस बात में निहित होता है कि ये किसी भी प्रकार की परिस्थितियों में स्वयं को प्रसन्नचित रख सकते हैं। हर समय मुस्कराते रहना इनका विशेष गुण है। चाहे कितनी ही बाधाएँ आ जाएँ ये विचलित नहीं होते और चुपचाप धैर्यपूर्वक आत्मविश्वास रखते हुए अपने कार्य को करते रहते हैं। मूलांक 3 का स्वामी गुरु एवं देवता विष्णु हैं। इनके लिए अनुकूल धातु सोना एवं अनुकूल रंग चमकीला, गुलाबी, हल्का जामुनी है, इनकी अनुकूल दिशा ईशान कोण वस्तुएँ हल्दी, पुस्तक, पीला वस्त्र तथा अन्न चने की दाल है, इनकी तरल धातु घृत, जाप मंत्र **ऊँ ग्रां ग्रीं ग्रौ सः गुरवे नमः** एवं जाप संख्या 10,000 है। 3 का अंक त्रिशक्ति का प्रतीक है तथा जीवन के त्रिगुण पदार्थ बुद्धि, बल व चेतना का प्रतीक है। इसमें सृजन, पालन व संहार के ईश्वरीय गुण भी समाहित हैं। परिवार–माता, पिता व शिशु का भी इससे बोध होता है। यह चिंतन तथा वस्तु रूपी तीन आधार तत्त्वों का भी प्रतीक है । यह चेतना में प्रतिबिंबित होनेवाला द्वैत है, जैसे समय और स्थान में त्रिक अवस्था का निर्माता, जैसे भूत, वर्तमान तथा भविष्य। यह अंक विस्तार, बढ़ोत्तरी, बौद्धिक क्षमता, धन व सफलता का सूचक है।

ये लोग बातचीत में जरा भी पीछे नहीं रहते तथा वाद विवाद में, शब्दबाजी में, सामनेवाले को चौंका देनेवाले होते हैं। इस तरह के वाद विवाद से कडुवाहट पैदा होती है, परन्तु इन्हें उसकी परवाह नहीं होती। जन्मतिथि 3,12,21,30 होने से धार्मिक वृत्ति, प्रमाणिकता, सद्गुण आदि गुण प्रगतिकारक होते हैं। ऐसे लोग बगैर काम के खाली नहीं बैठ सकते काम न होने पर वे उबन महसूस करते हैं जिससे वे हमेशा कुछ न कुछ कार्य करते रहते हैं। पति पत्नी बारम्बार झगड़ा करते हैं तथा इसमें कई बार बैरी को अलग होना पड़ता है।

हो सके तो 3 अंक के लोगों को तीन पत्तीवाला बेलपत्र साथ रखना चाहिए और वह बेलपत्र भगवान शंकर पर चढ़ा हो तो अति उत्तम है। सुबह भगवान शंकर की, घर में पूजा कर अथवा मंदिर में जाकर भगवान शंकर की मन से पूजा कर भगवान के लिंग पर बेलपत्र चढ़ाकर, उस चढ़ाए गए बेलपत्र को आंखो तथा छाती से लगाकर श्रद्धापूर्वक साथ रखना, अच्छा होता है।

कोई भी नया कार्य शुरू करने पर उसे पूर्ण होने से पहले ही ये उसे बीच में ही छोड़ देते हैं। शांत स्वभाव होने के बावजूद ऐसे लोग जल्दबाज भी होते हैं। ये लोग अच्छे स्वभाव के होते हैं, इसके बावजूद कई बार किसी की परवाह किए बगैर, खरी बात कह देते हैं तथा ये लोग जिद्दी भी होते हैं। शत्रु और मित्र की ऐसे लोगों को पहचान नहीं होती, इस कारण इनके जीवन में गुप्त शत्रु बहुत से होते हैं। इस अंक का स्वामी गुरु होने से ता. 3,12,21,30 को पैदा हुए लोगों के लिए रविवार, मंगलवार गुरुवार शुभ है। ऐसे जातक के जीवन में कभी उतार तो कभी चढ़ाव भी दिखायी देता है।

कभी कभी ऐसे लोगों को भारी जोखिम उठाना पड़ता है, जिससे लेनदेन में सावधान रहना बहुत जरूरी होता है। ये लोग बुद्धिप्रधान स्वभाव के होते हैं, तथा कला के विषय में रुचि होने पर पारंगत बन सकते हैं। वाद विवाद से इनका मन दुःखी हो जाता है, जिससे मन में थोड़ी भी शांति नहीं रहती। लापरवाह स्वभाव के होने से इन्हें पैसा बचाकर रखना चाहिए क्योंकि ये लोग खर्च करने पर हजारों रुपये खर्च कर देते हैं। कई बार बुढ़ापे में पैसे की जरूरत पड़ने पर इन्हें तकलीफ में जीवन व्यतीत करना पड़ता है। यदि हो सके तो इन्हें अच्छे गुरू के नग की अंगूठी पहननी चाहिए।

मूलांक 4 राहु

अंक 4 का अधिष्ठाता ग्रह राहु है पाश्चात्य मतानुसार 4 अंक के प्रतिनिध ग्रह ''हर्षल'' अर्थात् यूरेनस को भी मानते हैं। भारतीय अंक विधान में अंक 4 का प्रतिनिधि ग्रह राहु को मानते हैं। इस अंक का सम्बन्ध सूर्य तथा अंक 1 से माना जाता है। इसका मुख्य प्रभाव राहु के समान साहस, प्रगति, विध्वंस, विस्फोट, आश्चर्यजनक कार्य, तथा असंभावित कार्य है। जिस जातक की जन्मतारीख, अर्थात् मूलांक 4 होता है, वह जातक संघर्षशील होता है। इस अंकवाले प्राणी की विचार धारा लोगों से विपरीत होती है। कई लोगों के मध्य अंक 4 का प्राणी एक अलग अपना विचार प्रस्तुत करता है, जो अन्य के प्रतिकूल होता है। इस कारण इस जातक के कई मित्र, विरोधी या शत्रु हो जाते हैं। किसी भी महीने में 4,13,22,31 तारीख को जन्मे व्यक्ति अथवा 4 अंक बनाने वाली तारीख को जन्मे व्यक्ति का मूलांक 4 होता है।

पाश्चात्य अंक शास्त्री के मतानुसार जिस जातक का मूलांक 4 है जिनका जन्म 21 जून से 31 अगस्त एवं 16 जुलाई से 16 सितम्बर तक के समय में हुआ है, तो उन पर 4 का प्रभाव विशेष मात्रा में रहेगा। इस प्रकार के प्राणी समाज सुधारक, प्राचीन प्रथा के उन्मूलक तथा आधुनिक प्रथा के संस्थापक होते हैं। ये सामाजिकता अथवा राजनीति क्षेत्र में भी नवीनता लाने में अग्रगण्य होते हैं। ऐसा इनके स्वभाव के अनुरूप ही होता है। ये सहजता पूर्वक किसी से सम्बन्ध स्थापित अथवा मित्रता नहीं कर पाते, परन्तु जिस जातक की जन्मतारीख अर्थात् मूलांक 1,2 7 एवं 8 होता है, वे इनके साथ सम्बन्ध अथवा मित्रता निभाते हैं।

इनका जन्म दिनांक चार होने से अंक ज्योतिष के आधार पर मूलांक चार होता है। जिसका स्वामी भारतीय मतानुसार राहु एवं पाश्चात्य मतानुसार हर्षल को माना गया है। मूलांक चार के प्रभाववश ये अपने जीवन में सहसा एवं आश्चर्यजनक प्रगति करते हैं। इनके जीवन में कई असंभावित घटनायें भी घटती हैं। कुछ घटनायें ऐसी भी घटित होती हैं जो इनका कैरियर बदल देती हैं। ये एक संघर्षशील व्यक्ति के रूप में जाने जाते हैं। इनकी विचारधारा भी

आम लोगों से प्रायः अलग होती है। जमाने से ये काफी आगे की सोच रखते हैं तथा विरोध प्रकट करने की आदत के कारण, ये अपने आलोचक स्वयं उत्पन्न करेते हैं।

ये पुरानी प्रथाओं, रीतियों के विरोधी होते हैं तथा उनमें सुधार करने की पूरी कोशिश करते हैं। ये अपने कार्यक्षेत्र में पुरानी प्रथाओं को नवीन रूप में ढालने की कोशिश करते हैं। अपने जीवन में ये धन संग्रह अधिक नहीं कर पाते हैं, लेकिन नाम, यश अधिक प्राप्त करते हैं, समाज में परिवर्तन देखना इनका स्वभाव होता है। यदि ये अपनी संघर्ष करने की प्रवृत्ति पर अंकुश रखकर, सहनशील तथा सहिष्णु बन सकें और शत्रुता कम पैदा करें, तो अपने जीवन में अधिक सफलता अर्जित करते हैं।

इनकी विचार धारा सुधार वाली होने से समाज में अच्छी ख्याति प्राप्त होती है। लेकिन यह ख्याति स्थिर नहीं होती, कभी तो उच्चता के शिखर पर होगी और कभी यह ख्याति न्यून होती है। अतः इनको निरन्तर कार्य में लगे रहना पड़ता है और नये–नये परिवर्तन तथा आविष्कारों द्वारा अपना नाम रोशन करते रहना इनका स्वभाव बन जाता है। इनका स्वास्थ्य साधारणतः उत्तम होता है, लेकिन कभी–कभी अत्यधिक श्रम एवं मानसिक थकान के कारण सिरदर्द, गर्मी से उत्पन्न रोग, मानसिक तनाव आदि का सामना करना पड़ता है।

4 अंक वाले मुक्त हस्त से व्यय करते हैं तथा ये धन संचय नहीं कर पाते। इन्हें अपव्यय और अति व्यय करने पर नियंत्रण तथा धन संचय की ओर प्रवृत होना चाहिए। 4 अंक वालों के लिए सप्ताह के तीन दिन रविवार, सोमवार तथा शनिवार शुभ होते हैं। इनके लिए 4,13,22,31 तारीख शुभ तथा जनवरी, अप्रैल, जुलाई एवं अक्टूबर का माह अनुकूल होता है। 4 अंक के लिए 1 एवं 8 मित्र 2,6,7 एवं 9 अंक सम तथा 3 और 5 अंक शत्रु होते हैं। इस प्रकार इनके लिए प्रत्येक माह की 4,13,22,31,1,10,19,28,8,17,26 तारीख शुभ हैं। यदि माह जनवरी, अप्रैल, जुलाई एवं अक्टूबर में उपरोक्त तारीख और सम्बन्धित दिन अर्थात् माह दिन और तारीख का संयोग हो जाए तो उस दिन कोई भी महत्वपूर्ण कार्य, यात्रा, अनुबन्ध आदि शुभकार्य सफल, प्रभावशाली एवं लाभप्रद होगा। इस अंक वाले अपने स्वभाव तथा विचारधारा में बदलाव लावें और

प्रतिद्वंन्द्विता तथा संघर्ष करने वाली प्रवृति का त्याग कर दें, तो हर क्षेत्र में सफल हो सकते हैं।

इनका व्यक्तित्व रहस्यमय होता है, इनके जीवन में धन का हानि–लाभ उत्थान–पतन आकस्मिक होता है। ये गम्भीर हृदय के व्यक्ति होते हैं तथा इनके दिल के रहस्य का पता लगाना कठिन होता है। ये महत्वपूर्ण बातों का रहस्य एवं गोपनीयता बनाए रखते हैं तथा ये अव्यवहारिक होते हैं। इनका पारिवारिक और दाम्पत्य जीवन क्लेशयुक्त रहता है। प्रायः सन्तान पक्ष से ये हानि उठाते हैं। इन्हें धर्मपत्नी के स्वास्थ्य की सदैव चिन्ता बनी रहती है।

इनके लिए क्रीमरंग, भूरा, मिश्रित, खाकी, चमकदार, नीलेरंग के वस्त्र अनुकूल एवं भाग्यशाली होते हैं। धूप–छाँव या राख जैसा– मटमैला रंग–सर्वोत्तम होता है। इन्हें अपने घर के पर्दे, वेडसीट, फर्नीचर आदि को भी इन्ही रंगो से सुसज्जित करना चाहिए। इनके जीवन में यदा–कदा ऐसे रोग होते हैं जो रोग समझ में नहीं आते और कुछ दिनों तक बीमार या पीड़ित रहकर प्रायः स्वस्थ्य हो जाते हैं। इनको खिन्न होने से सिर तथा पीठ में दर्द जैसी बिमारियाँ होने की आशंका रहती है। इन्हें पालक, चौलाई, हेमती आदि का अधिक से अधिक उपयोग करना चाहिए। इन्हें बीमारी हालात में, विद्युत उपचार मानसिक चिकित्सा चुम्बकीय चिकित्सा तथा तांत्रिक चिकित्सा से लाभ प्राप्त होता है। इन्हें नशीली दवाएँ मांसाहार आदि से परहेज करना चाहिए। इनके जीवन का 13, 22, 31, 40, 49 तथा 58 वर्ष स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है।

इनके जीवन का मूल रहस्य यह है कि ये विपरीत से विपरीत परिस्थितियों की भी परवाह नहीं करते तथा अनुशासन के माध्यम से ये उन विपरीत परिस्थितियों से भी निकल आते हैं। सुडौल देह व सरकारी नौकरी इन्हें प्रिय है, तथा जीवन में संयम, मर्यादा, धर्म, कर्त्तव्यपालन, अनुशासनहीनता इनका प्रधान जीवन–रहस्य है। मूलांक चार का स्वामी हर्षल अथवा यूरेनस तथा राहु को मानते हैं देवता गणेश धातु शीशा, अनुकूल रंग नीला, धूप छांव एवं खाकी है। इनकी दिशा नैर्ऋत्य, वस्तुयें कम्बल, तेल, तिल और नीला वस्त्र है। जाप मंत्र **ऊँ छ्रां छ्रीं छ्रौं सः राहवे नमः** एवं जाप संख्या 18,000 है।

4 का अंक वास्तविकता व स्थायित्व का संकेत करता है। यह भौतिक जगत का द्योतक है, यह वर्गाकार व घनाकार है। भौतिक नियम, तर्क व कारण भौतिक अवस्था तथा विज्ञान का प्रतीक है यह अनुभूतियों, अनुभव तथा ज्ञान के माध्यम से पहचाना जाता है। यह काट, खंडीकरण, विभाजन, सुनियोजन तथा वर्गीकरण का द्योतक है। यह स्वास्तिक, विधिचक्र, संख्याओं का क्रम तथा योग है। यह बुद्धि, चेतना, आध्यात्मिक व भौतिकता के अंतर की पहचान है। अतएव यह विवेचना, विवेक तथा सापेक्षीकरण का स्वामी है। इस प्रकार यह बुध का प्रतीक है। 4 का अंक उपलब्धि, संपत्ति, कब्जा, श्रेय, हैसियत व भौतिकता का परिचायक है।

इन जातकों को ढेर सारा रुपया मिले तो कैसे उपयोग करना है और कहां उपयोग करना हैं, उस पर विचार किए बगैर खर्च कर डालते हैं। भावना के आवेश में ये लोग असंतुलित भी दिखायी देते हैं। इन लोगों के जीवन में उतार चढ़ाव के योग होते रहते हैं। इसके बावजूद ये लोग दूसरों के लिए मेहनत करेंगे, भले उसमें उनका हित हो या न हो। इन लोगों के मन में कोई विचार आने पर बिना सोचे समझे कुछ भी करने के लिए तत्पर हो जाते हैं। परिवार के सदस्य उनकी देखभाल करते हैं, तो भी वे अपने को हमेशा अकेला ही समझते हैं। इन लोगों के बारे में अधिक कहना मुश्किल होता है कि, ये लोग कब चिढ़ेंगे और कब खुश होंगे। ये अपने कामकाज में हमेशा गैर जिम्मेदार रहते हैं तथा अधिकांशतः अस्तव्यस्त जीवन बीताते हैं। ये लोग दूसरे को अपने जैसा समझते हैं। इस कारण कई बार धोखा और मनमुटाव पैदा हो जाता है। समाज के पुराने रीतिरिवाज इन लोगों को मान्य नहीं होते। इसके लिए थोड़ा भी झुकने को तैयार नहीं हाते, भले ही बाद में उन्हें नुकसान उठाना पड़े, परन्तु वे लड़ने के लिए तैयार हो जाते हैं।

उदासीनता आने पर यदि किसी अच्छी बात में मन लगाएं तो उस संबंध में अच्छी प्रगति कर सकते हैं, तथा अच्छी प्रतिष्ठा भी प्राप्त कर करते हैं। कभी–कभी ये लोग ऐसा अच्छा व्यवहार करते हैं कि, सामनेवाले को आश्चर्य होता है। इस बात को लेकर इनके विरोधी मतभेद पैदा करते हैं, परन्तु उन्हें इसकी जरा भी चिंता नहीं होती। इन लोगों में एक बहुत बड़ा अवगुण दिखायी

देता है क्योंकि कई बार वे बहुत स्वार्थी बन जाते हैं। छोटे मोटे कारण से भी स्वयं अपने मन को अकारण दुःख देते हैं। इस कारण हताशा में जीवन व्यतीत करते हैं और अधिक दुःखी रहते हैं।

ये लोग मीठा बोलना नहीं जानते और जल्द ही एक बात के दो टुकड़े कर डालते हैं। बहुत बड़ी बात इन लोगों की यह है कि अमीर की तुलना में गरीब को अधिक चहते हैं। ये लोग मन लगाकर धंधा करें तो धंधे में बेसुमार धन कमा सकते हैं, परन्तु उदास स्वभाव के कारण कई बार व्यसन में फंस जाते हैं। ये लोग मन से किसी को मित्र बनाएं तो उसके लिए सर्वस्व निछावर कर देते हैं, मित्र को दगा न देते हुए अपना हित भी नहीं देखते। हो सके तो 4 अंक के लोगों को प्रातःकाल दिया जलाकर पूजा करना चाहिए और लाल गुलाब का फूल दिया के समक्ष रखकर दृष्टि फूल पर डालते हुए, ऊँ नमः शिवाय का पांच माला अवश्य फेरना चाहिए।

इन लोगों का अधिकांश, प्रेमविवाह होता है तथा कई बार प्रेम में पड़ने पर उनसे बड़ी उम्र के व्यक्ति के साथ विवाह हो जाता है। इन लोगों में नया सर्जन करने की शक्ति होती है, जिससे चाहने पर अनेक लोकोपयोगी नवीन अनुसंधान, विषयों में नाम अर्जित कर सकते हैं। ये लोग साधारण ऊंचाई के होते हैं तथा शारीरिक गठन मजबूत होता है, और 50 वर्ष की उम्र में ये लोग जवान दिखायी देते हैं। इन लोगों के लिए एक बात निश्चित होती है कि, वे अपने जीवन में महत्वपूर्ण कार्य नाम और ख्याति, अर्जित करते हैं। चेहरा हमेशा सख्त दिखता है एवं देखने पर ऐसा लगता है कि, ये सेना में काम करते हैं या कोई सरकारी अफसर है।

मूलांक 5 बुध

मूलांक 5 का अधिष्ठाता प्रतिनिधि ग्रह बुध है। जिनका जन्म 5,14,23 तारीख को अथवा किसी भी महीने में 5 अंक बनाने वाली तारीख में जन्म हुआ हो उनका मूलांक 5 होता है। पाश्चात्य अंक (ज्योतिष) के मतानुसार 22 मई से 21 जून तक और 24 अगस्त से 23 सितम्बर तक प्रतिवर्ष बुध का विशेष प्रभाव रहता है। फलस्वरूप इन समयों में जन्म लेने वाले जातक का मूलांक 5 होतो उन पर बुध का विशेष प्रभाव होता है। बुध से प्रभावित जातक मिलनसार एवं मित्रता करने वाले होते हैं। ये किसी भी व्यक्ति को अपने प्रभाव में ले लेते हैं। बुध से प्रभावित मूलांक 5 वाले जातक द्विस्वभावात्मक होने के कारण सभी लोगों के, मित्र हुआ करते हैं। परन्तु मूलांक 5 अथवा 5 अंक बनाने वाली तारीख में जन्मे प्राणी से इनकी विशेष घनिष्टता रहती है।

इनका जन्म दिनांक पाँच होने से अंक ज्योतिष के आधार पर मूलांक पाँच होता है, इसका स्वामी बुध ग्रह है। मूलांक पाँच के प्रभाववश ये रोजगार के क्षेत्र में नौकरी की अपेक्षा व्यापार के मार्ग में अधिक आकृष्ट होते हैं। यदि ये नौकरी का मार्ग चुनते हैं तो, ऐसी नौकरी इनको अधिक पसन्द आयेगी जहाँ लेन–देन, लेखा, यांत्रिकी, वाणिज्य, इत्यादि का कार्य होता हो कम्पनी, फैक्ट्री उच्च व्यापार इनको रास आयेगा। बुधग्रह के प्रभाववश इनके अन्दर वाक्पटुता एवं तर्कशक्ति अच्छी होती है, एवं सामने वाले व्यक्ति को अपनी बातों से प्रभावित करने में समर्थ रहेंगे। ये हर कार्य को जल्दी समाप्त करना पसन्द करेंगे एवं ऐसे रोजगार की ओर उन्मुख होंगे जिसमें शीघ्र सफलता कम मेहनत तथा अधिक लाभ प्राप्त होता रहे। ये थोड़े जल्दबाज एवं फुर्तीले होते हैं। जल्दबाजी के चक्कर में ये कभी–कभी हानियों का भी सामना करते हैं।

बुध से प्रभावित जातक कुशल व्यवसायी, बुद्धिमान, विद्वान, सट्टेबाज तथा शीघ्र लाभ होने वाले व्यवसाय की ओर विशेष आकर्षित होते हैं। ये किसी भी प्रकार के विषयपर अधिक दिनों तक चिन्तन या पश्चाताप नहीं करते। किसी विशेष परिस्थिति या अव्यवहारिकता से इनके मस्तिष्क पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ता है, परन्तु ये गम्भीर से गम्भीर बातों को शीघ्र भुलाकर सामान्य हो जाते

हैं। मूलांक 5 वालों के लिए अंक 3 और 9 मित्रांक 1,6,7 एवं 8 अंक सम तथा अंक 2 और 4 शत्रु अंक होते हैं। 3,12,21,30 एवं 9,18 और 27 तारीख शुभ सूचक होती है। इनके लिए फरवरी, मई एवं नवम्बर का महीना अनुकूल एवं भाग्यशाली होते हैं। इनके लिए प्रत्येक बुधवार, गुरुवार और शुक्रवार का दिन विशेष शुभ एवं प्रसन्नता प्रदायक होते हैं। इस अंक वाले जातक के लिए फरवरी, मई एवं नवम्वर के महीने में 5,14,23 / 3,12,21,30 एवं 19,18,27 तारीख बुधवार, गुरुवार तथा शुक्रवार को पड़ जाए अर्थात् शुभमास+शुभदिन+शुभ तारीख का संयोग हो जाए, तो सभी कार्य सफल होते हैं, ऐसे सुअवसर पर किसी नींव को देना, शुभारम्भ करना, अनुबन्धन, यात्रा सौदा, निवेश या कोई भी शुभ कार्य, अनुकूल फलदायी एवं सफलता प्रदायक समझा जाता है। बुध स्नायु मंडल का अधिष्ठाता है, बुध प्रभावित प्राणी अपनी स्नायविक ऊर्जा का अधिक व्यय कर लेते हैं, फलस्वरूप, अधिक आयु हो जाने पर स्नायु मंडल की द्रौर्बल्यता, मूर्छा आदि रोग होने की आशंका रहती है तथा ऐसे जातक में चिड़चिड़ापन या गुस्सा अधिक होता है।

ये बुध की भाँति चंचल और अस्थिर प्रकृति के होते हैं। इनमें आश्चर्यजनक चारित्रिक लोच होती है। ये किसी भी प्रकार की दिक्कतों या हानियों से शीघ्र मुक्त हो जाते हैं। इनके लिए हरा, श्वेत, भूरा, कत्थई चमकदार एवं मटमैला रंग अनुकूल एवं लाभप्रद होता है। इनके लिए पूर्वोतर एवं पश्चिमोत्तर दिशाएँ शुभसूचक एवं सफलता प्रदायक होती है। इनके लिए अनुकूल रत्न पन्ना, हीरा, स्फटिक, अमेरिकन डायमण्ड, आदि शुभ है। सम्बन्धित रत्नों को चाँदी में मढ़वाकर धारण करना चाहिए। बुध के अशुभ हो जाने पर आंत सम्बन्धी रोग, चर्मरोग, दाद, जुकाम, नजला एवं मानसिक तनाव की आशंका रहती है। ऐसे व्यक्ति को विश्राम करना, शयन करना एवं एकान्त वास करना, शुभ फलकारक होता है । इन्हें गाजर, चुकन्दर, पत्तागोभी, ज्वार की रोटी, खुमानी, पुदीन हरा, अखरोट, काजू, बादाम आदि सेवनीय है। 5 मूलांक वाले जातक के लिए जीवन का 5, 14, 23, 32, 41, 50, 59, 68 प्रभावशाली एवं महत्वपूर्ण वर्ष माना जाता है।

इनके जीवन का मूल रहस्य इस बात में है कि, विपरीत से विपरीत परिस्थितयों

को भी अपने अनुकूल बनाने की क्षमता, इनमें रहती है। बाधाएँ इनको अपने इच्छित मार्ग से हटा नहीं सकती। कठिन परिस्थितियों में भी ये न तो हिम्मत हारते हैं और न धैर्य खोते हैं, उल्टे ये शान्तिपूर्वक आगे बढ़ते रहते हैं। यही इनके जीवन का रहस्य है। मूलांक 5 का स्वामी बुध और देवता लक्ष्मी नारायण हैं। अनुकूल धातु स्वर्ण और पीतल अनुकूल रंग, खाकी, श्वेत, चमकीला एवं हरा है। इनकी दिशा उत्तर और अन्न साबुत मूँग एवं दान पदार्थ साबुत मूँग, कस्तूरी, कांसा और हरित वस्त्र है। तरल पदार्थ घृत जप का मंत्र **ऊँ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः** तथा संख्या 9000 है।

5 का अंक विस्तार का प्रतिनिधित्व करता है। यह समझ–बूझ की क्षमता तथा निर्णय का भी प्रतीक है। यह बुद्धि, वाक्पटुता, विचार का विस्तारक है। यह न्याय, फसलों, बुवाई तथा कटाई का प्रतीक है। यह भौतिक जगत में स्व के पुनर्उत्पादन, पितृत्व, परितोष व दंड का द्योतक है। 5 का अंक तर्क, कारण, नैतिकता, यात्रा, वाणिज्य व उपयोगिता का प्रतीक है। विज्ञान, साहित्य, कला के क्षेत्र में इन्हें अच्छी कीर्ति मिल सकती है तथा ये लोग अधिक वातूनी होने के बावजूद मायावी भी होते हैं। इन लोगों में बोलने की शैली तीक्ष्ण होती है तथा कटाक्ष बोलते हैं, और ऐसे स्वभाव के कारण हमेशा चिंता करते हुए जीते हैं। ये लोग क्रोध से पीड़ित होते है, परन्तु एक गुण अच्छा होता है कि, क्षणिक क्रोध के बाद पछतावा भी करते हैं। अपने सगे लोगों के प्रति पक्षपात रखते हैं, एवं एक बार यह निश्चित हो जाने के बाद कि वे गलत हैं, फिर भी अपनी जिद पर अड़े रहते हैं।

किसी भी बात में उलझन होने पर उसका समाधान भी ये लोग सावधानीपूर्वक करते हैं। जीवन जीने के लिए है, इसे समझकर परिवार के साथ मग्न रहकर परिवार में मन लगाएं तो ठीक ढंग से जीवन व्यतीत कर सकते हैं। इसके लिए परिवार के साथ प्रेम और आदर रखकर जीने पर इनके जीवन में कुछ अच्छा हो सकता है। ये लोग मानसिक शक्ति पर निर्भर रहते हैं, जिससे उन्हें काफी अनुभव मिलता रहता है। बुद्धिप्रधान स्वभाव के कारण समाज में अच्छी ख्याति अर्जित करते हैं। इन्हें गलत धंधा नहीं करना चाहिए, क्योंकि मादक पदार्थ उन्हें बरबाद करता है और कभी कोई स्त्री उनके जीवन में आती है तो, वह

स्त्री उन्हें विषयवासना की ओर ले जाकर उन्हें, बरबाद करना चाहती है जिससे उन्हें इस संबंध में बहुत सावधान रहना चाहिए। ये लोग बाहर रहना अधिक पसंद करते हैं, घर में रहना जरा भी अच्छा नहीं लगता, तथा घर में रहना इन लोगों को कदाचित ही जमता है। कई बार सत्य समझने के बावजूद अपना हठ नहीं छोड़ते। झूठी कल्पना तथा चिंता कर, अपने जीवन को हमेशा दुःखी करते रहते हैं।

विद्या में इनकी अच्छी रुचि होती है, परन्तु ये पूर्ण विद्या नहीं प्राप्त कर पाते और बीच में ही इन्हें अध्ययन छोड़ना पड़ता है। तर्क अधिक करते रहने से मनपसंद काम भी अधूरा छोड़ देते हैं। इस पर यदि वे काबू प्राप्त कर लें तो उनकी गणना भी अच्छे लोगों में हो सकती है। कई बार मानसिक शक्ति के व्यय से वे अनुचित दबाव के तहत जीते हैं। इनका शरीर नाजुक होता है जिससे स्थान परिवर्तन में उन्हें सर्दी, खांसी आदि शीघ्र होता है। इन्हें मंगलवार को सावधानी रखना जरूरी है। ईश्वर के प्रति, साईबाबा, श्री जलारामबापा जैसे किसी संत के या सूर्यपूजा आदि में मन लगाकर बहुत सी परेशानियों से बच सकते हैं। इन लोगों के पास प्रभु द्वारा दी गई सुंदर अंतरप्रेरणा होती है, तथा जिससे चाहें जितने भी कठिन प्रश्नों का समाधान सहज ही कर सकते हैं।

मूलांक 6 शुक्र

मूलांक 6 का अधिष्ठाता प्रतिनिधि ग्रह शुक्र है। जिस किसी भी जातक का जन्मांक 6 हो और वह चाहे वर्ष के किसी भी मास में 6 तारीख को अथवा 6 अंक बनाने वाली तारीख में जन्म हुआ है, उसका मूलांक 6 होता है। पाश्चात्य अंक (ज्योतिषी) शास्त्री के मतानुसार प्रत्येक वर्ष की 21 अप्रैल से 21 मई तक तथा 24 सितम्वर से 18 अक्टूबर तक शुक्र का विशेष प्रभाव रहता है। अतः इस समयावधि में किसी का भी जन्म 6,15 अथवा 24 तारीख हो तो ऐसे व्यक्तियों पर शुक्र का प्रभाव विशेष होगा। मूलांक 6 वाले व्यक्ति प्रायः लोक–प्रिय होते हैं। इनका व्यक्तित्व अच्छा तथा इनमें आकर्षण शक्ति एवं मिलन सारिता अधिक होती है। फलस्वरूप इनके सम्पर्क में आने वाले व्यक्ति इनसे खुश रहते हैं तथा ये सौन्दर्य प्रेमी होते हैं। ये सुन्दर व्यक्तित्व, कला संगीत, प्रकृति तथा चित्र अभिनय, मनोरंजन आदि से सम्बन्धित होते हैं। ये मित्र अतिथि एवं आगन्तुकों का विशेष सत्कार करते हैं तथा ललित कला प्रिय होकर कला एवं कलाकार को प्रोत्साहित करते हैं। ये हठी प्रवृति के होकर, अन्त तक अपनी जिद पर अड़े रहते हैं। ये अपने प्रतियोगी को परास्त करने की इच्छा रखते हैं तथा इन्हें सफलता भी मिलती है।

जन्म दिनांक 6,15,24 होने से अंक ज्योतिष के आधार पर, मूलांक 6 होता है जिसका अधिष्ठाता शुक्र ग्रह है। मूलांक 6 के प्रभाव वश इनके अन्दर आकर्षण शक्ति तथा मिलनसारिता अधिक रहती है। इस गुण के कारण ये लोकप्रियता प्राप्त करते हैं। सुन्दरता तथा सुन्दर वस्तुओं की ओर आकृष्ट होना इनकी सहज प्रवृत्ति होगी। विपरीत सेक्स के प्रति इनका आकर्षण अधिक होता है एवं सुन्दर नर–नारियों से संबंध बनाना, वार्तालाप करना, इनकी प्रवृति रहती है। विभिन्न कलाओं के क्षेत्र में इनकी अभिरुचि रहेगी एवं कला के क्षेत्र को अपना रोजगार–व्यापार भी बना सकते हैं। संगीत–साहित्य, ललितकला, चित्रकला इत्यादि में रुचि रखते हैं। सुन्दर वस्त्र धारण करना एवं सुसज्जित मकान में रहना इनको अच्छा लगता है।

अतिथियों का आदर सत्कार करने में इनको गर्व होता है। घर या ऑफिस में सभी वस्तुऐं ढंग से रखना, सुरुचिपूर्ण फर्नीचर, परदे इत्यादि रखना, इनको अधिक पसंद होता है। इनके स्वभाव में थोड़ा हठीपन होता है एवं इनकी हमेशा यही कोशिश रहती है कि, मेरी बात को सामने वाला मान जाया करे। किसी बात पर अड़े रहना तथा ईर्ष्या की मात्रा इनके अन्दर अधिक रहती है। ये कार्यक्षेत्र में किसी की प्रतिद्वन्दिता को आसानी से सहन नहीं कर पाते हैं, जिसके कारण कभी–कभी मानसिक तनाव एवं आत्मग्लानि का भी सामना करते हैं। ये दूसरों को अपना बना लेने की कला में पारंगत होते हैं। शीघ्र मित्र बनाने की कला इनके अन्दर अधिक मात्रा में होने से इनके मित्रों की संख्या अधिक रहती है। ये आकस्मात् किसी के भी मित्र बन जाते हैं तथा सुहृदय होते हैं। मूलांक 6 के मित्रांक 3 एवं 9 अंक होते हैं। इनकी 2,4,5,7 अंक से समता तथा अंक 1 और अंक 8 से शत्रुता रहती है। अतः इनके लिए 6,15,24 / 3,12,21,30 एवं 9,18,27 तारीख अनुकूल तथा मार्च, जून, सितम्वर एवं दिसम्वर का माह शुभफलदायी होता है। यदि उपरोक्त मास की उपर्युक्त तारीख मंगलवार, बृहस्पतिवार अथवा शुक्रवार को पड़ जाए तो विशेष रुप से अमृत–सिद्ध योग का सृजन होकर अति शुभफलदायी होता है। इन दिनों में ये किसी प्रकार का नवीन कार्य का शुभारंभ करें तो विशेष सफलता मिलती है। इस अंक वालों के लिए हल्का नीला, आसमानी, हल्का पीला, रंग शुभ फलदायी होता है। इनके लिए हल्का गुलाबी रंग, भी उपयुक्त है, किन्तु काला, गहरा लाल, या काकरोजी रंग अशुभ सूचक है।

अंक 6 के अधिपति ग्रह, शुक्र दैत्यो के गुरु हैं, अतः ये भोगकारक तथा राज्य योगकारक ग्रह है। ऐसा व्यक्ति उच्चकोटि का शौकीन तथा सुख पाने वाला व्यक्ति होता है, ये लोकप्रिय होते हैं। इनमें काम वासना की अधिकता रहती है तथा ये रति शास्त्रज्ञ होते हैं। ये एक अच्छे गुप्तचर नीति विशारद वाकपटु एवं विद्वान होते हैं। इनके लिए अनुकूल रत्न फिरोजा, हीरा, सफेद मूँगा, स्फटिक, सफेद पोखराज आदि रत्न होते हैं। इस अंक वालों के लिए उत्तरपूर्व, उत्तर पश्चिम तथा दक्षिण की दिशा भी शुभ होती है। मूलांक 6 वाले जातक को गले, नाक और फेफड़े से सम्बन्धित बीमारियों की आशंका रहती है। ये

खुले हवादार स्थान में रहना पसन्द करते हैं। इन्हें स्वास्थ्य रक्षा, हेतु, कलियाँ, चुकंदर, पालक पुदीना, खरबूजा, अनार, सेब, आड़ू, अखरोट अंजीर, बादाम, गुलाब की पत्तियों आदि का सेवन अधिक करना चाहिए। इनके जीवन का 15, 24, 33, 42, 51, 60 एवं 69 वर्ष स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से अधिक महत्वपूर्ण होते हैं।

6 मूलांक वालों के लिए 3 एवं 9 अंक वालों के साथ सहानुभूति रहने के कारण जीवन में 30, 39, 48, 57, 66, 54 एवं 63 वर्ष भी शुभसूचक, उन्नति कारक एवं सफलता दायक होता है। इनके जीवन का मूल रहस्य इस बात में है कि, ये विपरीत से विपरीत परिस्थितियों में भी मुस्कराते रहते हैं और कठिनाइयों में निर्भीकता से आगे बढ़कर परिस्थितियों को अपने अनुकूल बना लेते हैं। मूलांक 6 का स्वामी शुक्र एवं देवता भगवती हैं। इनके लिए अनुकूल धातु चांदी प्लेटिनॅम एवं व्हाइट मेटल तथा अनुकूल रंग नीला, आसमानी, एवं सफेद है। इनकी अनुकूल दिशा आग्नेय कोण है। अनुकूल वस्तुएँ मिश्री, दही, श्वेत चन्दन, चावल एवं श्वेत वस्त्र है। इनके लिए अनुकूल अन्न चावल तथा तरल पदार्थ दूध है। जाप मंत्र **ऊँ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः** तथा जप संख्या 16,000 है।

6 का अंक सहयोग का प्रतीक है यह एक कड़ी में जोड़ने व संबंधों का संकेतक है। पारस्परिक क्रिया, पारस्परिक संतुलन का भी द्योतक है। यह आध्यात्मिक व भौतिक जगत का मिलन स्थल जैसा है। यह मनुष्य में मानसिक व शारीरिक क्षमता का प्रतीक है। यह मीमांसा, मनोविज्ञान, दैवीय क्षमता, समागम व सहानुभूति का भी प्रतीक है। यह अंक परामनोविज्ञान, दूरसंवेदिता व मानसिक तुलना का भी प्रतिनिधि है। यह संपरिवर्तन, सहयोग, शांति, संतुलन व संतुष्टि की ओर संकेत करता है। यह संतुलन द्वारा परखी गई उदारता, सौंदर्य व सत्य का प्रतीक है। यह उद्देश्य प्राप्ति, समागम व पारस्परिकता का भी परिचायक है। यह स्त्री–पुरुष के नैसर्गिक संबंधों का प्रतीक है। 6 का अंक सहयोग, विवाह, पारस्परिकता,सहानुभूति,अभिनय, कला, संगीत, नृत्य का प्रतिनिधित्व करता है।

शुक्र के जातक प्रेमी होने से और उनमें भोगेच्छा का शौक विशेष होने से, वे जल्द विवाह करने के लिए तैयार होते हैं, और किसी कारण से न होने पर विवाह से पूर्व, स्त्रीसुख जरूर भोगते हैं और ये लोग पुरुष हों तो स्त्री और स्त्री हो तो पुरुष, भोगने के लिए इन्हें अवश्य मिलते हैं। शुक्र के व्यक्ति को इन्द्रियसुख की इच्छा प्रबल होती है तथा इसमें इन लोगों को ख्याल रखना चाहिए कि कभी दुराचार के मार्ग से न चले जाएं क्योंकि दुराचार के मार्ग पर जाने से उनमें अशिष्टता अवश्य पैदा होती है। इनमें ईश्वर के प्रति निष्ठा भी होती है तथा ये लोग मिलनसार, हमदर्द, हृदय के सुकोमल, कला के प्रति रुचि रखनेवाले तथा स्वयं किसी न किसी विषय में कलाकार होते हैं। ऐसे जातक बात विचार के मनमौजी, कपड़े, गहने, फूलों के, घूमने फिरने के, खाने पीने के गाडी मोटर आदि के शौकीन होते हैं, तथा अध्यात्मिक गुणों से संपन्न होते हैं। सेंट और अत्तर के ये बहुत शौकीन होते हैं। इसके साथ इन लोगों के स्वभाव में जो तेज और आवेश रहता है, उस पर वे काबू कर लें तो बहुत अच्छा कार्य कर सकते हैं। इन लोगों का स्वभाव तीक्ष्ण और बुद्धिप्रधान होने से अच्छे फिल्म कलाकार, नाट्य, संगीत, कविता, लेखन आदि कार्य करें तो अच्छी ख्याति प्राप्त करते हैं।

ये लोग स्वतंत्रता प्रिय होते हैं जिससे ये अपने कार्य में अथवा जीवन में किसी के हस्तक्षेप को सहन नहीं करते। ये लोग दूसरे की सराहना बहुत पसंद करते हैं और सराहना करनेवाला जो कुछ मांगता है, उसे देने के लिए तैयार हो जाते हैं। इन लोगों को जल्द क्रोध नहीं आता, परन्तु जब क्रोध आता है तो, मुश्किल से शांत होते हैं। ये लोग दूसरों पर हुक्म चलाते हुए दिखायी देते हैं और थोड़ा सा भी गफलत में न रहते हुए कार्य को पूर्ण करने की निगरानी रखते हैं। इन लोगों का स्वभाव बहुत जिद्दी होता है, यदि एक बार किसी के प्रति कोई मत बना लेते हैं, तो वे अपने मत को कभी छोड़ते नहीं हैं, उनका स्वभाव तर्कविर्तक करनेवाला होता है, इससे कई बार कार्य करते हुए कार्य अधूरा छोड देते हैं। इन लोगों का अन्य के साथ गुप्त संबंध भी होता है। अपने साथी के लिए, मित्र या किसी के प्रति एक बार यदि ये लोग खराब अभिमत बना लेते हैं, तो कभी अपना अभिमत नहीं बदलते। इन लोगों को मोटाई, पसंद नहीं

होती, इसके बावजूद मित्रों के बीच मोटाई बतानेवाले मित्र उनकी सराहना करें, ऐसी उनकी इच्छा होती है।

इन लोगों में सराहना की बात यह है, कि वे चाहते हैं कि वे कहें और लोग सुनें, इसके बावजूद वे भी दूसरे की बात को व्यावहारिक रहकर सुनते हैं, और न्याय का रुख अपनाते हैं। इन लोगों के परिचय में आनेवाले लोग उनके वश में होते हुए दिखायी देते हैं, तथा इन लोगों के हास्य में, बात में, आंखों में आकर्षण होता है। ये लोग आय का बहुत बड़ा भाग, प्रेम के पीछे खर्च कर देते हैं तथा स्त्री हो तो पुरुष, और पुरुष हो तो स्त्री के लिए परस्पर इस अंक के लोग, अधिक खर्च करते हुए दिखायी देते हैं।

मूलांक 7 नेपच्यून/केतु

मूलांक 7 का प्रतिनिधि ग्रह केतु है, पाश्चात्य विद्वान 7 अंक का स्वामी ग्रह नेपच्यून बताते हैं, वास्तव में नेपच्यून का स्वभाव **''वरुण''** के समान बताते हैं। परन्तु यह नाम भ्रान्तिकारक है। भारतीय वैदिक गणित के अनुसार मूलांक 7 का प्रतिनिधित्व केतु को प्राप्त होता है। जिस किसी भी व्यक्ति का जन्मांक 7,16,25 है अथवा जातक का जन्म किसी भी माह की 7 तारीख अथवा 7 बनाने वाली तारीख को हुआ है, तो उसका मूलांक 7 होता है। प्रायः चन्द्रमा की भाँति वरुण ग्रह जल प्रधान ग्रह है, परन्तु 7 अंक की आन्तरिक विशेषता केतु के समान है, अतः हमें 7 अंक का स्वामी ग्रह केतु को मान कर विवेचना करनी चाहिए।

मूलांक 7 का मित्रांक 2 एवं 6 है सम अंक 3,4,5,8 तथा शत्रु अंक 1 एवं 9 है। इस प्रकार 7 अंक वालों के लिए प्रत्येक माह की 7,16,25 एवं 2,11,20,29 तथा 6,15,24 तारीख अनुकूल एवं शुभसूचक है। इस अंक वालों के लिए प्रत्येक वर्ष की जनवरी, फरवरी अप्रैल एवं जुलाई का माह तथा प्रत्येक सप्ताह के रविवार, सोमवार, शुक्रवार का दिन शुभसूचक है। यदि वर्ष के उपरोक्त माह की सम्बन्धित तारीख, सप्ताह के शुभ दिन, तीनों का समीकरण हो जाए तो वह संयोग अधिक शुभ सिद्ध होगा।

इनका जन्म दिनांक सात होने से अंक ज्योतिष के आधार पर इनका मूलांक सात होता है। अंक सात का अधिष्ठाता, भारतीय मतानुसार केतु एवं पाश्चात्य मतानुसार नेपच्यून ग्रह को माना गया है। इन ग्रहों के प्रभाव इन्हें प्रभावित करते हैं। मूलांक सात के प्रभाववश इनमें कल्पना शक्ति अधिक होती है। काव्य रचना, गीत–संगीत सुनना, दूरदर्शन देखना इनकी अभिरुचि होती है। ललित कलाओं, लेखन, साहित्य आदि में इनकी अधिक रुचि रहती है। आर्थिक सफलताएं इनको अधिक नहीं मिलती तथा धन संग्रह करना भी इनको मुश्किल लगता है। यात्रा, पर्यटन, सैर–सपाटा इत्यादि इन्हें विशेष अच्छा लगता है। दूसरों के मन की बात समझने में ये निपुण होते हैं एवं अन्य लोगों को अपनी ओर आकृष्ट करने की विशेष शक्ति भी इनके अन्दर रहेगी। धर्म

के क्षेत्र में ये परिवर्तनशील विचारधारा के रहेंगे एवं पुरानी रूढ़ियों रीतियों, में अधिक रुचि नहीं रखते। इन्हें ऐसे रोजगार–व्यापार करना चाहिए जिनमें यात्रायें होती रहें, तथा दूर–दूर के देशों से सम्पर्क बना रहे। ये ऐसा ही रोजगार करते हैं जिनमें यात्रा के अवसर मिलते रहें। अतीन्द्रिय ज्ञान की अधिकतावश जहाँ ये दूसरों के मन की बात को जान जायेंगे वहीं इन्हें स्वप्न भी अद्भुत प्रकार के आते हैं तथा विदेशों से, जहाज, मोटर इत्यादि वाहनों से लाभ प्राप्त होता है।

इस अंक के व्यक्ति सदैव परिवर्तनशील होते हैं। ये यात्रा करना नवीन स्थान का परिदर्शन करना, अधिक पसन्द करते हैं। ये काल्पनिक एवं भावुक स्वभाव के होते हैं। ये चित्रकला एवं काव्य प्रेमी तथा कवि होते हैं। इन्हे इस क्षेत्र में सफलता भी मिलती है। धन के मामले में भाग्य इनका साथ नहीं देता और ये आर्थिक रुप से दुर्बल होते हैं। इस अंक वाले यदि परिश्रम करके धन संग्रह भी करते हैं, तो धन रुकता नहीं किसी भी प्रकार से धन नष्ट हो जाता है। जिस स्त्री जातक का मूलांक 7 होता है, वह धनी परिवार में ब्याही जाती है। इस प्रकार के जातक धार्मिक मामले में रूढ़िवादी होते हैं। प्रचलित परम्परा के विरुद्ध अपनी धार्मिक धारणा रखते हैं और दूसरों के मन की बात बिना बताए जान जाते हैं। ये स्वप्न द्रष्टा होते हैं तथा आश्चार्यजनक स्वप्न देखा करते है।

मूलांक 7 पर जलीय प्रभाव तथा नेपच्यून और केतु से प्रभावित रहने के कारण सामुद्रिक यात्रा–विदेश के व्यवसाय करने अथवा जहाज सम्बन्धी कार्य में विशेष सफलता मिलती है। पाश्चात्य ज्योतिषीय मतानुसार 21 जून से 25 जुलाई तक मेदिनीय क्षितिज पर नेपच्यून का विशेष प्रभाव रहता है। अतएव इस मासान्तर्गत 7,16,25 तारीख को जन्म लेने वाले जातक पर नेपच्यून के गुण विशेष मात्रा में मिलते हैं। रविवार, सोमवार, बुधवार तथा शुक्रवार इनके लिए शुभ सूचक हैं। इन्हें 1,10,19,28 तथा 9,18,27 अशुभ सूचक तारीखों को कोई विशेष महत्वपूर्ण अथवा शुभकार्य करना हानिकारक होगा।

इनके लिए हरा, काफूरी, (हल्का पीला) सफेद, नीला, आसमानी, गुलाबी, आदि रंग शुभसूचक एवं प्रसन्नता प्रदायक तथा हरा रंग सर्वथा अशुभ है। ऐसे

कल्पनाशील प्राणी का विशाल मस्तिष्क उन्नत ललाट, समान्यकद, तीक्ष्णबुद्धि निर्णायक और गम्भीर स्वभाव होता है। ये श्रेष्ठ विचारक धैर्यवान तर्कशक्ति से सम्पन्न होते हैं। इनके लिए लाभदायक रत्न, मूनस्टोन तथा मोती है। ये शीघ्र ही क्रोधित हो जाते हैं तथा शारीरिक शक्ति की अपेक्षा मानसिक सबल होते हैं। इन्हे सांस सम्बन्धी रोग के प्रति सतर्क रहना चाहिए। इनके लिए चुकन्दर गोभी, चिकोरी, खीरा, अलसी, सेब, अंगूर रसयुक्त फल, आम, अनार, जामुन, सन्तरा आदि सेवन करना अनुकूल है। इनके जीवन में 7, 16, 25, 34, 43, एवं 61 वर्ष उन्नति कारक एवं प्रसन्नता तथा भाग्योन्नति कारक वर्ष होता है।

बाधाएँ इन्हें विचलित नहीं कर सकतीं, कठिनाइयों से ये हताश नहीं होते और चुपचाप अपने लक्ष्य की ओर बढ़ते रहते हैं– यही इनके जीवन का रहस्य है। मूलांक 7 का स्वामी केतु अर्थात नेपच्यून है, देवता नृसिंह भगवान अनुकूल धातु अभ्रक, अनुकूल रंग सफेद, हरा एवं काफूरी दिशा नैर्ऋत्य वस्तुएँ नारियल, धूम्र वस्त्र, अन्न सप्तधान्य तरल पदार्थ तेल एवं जाप का मंत्र **ऊँ स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः** एवं जप संख्या 17,000 है।

7 अंक पूर्णता का परिचायक है, यह समय व स्थान, अंतराल तथा दूरी का प्रतीक है। वृद्धावस्था, क्षीणता, मृत्यु, सहनशीलता, स्थिरता, अमरत्व का भी यह प्रतिनिधित्व करता है। यह सात युगों, सप्ताह के सात दिनों आदि का प्रतीक है। यह सात प्रतिज्ञाओं, मनुष्य की सिद्धांतपरकता, ध्वनि के विभिन्न अवयवों व रंगों का भी संकेत करता है। यह मनुष्य की पूर्णता, विकास के चक्र, बुद्धि, मनोसंतुलन तथा विश्राम का भी द्योतक है। इसका प्रतिनिधि ग्रह केतु है। 7 का अंक शांति, अनुबंध, समझौता, संधि, मेल–जोल, सामंजस्य व कटुता का संकेत करता है। इन लोगों के स्वभाव को परख करना कठिन होता है। स्वभाव में उतार–चढ़ाव रहता है, क्योंकि यह नेपच्यून ग्रह होने से जिस तरह जलाशय पर चंद्र का असर होता है और जलाशय में खलबलाहट होती है, उसी तरह इन लोगों के स्वभाव और जीवन में खलबलाहट रहती है, इसके बावजूद इन लोगों के मन में अच्छे विचार और संस्कार दिखायी देते हैं। इन लोगों की आत्मा ऊंची होती है तथा दुनियादारी का अच्छा ज्ञान होता है।

इन लोगों में भारी कमी यह होती है, कि वे कोई भी निर्णय ठोस नहीं करते, इसके बावजूद इन लोगों में बहुत से लोग ठोस विचार शक्तिवाले होते हैं, जिससे जीवन में बहुत प्रगति करते हैं। इन लोगों में अच्छी व्यवस्था शक्ति होती है, जिससे किसी के हाथ के नीचे काम करने के लिए तैयार नहीं होते और यदि किसी के हाथ के नीचे काम करें, तो वे प्रगति नहीं कर सकते तथा ये लोग निःस्वार्थी भी होते हैं। ये लोग अपयश से पीड़ित होते हैं, इसके लिए हमेशा दुःखी रहा करते हैं। दूसरों को पैसे से, सहायता करते हैं, परन्तु वे काम हो जाने के बाद पैसा वापस नहीं करते, ऊपर से खराब भी बोलते हैं।

इन लोगों के शरीर में साधारण दोष देखने को मिलता है, दांत में ऊंचाई, नीचाई, आवाज में कर्कशता, शरीर का कोई अंग अधिक या छोटा बड़ा भी हो सकता है। ये लोग विदेश जाने के इच्छुक हों तो सहज ही जा सकते हैं। इन लोगों में एक विशेष कमी रहती है, कि ये दूसरे से उबन पैदा करनेवाले प्रश्न पूछकर समय खराब कर देते हैं। ये लोग स्वयं को बहुत हिसाबी समझते हैं, परन्तु हिसाब में उनकी पारखी नजर न होने से मार खा जाते हैं। इन लोगों की चाहत अंतःकरण से होती है और जिसे चाहते हैं, उसे असीम प्रेम करते हैं। ये चाहने और कोशिश करने पर अच्छे लेखक भी बन सकते हैं। स्वस्थ और बहुत समय तक जीवित रह सकते हैं तथा ये लोग अपनी तुलना अन्य व्यक्ति के साथ करते रहते हैं, क्योंकि इस तुलना से इन लोगों में ईर्ष्या पैदा होती है जो उनके स्वभाव की सुसंगतता बिगाड़ देती है।

इन लोगों पर समाज कोई न कोई जिम्मेदारी डालता है, कारण कि ये लोग समाज से दूर नहीं हो सकते। इन लोगों की रुचि लेखन, कला, कविता की ओर भी रहती है तथा स्वभाव शंकालु होता है तथा इन लोगों को अच्छे बुरे व्यक्ति की परख नहीं होती। ये लोग अच्छे कानूनविज्ञ या न्यायाधीश भी हो सकते हैं। इन लोगों की सहनशक्ति गजब की होती हैं ये चाहें तो अपनी चमत्कारिक सिद्धि, विकसित कर सकते हैं। इन लोगों को कोई उकसाए या उनकी सराहना करें तो वे सब कुछ दे देते हैं। इन लोगों का कोई अच्छा निःस्वार्थी सलाहकार होना जरूरी है।

इन लोगों की दृष्टि व्यक्ति की परख करने में सदा गलत साबित होती है और धोखा खाने के बाद हथेली में मुंह छिपाकर कोने में बैठकर संताप करते हैं। ये लोग समाज में अच्छा काम कर सकते हैं। तदुपरांत राजनीति में रहने पर नाम कमा सकते हैं। इन लोगों को किसी की सलाह लेना पसंद नहीं है तथा इन्हें भाषा पर अच्छा नियंत्रण रहता है। ये लोग अपना अधिकार नहीं छोड़ते और इस संबंध में कभी झगड़ा भी कर लेते हैं। इन लोगों की स्तुति करनेवाला हमेशा इन लोगों के पास से प्राप्त करता है, क्योंकि ये लोग स्तुति करनेवाले को सब कुछ दे देते हैं।

मूलांक 8 शनि

मूलांक 8 का प्रतिनिधि ग्रह शनि है। जिस जातक का जन्म किसी भी महीने की 8,17,26 तारीख को या आठ बनाने वाली तारीख को होता है उस जातक का मूलांक शनि से प्रभावित होते हैं। पाश्चात्य अंक (ज्योतिष) शास्त्री के मतानुसार प्रत्येक वर्ष 23 दिसम्बर से 19 फरवरी तक शनि का विशेष प्रभाव रहता है। इसलिए जो लोग उपर्युक्त समय में जन्म लेते हैं उनके लिए माह फरवरी, मई एवं अगस्त की 8 तारीख या आठ बनाने वाली तारीख शनि से प्रभावित रहता है।

जन्म दिनांक आठ होने से जातक का मूलांक आठ बनता है। मूलांक आठ का स्वामी शनिग्रह है। शनि के प्रभाव से ये अपने जीवन में धीरे–धीरे उन्नति प्राप्त करते हैं। व्यवधानों, कठिनाईयों से जूझते हुए सफलता प्राप्त करना इनकी प्रकृति होती है। असफलताओं से ये नहीं घबराते तथा कभी–कभी निराशा के भाव अवश्य आ जाया करते हैं। आलस्य इनका सबसे बड़ा शत्रु होता है और यही आलस्य इनकी असफलता का कारण होता है। अतः ये किसी भी कार्य को कल पर न टालें तो अच्छा रहेगा। जीवन में शनि ग्रह के प्रभाववश काफी महत्वपूर्ण कार्य करेंगे, जिससे नाम, यश, कीर्ति प्राप्त होगी। इनकी कार्यशैली को हर कोई नहीं समझ पायेगा, इससे इनके विरोधी भी उत्पन्न होंगे। इनके अन्दर दिखावे की प्रवृत्ति कम रहती है, इस कारण इनको कुछ लोग रूखा, शुष्क और कठोर हृदय समझते हैं। जबकि अन्दर से ये काफी भावुक एवं दयालु हृदय के होते हैं। ये अधिकांश समय में अपने काम से ही मतलब रखते हैं एवं कोशिश होती है कि काम में ही लगे रहें। लेकिन इनके इस व्यवहार के कारण आलोचक भी अधिक होते हैं। इनके अन्दर त्याग की भावना अधिक होती है एवं श्रम में कभी पीछे नहीं रहते। किसी भी कार्य में कितना भी श्रम, त्याग या बलिदान करना पड़े ये पीछे नहीं रहते। इसी कारण रुकावटों को पार करते हुये अपनी मंजिल अवश्य प्राप्त करते हैं। शनि प्रभावी व्यक्ति, संघर्षशील एवं परिश्रमी होते हैं तथा विघ्नों को पार करते हुये उन्नति करने के कारण इनको सफलता देर से लेकिन स्थायी प्राप्त होती है।

इस अंक वाले प्राणी बहुत महत्वपूर्ण कार्य करते हैं, परन्तु लोग इनके साथ

सहानुभूति नहीं रखते। अतएव अंक 8 वाले जातक अपने को एकाकी असफल तथा उदासीन माना करते है। इस अंक वाले कोई भी दिखावटी कार्य या बाहरी प्रेम नहीं रखते–क्योंकि बहुत लोग इन्हें, निराश और कठोर समझते हैं। परन्तु वास्तव में ये ऐसे नहीं होते। ये लगन के सच्चे और धुन के पक्के होते हैं। इन्हे अपने कार्य की पूर्णता एवं सफलता का विशेष ध्यान रहता है। इस प्रकार यदि कोई व्यक्ति इनसे शत्रुता भी करे तो ये लापरवाह रहकर अपने अपेक्षित लक्ष्य पर बढ़ते जाते हैं। ये उच्च कोटि के महत्वाकांक्षी होते हैं और उच्च पद की प्राप्ति हेतु अथवा सरकारी नौकरी आदि के लिए, यदि कष्ट उठाना पड़े अथवा कोई त्याग करना पड़े तो, उसके लिए भी उद्यत रहते हैं।

इनके जीवन में प्रायः बहुत कठिनाइयाँ आती हैं। अतः मूलांक 8 को अच्छा अंक नहीं मानते हैं। इनके लिए अनुकूल दिन शनिवार, रविवार और सोमवार का दिन होता है। इस अंक वालों को कोई नवीन या महत्वपूर्ण कार्य 8,17,26,1,10,19,28,4,13,22 और 31 तारीख को करना चाहिए। इनके लिए माह जनवरी अप्रैल मई अगस्त एवं अक्टूबर अनुकूल होता है। उपरोक्त मास सम्बन्धित तारीख शनिवार, बुधवार अथवा सोमवार का दिन पड़ जाए तो अमृत–सिद्ध अथवा शुभसूचक योग बन जाता है। जिस दिन किसी भी प्रकार की नीव डालना, श्री गणेश करना शुभारम्भ करना किसी भी प्रकार का समझौता, एग्रीमेंट या निवेश करना ऐसे समय में सफलता प्रदायक होगा। 23 दिसम्वर से 19 फरवरी तक के समय में शनि का विशेष प्रभाव रहता है। मूलांक 8 के जातक इन महीनों की 4 एवं 8 तारीख के अतिरिक्त 6 नवम्वर में व्यवहार करके लाभान्वित हो सकते हैं। मूलांक 8 के जातकों को गहरा, भूरा, काला, गहरा नीला, काकरोजी, जामुनी, हरा और सफेद रंग प्रभावशाली एवं शुभ सूचक हैं। इनकी दक्षिण, दक्षिणपूर्व एवं दक्षिणपश्चिम दिशाएँ शुभ एवं लाभादायक तथा उन्नति कारक होती हैं। ऐसे जातकों को जिगर, पित्त और आँखों से सम्बन्धित रोग होने की संभावना रहती है। इसके अतिरिक्त सिरदर्द और गठिया की भी बीमारी होने की आशंका रहती है।

इनके लिए मांसाहार निषेध है, इन्हे शाकाहार में पालक, सर्दियों की हरी सब्जी, गाजर, कदली, चौलाई, आजवायन आदि का अधिकाधिक सेवन करना चाहिए।

इनके जीवन के 17,26,35,44,53 और 62वाँ वर्ष महत्वपूर्ण परिवर्तन हेतु प्रभावशाली होते हैं। इनके लिए नीलमणी, नीलम, गहरे रंग का नीलम, कालामोती, कालाहीरा अनुकूल एवं भाग्योन्नति कारक रत्न होते हैं। इनके व्यक्तित्व की यह विशेषता है, कि जब किसी के मित्र है तो हर प्रकार से उसकी सहायता करते हैं, परन्तु जब किसी पर क्रोधित हो जाते हैं, तो उसका सर्वनाश करने के लिए उतावले हो जाते हैं। मूलांक 8 का स्वामी शनि, देवता भैरव हैं। इनकी शुभ धातु लोहा, अनुकूल रंग गहरा नीला, काला और काकरोजी है इनकी अनुकूल दिशा पश्चिम और वस्तुयें सरसों, खड्ग तेल, तिल एवं काला वस्त्र है। इनके अनुकूल अन्न उड़द, तरल पदार्थ तेल है।

मंत्र **ऊँ प्रां प्रीं प्रौ सः शनये नमः** एवं जप संख्या 23,000 है।

8 का अंक विघटन का अंक है। यह चक्रीय विकास के सिद्धांतों व प्राकृतिक वस्तुओं आध्यात्मीकरण की ओर झुकाव का प्रतीक है। प्रतिक्रिया, क्रांति, जोड़–तोड़, विघटन, अलगाव, बिखराव, अराजकता के गुण भी इसी अंक से जुड़े हैं। यह चोट, क्षति, विभाजन, संबंध विच्छेद का भी परिचायक है। यह श्वसन की अंतःप्रेरणा, अतिबुद्धित्ता, आविष्कारों व अनुसंधानों का प्रतीक है। यह विक्षेपण, सनकी स्वभाव, मार्ग से विचलन, त्रुटि व विक्षिप्तता का भी प्रतीक है।

इन लोगों का स्वभाव सेवाभावी होता है तथा स्नेही और अच्छे मित्र बनाने का शौक होता है। छोटी बात जिसका कोई अर्थ नहीं होता, तो भी उस बात को लेकर ये निराश हो जाते हैं। अच्छा स्वभाव होने के बावजूद ये लोग चालाक भी होते हैं। बहुत से लोग इन लोगों के लिए मतभेद पैदा करते हैं, उनका स्वभाव भी शंकाशील होता है। बहुत खराब बात यह है, कि इन लोगों का घर में छोटी सी भी बात में अपमान हो जाए तो सहन नहीं कर सकते। घर के लोगों के साथ बिगाड़ कर लेते हैं। ये लोग शोध और खोज में विजयी रहते हैं, ये लोग शरीर को थोडा भी कष्ट देने के लिए तैयार नहीं होते, जिससे परिश्रम का कार्य नहीं करते हैं। पैसे के संबंध में इन लोगों को चिंता करने की जरुरत नहीं होती तथा धंधा या नौकरी में इन लोगों को अच्छा खासा धन मिलता रहता है। मित्रों के साथ अच्छी तरह से जुड़े रहते हैं और

मित्रों का विश्वास भी जीत लेते हैं। सट्टा, रेस, पत्ता आदि में ये अच्छा पैसा प्राप्त करते हैं। ये पैसे की बात में अच्छे हिसाबी होने से किफायती भी होते हैं। सुख, शांति के लिए एकांतवास में रहते हुए दिखायी देते हैं। जिससे जब–जब मानसिक स्थिति बराबर न हो तब अकेले घर में बैठे रहते हैं। बातचीत करने में कुशल होते हैं। तर्क में अच्छे तर्कशास्त्री होते हैं तथा दूसरे को सुख नहीं देते और स्वयं भी सुख नहीं प्राप्त करते। इन लोगों को गरीब और दुःखी के प्रति अच्छी सहानुभूति होती है, जिससे ये लोग उनकी मदद करने के लिए तत्पर रहते हैं।

आध्यात्मिक विषय इनको बहुत पसंद होता हैं, जिससे उनमें अच्छी धार्मिक मनोवृत्ति देखने को मिलती है इन लोगों को होशियार लोग बहुत पसंद होते हैं। छोटे लोगों के साथ इन लोगों का बर्ताव खराब रहने से उनसे दुश्मनी रहती है। कुदरती सौंदर्य, कला, संगीत के प्रति अच्छी रुचि होती है पर्यटन के अच्छे स्थलों पर घूमने का शौक भी होता है। इन लोगों को शनिदेव की पूजा नित्य करनी चाहिए इन लोगों की समझ में कोई ऐसी वैसी बात आ जाए, तो उसके पीछे सावधानी पूर्वक लग जाते हैं। ऐसे लोगों को उलझनपूर्ण काम मिले तो उसका समाधान कर देते हैं। इन लोगों को मस्तक व जठर और रीढ़ की बीमारी से सावधान रहना चाहिए। कई बार ये लोग चिडचिड़ा स्वभाव के भी होते हैं। इन लोगों का भाई बहनों से बहुत कम बनता है तथा समाज में भी इनका मेलजोल कम होता है।

मूलांक 9 मंगल

मूलांक 9 का अधिष्ठाता ग्रह मंगल है। वर्ष के किसी भी माह में निम्मांकित तारीख को जन्म लेने वाला जातक अथवा 9,18,27 अंक बनाने वाली तारीख को जन्म लेने वाला होता है तो उनका मूलांक 9 होगा। पाश्चात्य ज्योतिषी महान् भविष्य वक्ता कीरो के मतानुसार प्रतिवर्ष 23 मार्च से 20 अप्रैल तक और 24 अक्टूबर से 21 नवम्वर तक मेदिनीय क्षितिज पर मंगल का विशेष प्रभाव रहता है। इस समय 9,18,27 तारीख को अथवा उपरोक्त निर्देशित विधान के अनुसार जो व्यक्ति जन्म लेता है, उस पर मंगल का विशेष प्रभाव रहता है।

जन्म दिनांक नौ होने से मूलांक नौ होता है मूलांक नौ का स्वामी मंगल है। मंगल को ग्रहों का सेनापति माना गया है। अतः इनके अन्दर सेनापति, नायक, मुखिया इत्यादि बनने की चाह समाजिक बनी रहेगी। इनमें रोजगार व्यवसाय में एकाधिकार की प्रवृत्ति पाई जाती है। इनके अन्दर साहस अधिक होने से, ये अपने कार्यों को अदम्य साहस से करते हुये, कठिनाईयों को आसानी से पार कर लेते हैं। इनके स्वभाव में तेजी रहती है तथा फुर्ती एवं जल्दबाजी से कार्य कर करते हैं। सदैव यही कोशिश रहती है कि ये जो भी कार्य हाथ में लें वह शीघ्र समाप्त हो जाये। स्वभाव में साहसीपन होने से ये दुःसाहस के कार्यों से सदैव दूर रहना हितकर समझते हैं। ये अनुशासन प्रिय रहते हैं, एवं दूसरों से अनुशासन रखने की अपेक्षा करते हैं। खुशामद एवं चापलूसी से प्रभावित होकर कभी–कभी नुकसान भी उठाते हैं। अतः खुशामदी एवं चापलूस व्यक्तियों से सदैव बचें। मंगल ग्रह के प्रभाव से क्रोध की मात्रा भी अधिक रहेगी। इससे विरोधी उत्पन्न होंगे। शत्रुओं की संख्या कम रहेगी एवं शत्रुओं को दमन करने का बल हमेशा बना रहेगा।

ये मंगल के मूलांक के प्रभाववश अग्नितत्व प्रधान रोगों के शिकार होते हैं। अतः सौम्यता का व्यवहार रखना भाग्य में वृद्धि कारक होता है। मंगल प्रभावित मूलांक वाले प्राणी साहसी, पराक्रमी तथा संघर्षशील होते हैं। इन्हे संघर्ष के पश्चात् सफलता मिलती है। ये स्वभाव से उग्र और प्रकृति चंचल होती है, इनके जीवन के 9,18, एवं 27 वें वर्ष की आयु महत्वपूर्ण परन्तु संघर्षपूर्ण रहेगी।

इनके जीवन में शत्रुओं की बाहुल्यता रहती है, मूलांक 9 के जातक पुलिस, प्रतिरक्षा, साहसिक एवं जोखिमपूर्ण कार्य में रहा करते हैं तथा इसी क्षेत्र में सफलता भी मिलती है। इनके जीवन में अनेक बार चोट, घाव, शस्त्राघात एवं दुर्घटना आदि होती रहती है। कई बार अग्नि से प्रभावित होते पाए जाते हैं और यदा–कदा अग्नि प्रकोप से दुखी भी होते हैं।

इस मूलांक के जातक को विशेष सतर्क रहने की आवश्यकता होती है, ये घर में या घर से बाहर कहीं भी झगड़े झंझट,उलझन आदि से प्रभावित अथवा संलग्न रहते हैं। क्योंकि 9 मूलांक के जातक शीघ्र क्रोधित हो जाते हैं, तथा झगड़ा करने में अग्रसर हो जाते हैं। ये किसी भी बात को सहन नहीं कर पाते अपनी आलोचना सुनकर आग–बबूला हो जाते हैं। ये उच्चकोटि के कार्य प्रबन्धक होते हैं तथा अपने प्रेमी के लिए कुछ भी न्योछावर कर देते हैं। इस प्रकार के व्यक्ति को स्त्री जाति मूर्ख बना सकती है, क्योंकि ये प्रेम के अधिक इच्छुक होते हैं। इस अंक के जातक भाग्यशाली होते हैं। तथा भाग्योन्नति में, इनका निष्ठुर स्वभाव बाधक होता है।

9 अंक वाले जातक के लिए अंक 3 और 6 मित्रांक अंक 2,4,5,8 समान अंक तथा 1 और 7 शत्रु अंक होते हैं। इस प्रकार 9 मूलांक वालों के लिए प्रत्येक माह की 9,18,27 / 3,12,21,30 / 6,15,24 तारीख मंगलवार, गुरुवार एवं शुक्रवार का दिन शुभफलदायी होता है, साथ ही इनके लिए प्रत्येक वर्ष का मार्च, जून, सितम्बर तथा दिसम्बर महीना शुभ फलदायी है। साथ ही इनके जीवन के 9,18,24,27,30, 36,39,42,45,48,51,63,72 वाँ वर्ष अनुकूल शुभ, उन्नति कारक एवं भाग्यशाली होते हैं। इस अंक वाले धैर्यवान होते हैं, तथा ये स्वतंत्र रुप से जीवन यापन करना एवं स्वयं कार्य–कर्त्ता होना पसन्द करते हैं। इनके जीवन का प्रारम्भिक काल कुछ कठिनाईयों से भरा होता है परन्तु अन्त में ये जातक अपनी सहिष्णुता आत्मविश्वास तथा दृढ़ इच्छा शक्ति के द्वारा, मुसीबतों पर विजय प्राप्त करते हैं।

इनके जीवन में कभी–कभी शल्य क्रिया भी होती है। इनका दाम्पत्य जीवन सुखी नहीं होता, क्योंकि इनका विचार इनकी पत्नी से नहीं मिलता है। इनके

लिए गुलाबी, गहरा लाल, सफेद, तथा पीला रंग अनुकूल एवं शुभप्रद है। इनके लिए अनुकूल रत्न, रुबी, गारनेट, मूँगा, माणिक, रत्न धारण करना लाभप्रद एवं भाग्योन्नति कारक होते हैं। इनके लिए पूर्व, उत्तरपूर्व एवं उत्तर पश्चिम दिशा अनुकूल होती है।

9 अंक से प्रभावित जातक को खसरा, चेचक, ज्वरादि की बीमारी की आशंका रहती है इनके लिए मांसाहार, गरिष्ठ भोजन अधिक मसाला एवं मद्यपान अति हानिकारक है। प्याज, लहसन, मूँगफली, चिरायता, मजीठ, अदरख, पीदर, आलू , अमरबेल, आदि का सेवन लाभप्रद होता है। जैसी परिस्थिति होती है अपने आपको उसके अनुरूप ढाल देना इनके जीवन का रहस्य है। निर्भीकता इनके जीवन का सबसे बड़ा गुण है। नेतृत्व करने की जन्मजात प्रवृत्ति होती है, और उर्बर मस्तिष्क तथा अधिक परिश्रम करना इनके जीवन का विकास है। मूलांक 9 का स्वामी मंगल एवं देवता हनुमान हैं। इनकी शुभ धातु ताम्र, अनुकूल रंग गुलाबी एवं गहरा लाल है। इनकी अनुकूल दिशा दक्षिण, दान की वस्तुयें लाल वस्त्र, केशर, रक्त चंदन एवं तांबा तथा अन्न मसूर है। पदार्थ घृत, जाप मंत्र **ऊँ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः** तथा जाप संख्या 10,000 है।

यह पुर्नजन्म, अध्यात्म, इंद्रियों के विस्तार, पूर्वाभास, विकास व समुद्री यात्राओं का प्रतीक है। यह स्वप्न, अघटित घटना, दूरस्थ ध्वनियों को सुनने का भी प्रतीक है। यह पुनर्रचना, कामयता, कंपन, लय, तरंग, बहिर्गमन, प्रकाशन, धनुर्विद्या, भविष्यकथन, रहस्योद्घाटन, विचार तरंगों, दिव्य दर्शन, प्रेतात्मा, धुंध, बादल, दुर्बोधता, निर्वासन तथा रहस्य का भी द्योतक है। 9 का अंक तीव्रता, संघर्ष, ऊर्जा, साहस, विभक्तिकरण, रोष व उत्सुकता का प्रतीक है।

ये लोग किसी से हार न सकने वाले शूरवीर, साहसी होते हैं, और स्वभाव अच्छा होता है। ये लोग प्रभावी व्यक्तित्व के होते हैं तथा अच्छे खासे सुंदर होते हैं, रंग गुलाबी होता है, तथा आंखे तेजस्वी होती हैं, ये लोग शारीरिक रूप से भले पहलवान न बनें, परन्तु उनका स्वास्थ्य अच्छा होता है। इन लोगों का शरीर गठीला होता है। ये लोग बहुत आकर्षक भी होते हैं। इन लोगों में अच्छी संचालन शक्ति होती है, जिससे ये अच्छे संचालक बन सकते हैं, अच्छे

पत्रकार बन सकते हैं, प्रतिष्ठित अखबार के संपादक आदि भी बन सकते हैं।

इन लोगों को प्रत्येक कार्य सोच–विचार कर करना चाहिए क्योंकि कभी अशुभ ग्रह आने पर नुकसान उठाना पड सकता है। उतावले स्वभाव में परिवर्तन करने पर अड़चन नहीं आएगी। इन लोगों का वैवाहिक जीवन सुखद नहीं होता जिससे ये लोग कई बार स्त्रियों के पीछे पैसे खर्च करते हुए दिखायी देते हैं, परन्तु इन लोगों का विवाह परस्पर अंक 9 के तहत मिलाकर किया जाए तो जीवन सुख से व्यतीत होगा। इन लोगों के कार्य में कोई अड़चन पैदा करे, तो वे थोडा भी सहन नहीं करते। ये लोग स्वभाव से तामसी होने के बावजूद शांत दिखायी देते हैं। दूसरों पर रौब जमाने पर ये लोग काबू में आने वाले नहीं हैं। इन लोगों को अपने धर्म के प्रति गर्व होता हैं, इन लोगों के आचार विचार कई बार बदलते हुए दिखायी देते हैं, तथा इन लोगों की आर्थिक स्थिति बहुत कमजोर रहती है।

इनका विशेष गुण यह होता है, कि ये किसी का उपकार चुकाए बगैर नहीं रहते। इन लोगों में बहुत से लोग शुरूआती जीवन में कष्ट उठाते हुए दिखायी देते हैं। ये लोग अच्छी मेहनत कर जीवन में ढेर सारा पैसा अर्जित करते हैं, बाद का जीवन पैसा आदि के लिए बहुत अच्छे ढंग से बीतता है। अच्छी तरह से बातचीत करते हैं, जिससे बहुत अच्छे वक्ता भी बन सकते हैं। ये लोग अच्छी ख्याति प्राप्त करते हैं और नौकरी करने पर उच्च पद पर होते हैं। इस अंक का स्वमी मंगल होने से 9,18 और 27 तारीख को पैदा होनेवाले लोगों के लिए मंगलवार, गुरूवार और रविवार शुभ हैं। 9,18,27 तारीख को को मंगलवार, गुरूवार और रविवार का आना शुभ माना जाता है। इस अंक की तारीख को आनेवाले दिनों में कोई भी अच्छा कार्य करने पर उसका फल अच्छा मिलता है।

स्मरण रहे कि, जिस नाम के पुकारने से सोया–व्यक्ति जग जाए, आगे जाता मनुष्य पीछे मुड़कर देख ले उस नाम का जीवन पर निश्चय ही प्रभाव पड़ता है। साथ ही उस नाम से बनने वाले अंकों का प्रभाव भी मानव जीवन पर निश्चित् रूप से पड़ता है। नाम और नाम की संख्या से अनादि काल से फलादेश होते आ रहे हैं। अंक विद्या में प्रत्येक अंक के गुण के अनुसार एक अंक

किसी अन्य अंक के द्योतक भी होते हैं।

मूलांक	शुभ दिन	शुभ तारीख	शुभ वर्ष	शुभ रत्न/उप रत्न
1.	रवि,सोम.	110,19,28	28,37,46	माणिक्य
2.	सू.मं.शु.	2,11,20,29	29,38,47	मोती
3.	मं.गु.शु.	3.12,21,30	30,39,48	पुखराज
4.	सू.सो.शनि.	4,13,22,31	31,40,49	गोमेद/काला हकीक
5.	गु.बु.शु.	5,14,23	32,41,50	पन्ना/मरगज
6.	शु.गु.मं.	6,15,24	33,42,51	हीरा/ओपल,झरकन
7.	रवि.सो.	7,16,25	34,43,52	लहसुनिया
8.	श.सू.सो.	8,17,26	35,44,53	नीलम
9.	मं.गु.शु.	9,18,27	36,45,54	मूंगा/हकीक

3. Result of Lucky Number

जब जातक का जन्म होता है, उस तारीख, माह, वर्ष को योग करके लब्ध संख्या को भाग्यांक कहा जाता है।

भाग्यांक 1

भाग्यांक एक का अधिष्ठता सूर्य ग्रह को माना गया है। इसके प्रभाव से इस अंक के जातक अपने कार्यक्षेत्र में चतुर, बलवान, बुद्धिमान, राजसी ठाटबाट को पसन्द करने वाले, स्पष्ट वक्ता होते हैं। स्वभाव से गम्भीर, उदार हृदय, परोपकारी, सत्य के मार्ग पर चलने वाले, यशस्वी तथा विरोधियों को परास्त करने में विश्वास रखने वाले शूरवीर व्यक्ति के रूप में पहचान स्थापित करते हैं। इनका जीवन चक्र एक राजा की भाँति संचालित होता है, अर्थात हुकूमत पसन्द, स्वतंत्र तथा स्थिर विचार एवं निर्भीक होते हैं। अहं या स्वाभिमान इनमें कूट–कूट कर भरा होता है।

इनकी महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति, इनकी मेहनत से होती है। सूर्य अग्नि तत्व का द्योतक होने से इनका तेज समाज के विभिन्न क्षेत्रों में व्याप्त होता है। जीवन शक्ति इनमें अच्छी होती है, एवं दूसरों को प्रोत्साहित करने में कुशल होते हैं। इनका भाग्य उच्च श्रेणी का होने से एक दिन अपने श्रम, लगन, स्थिर प्रकृतिवश सर्वोच्चता को प्राप्त करते हैं। सूर्य प्रकाशित ग्रह होने से इनको हमेशाा प्रकाश में रहना सुखकर लगता है, और ऐसे ही कार्यक्षेत्र को पसन्द करेंगे, जिसमें नाम तथा यश दोनों ही मिले।

भाग्यांक 2

भाग्यांक दो का स्वामी चन्द्र ग्रह को माना गया है। इसके प्रभाव से इनकी कल्पनाशक्ति उन्नत किश्म की होती है। बौद्धिक स्तर उच्च कोटि का होता है एवं बुद्धिजन्य कार्यों में, इनकी विशेष अभिरुचि होती है। शारीरिकश्रम साध्य कार्यों में इनकी दिलचस्पी कम रहती है। चन्द्रमा जिस तरह घटता–बढ़ता रहता है, उसी प्रकार इनके भाग्य का सितारा भी, कभी एकदम ऊँचाईयों को

प्राप्त करता है और कभी एकदम घोर अंधकार में, ऐसे समय में धैर्य रखना इनके लिए अनिवार्य हो जाता है, क्योंकि भाग्य का सितारा भी पुनः पूर्णिमा की तरह प्रकाशित होता है। धैर्य न रखना इनकी कमजोरियों में होता है।

इनका भाग्य बदलता रहेगा एक स्थिर मुकाम पर कभी नहीं पहुँचेगा। इन्हें सम्पूर्ण जीवन में भाग्योदय की कुछ कमी खटकती रहेगी। इन्हें अधिकारियों से लाभ होगा तथा धन–धान्य से सुखी रहेंगे। अपनी चलायमान प्रकृति पर नियंत्रण रखना होगा, अन्यथा एक के बाद एक कार्यों को बीच में छोड़कर आगे बढ़ने की प्रवृत्ति से इनके कार्य देर से सफल होंगे, और कभी असफल भी हो सकते हैं।

भाग्यांक 3

भाग्यांक तीन का अधिष्ठाता बृहस्पति ग्रह को माना गया है। इसको गुरु भी कहते हैं। गुरु ग्रह के प्रभाववश ये धार्मिक, दानी, उदार, सच्चरित्र, ज्ञानी, विद्वान, परोपकारी, शान्त स्वभाव, सत्य का आचरण करने वाले व्यक्ति के रूप में ख्याति प्राप्त करते हैं। अनुशासन में रहना एवं दूसरों से अनुशासन की अपेक्षा करना इनका प्रमुख गुण होता है। ये अपने अधिनस्थों से अधिकांश कार्य अपने बुद्धि कौशल से निकलवाने में सिद्धहस्त होते हैं।

सामाजिक, राजनैतिक क्षेत्रों में इनकी रुचि रहती है, एवं आवश्यकता के समय समाज सेवा के कार्य से पीछे नहीं हटते। धर्म–कर्म के कार्यों में इनकी रुचि रहती है। गुरु धन–सम्पदा का दाता ग्रह है, अतः गुरु के प्रभाव से अपने कर्मक्षेत्र, रोजगार के क्षेत्र में अच्छी सम्पदा एकत्रित करते हैं। भूमि, वाहन, सम्पत्ति का अच्छा सुख प्राप्त करते हैं, ज्ञान–विज्ञान के क्षेत्र में रुचि होती है और ऐसा कार्य करना पसन्द करते हैं, जिनमें अनुभव, ज्ञान का भरपूर उपयोग होता हो, और पूर्ण सम्मान यश इत्यादि प्राप्त हो।

भाग्यांक 4

भाग्यांक चार का स्वामी भारतीय मतानुसार राहु एवं पाश्चात्य मत से हर्षल ग्रह को माना गया है। हर्षलग्रह के प्रभाव से इनका भाग्योदय अचानक होता है।

इनके जीवन में कई कार्य ऐसे होते हैं, जिनमें अथक परिश्रम के बाद निश्चित अवधि में सफलता न मिले और कार्य रुक जाय। लेकिन एक दिन अचानक ही ऐसे कार्य बन भी जाया करते हैं। ये जातक अपने कार्यक्षेत्र में परिवर्तन के हिमायती होते हैं, एवं पुरानी मान्यताओं में परिवर्तन करते रहना इनकी आदत होती है तथां रूढ़िवादिता से थोड़े दूर तथा आधुनिक होते हैं।

ज्ञान–विज्ञान के क्षेत्र में इनका रुझान रहता है एवं ऐसे कार्यों को संपादन करने में आनन्द अनुभव करते हैं, जिन्हें अन्य जन दुष्कर समझते हैं। इनके कार्यों में विस्फोटकता रहेगी तथा अचानक चर्चित होंगे, लेकिन यह स्थायित्व नहीं ले सकेगा। बार–बार का परिवर्तन इनकी उन्नति में बाधक होता है। अचानक सफलता या असफलता से इन्हें जोखिम कार्यों से दूर रहना या सोच–समझकर कार्य करना भाग्य वृद्धि कारक रहेगा।

भाग्यांक 5

भाग्यांक पाँच का स्वामी बुध ग्रह होने से इनका भाग्योदय स्वतः की बुद्धि विवेक द्वारा होगा। बुध वाणिज्य तथा व्यावसायिक कला का दाता है। गणित, लेखन, शिल्प, चिकित्सा, लेखा कार्यों में अच्छी प्रगति प्रदान करेगा। इनके अन्दर व्यापारिक कला अच्छी विकसित होगी। वाक् पटुता, तर्कशक्ति, बहुत बोलने की आदत आदि भी रहेगी। ऐसे लोग रोजगार के क्षेत्र में नित नई स्कीम बनायेंगे जो इनकी तरक्की का मार्ग प्रशस्त करती हैं। वाणिज्य कला में ऐसे लोग काफी निपुण रहते हैं, एवं रोजमर्रा के कार्यो को फुर्ती से पूर्ण करते हैं। दूसरों से कार्य करवाने में भी निपुण होते हैं।

व्यवसाययिक बुद्धि होने से धन संग्रह की ओर ये अधिक आकृष्ट होते हैं एवं आवश्यकतानुसार भविष्य के लिए धन एकत्रित करते हैं। आर्थिक क्षेत्र में इनकी स्थिति मध्यमोत्तम श्रेणी की होती है। कानून का इन्हें ठीक ज्ञान रहने से, कार्य क्षेत्र में सभी कार्यों को बखूबी निभायेंगे तथा अन्य व्यक्ति ऐसे ज्ञान के आगे नत–मस्तक होंगे।

भाग्यांक 6

भाग्यांक 6 के स्वामी शुक्र ग्रह के प्रभाव से इनका भाग्योदय चौंसठ कलाओं में से एक कला के द्वारा होगा, शुक्र कला का दाता है, अतः ऐसे जातक में ललित कलाओं में से कुछ कलाओं का समावेश होता है, तथा कला के क्षेत्र में, कला के द्वारा जीवन यापन करते हैं।

कलात्मक वस्तुएं लाभ प्रदान करेंगी। विपरीत योनि के प्रति सहज आकर्षण के अवगुण वश तन–मन एवं धन का व्यय करेंगे। सौन्दर्य की ओर आकर्षण इनकी कमजोरी रहेगी।

इनके कार्य करने के स्थान तथा रहने के स्थान की साज–सजावट बनाये रखने में हमेशा धन व्यय होगा। क्योंकि सुसज्जित परिवेश में रहना इनके मनोनुकूल है। ऐसे लोग वस्त्र आभूषण के शौकीन होते हैं एवं धन कीर्ति इनकी ठीक रहती है तथा शान–शौकत बनी रहती है। सामने वाले व्यक्ति इन्हें हमेशा धनी समझते रहेंगे, भले ही यदा–कदा कड़की के दिनों में चल रहे हों। ऐसे जातक, किसी कला के क्षेत्र में अपना रोजगार का क्षेत्र चुनते हैं, तो इनकी उन्नति निश्चित ही होती है।

भाग्यांक 7

भाग्यांक सात का स्वामी भारतीय मत से केतु तथा पाश्चात्य मत से नेपच्यून ग्रह को माना गया है। यह कल्पना शक्ति, विचार शक्ति, अच्छी देता है, तथा भाग्योदय, रुकावटों के बाद करता है। आर्थिक क्षेत्र में प्रायः कमी करता है, एवं धन संग्रह बड़ी कठिनाई से होती है। अन्यथा ज्यादातर धन की कमी बनी रहती है। कला एवं दर्शन के क्षेत्र में इनका रुझान होता है, ऐसे जातक कई क्षेत्रों को अपना कर्म–क्षेत्र बना सकते हैं।

इन्हें ऐसा रोजगार पसन्द आयेगा जिसमें यात्रा के अवसर मिलते रहें। दूर–दूर की यात्रा करना, सैर सपाटा इनके लिए रुचि पूर्ण रहेगा। कई एक यात्रओं से व्यावसायिक उन्नति प्राप्त करते हैं, तथा दूर के व्यक्तियों से इनका अच्छा

संबंध होता है, जो रोजगार व्यापार में इन्हें लाभ प्रदान करते हैं। पुराने रीति–रिवाजों पर इनकी आस्था कम होती है, तथा परिवर्तन करते रहना इनका स्वभाव होता है। इनका कार्यक्षेत्र यदा–कदा परिवर्तित होता रहता है।

भाग्यांक 8

भाग्यांक आठ का स्वामी शनि ग्रह को माना गया है। शनि ग्रह अति धीमा होने से तीस वर्ष में एक राशिपथ भ्रमण चक्र पूर्ण करता है। इसके प्रभाव से इनका भाग्योदय भी धीरे–धीरे होगा। ऐसे लोग भले ही, कितनी भी गरीबी में उत्पन्न हुए हों पर इनका भाग्य सीढ़ी दर सीढ़ी चढ़ता चला जाता है। इनके मार्ग में इस बीच रुकावटें भी आती हैं, जिन्हें ये धैर्य एवं श्रम से पार कर लेते हैं। आलस्य एवं निराशा इनके भाग्योदय की बाधाऐं होती हैं। इन पर विजय प्राप्त करना इनकी सबसे बड़ी उपलब्धि होती है।

कुछ जातक अपने कार्यक्षेत्र में काफी महत्वपूर्ण उपलब्धियों को प्राप्त करते हैं। इनकी सभी सफलताएं विध्नों से युक्त होते हुये भी, ये आसानी से अपनी तरक्की के रास्ते स्वयं निर्मित कर लेते हैं। इनका भाग्योदय 35 वर्ष की अवस्था के पश्चात ही होता है। बचपन की अपेक्षा मध्य तथा अन्तिम अवस्था इनके भाग्योदय में विशेष सहायक होती है। अन्तिम अवस्था इनकी अच्छी होती है एवं धन सम्पत्ति का पूर्ण सुख प्राप्त करते हैं।

भाग्यांक 9

भाग्यांक 9 का स्वामी मंगल ग्रह को माना गया है। यह ग्रहमण्डल का सेनापति ग्रह है। यह रक्त वर्ण का क्षत्रियोचित गुणों से युक्त है, इसके प्रभाव से मूलांक 9 के जातक स्वतंत्र रोजगार–व्यापार के क्षेत्र में सफलता प्राप्त करते हैं। ऐसे जातक साहसिक कार्यों से अपना भाग्योदय करते हैं, तथा ऐसे क्षेत्र में अपना रोजगार प्राप्त करते हैं, जहाँ इनकी हुकूमत चलती रहे। मुखिया, नायक, अगुआ के रूप में कार्य करना इनको हमेशा अच्छा लगता है।

रोजगार के क्षेत्र में अपनी स्वतंत्र विचारधारा के द्वारा महत्वपूर्ण उन्नति को प्राप्त करते हैं तथा यांत्रिक कार्यों में इनकी रुचि होती है। एकाधिकार पूर्ण कार्य क्षेत्र इनकी प्रथम पसन्द होती है, और हमेशा इनकी कोशिश होती है, कि कार्यक्षेत्र में जीवन यापन हेतु जो कार्य चुना है, उसमें किसी का भी हस्तक्षेप न हो। बिना कारण का हस्तक्षेप ये बर्दास्त नहीं कर पाते। यांत्रिकी कार्य, चिकित्सा, सेना, संगठन, सामाजिक क्रिया कलापों में, ये गहरी रुचि प्रदर्शित करते हैं।

भाग्यांक के लिए शुभाशुभ विचार

जन्म तारीख के आधार पर मूंलाक एवं जन्म तारीख माह और ईस्वी सन् इन सभी अंको को जोड़कर जो अंक प्राप्त होते हैं **उन्हें भाग्यांक कहते है।** इस प्रकार अंक विचार से फलादेश किया जाता है। परन्तु जिस किसी व्यक्ति की जन्मतारीख अर्थात जन्मविवरण ज्ञात नहीं है अंक विज्ञान के विद्वान उस व्यक्ति के प्रसिद्ध नाम अर्थात् प्रचलित नाम के आधार पर वैदिक एवं पाश्चात्य पद्धति के अनुसार अंक विचार करते आए हैं इस अंक विचार का मानव जीवन से गहरा सम्बन्ध माना जाता है।

भाग्यांक	शुभवार	शुभ मास	शुभ तारीख
1.	रवि.गुरु.	जन.मार्च,मई,जु.,अक्टूवर	1,10,19,28
2.	सोम.,बुध.	फर.,अप्रैल,अगस्त,नवम्वर	2,11,20,29
3.	मं.,शुक्र.	मार्च,मई,जू.जुलाई,सित.,दिस.	3,6,9,12,15,18,21,24,27,30
4.	बुध.सोम.	अप्रैल,फर.,और अग.	2,4,8,13,16,20,22,26,31
5.	बृह.,शनि.	मई,जन.,मार्च और जु.	5,10,14,19,23,25,28
6.	शुक्र.,मं.	जून,सित.	6,9,15,18,24
7.	शनि.,बृह.	जु.,जन.मार्च और मई	7,14,16,25,28
8.	सोम.,बुध.	अग.,फर. और अप्रैल	4,8,16,17,26
9.	मं.,शुक्र	सित.मार्च और जून	9,15,18,24,27

सावधानी एवं उपाय

जन्मांक व मूलांक

किसी भी माह में जिस तारीख को जातक का जन्म होता है जैसे 23 तो उस तारीख को जन्मांक कहते हैं। जब हम (2+3=5) उसको संयुक्त करते हैं, तो वह मूलांक बन जाता है। अतः अंक दो का स्वामी चंद्र, अंक 3 का स्वामी गुरु, अंक पांच का स्वामी बुध ऐसे तीन ग्रह जातक को प्रभावित करते हैं, अतः सूर्य, चन्द्र और बुध तीनों ग्रह उपर्युक्त तारीख में जन्म लेने वाले जातक को प्रभावित करेंगे परन्तु मूलांक स्वामी अधिक प्रभावित करता है।

उदाहरण

जन्म तारीख = 21= 2+1 स्वामी चन्द्र–सूर्य

मूलांक = 2+1=3=स्वामी गुरु

कुछ जातक के मूलांक उनके लिए अशुभ होते हैं या पूर्ण शुभ नहीं होते। अतः जिन जातकों का मूलांक शुभ नहीं होता उनके लिए यहां पर अनेक प्रकार के उपाय एवं सावधानियां बताये जा रहे हैं, जिनको करने से जातक को अवश्य लाभ होता है। इन उपायों में अनेक उपाय सरल एवं सटीक हैं जिन्हें हर व्यक्ति कर सकता है।

4. Result of Radical Number

मूलांक 1

पाश्चात्य मतानुसार दिनांक 21 मार्च से 20 अप्रैल तथा 24 जुलाई से 23 अगस्त एवं भारतीय मतानुसार दिनांक 13 अप्रैल से 12 मई और 17 अगस्त से 16 सितंबर तक गोचर में सूर्य मेष तथा सिंह राशि में रहता है। मेष में सूर्य उच्च का तथा सिंह में अपने घर में होता है। इस समय सूर्य की किरणें प्रखर एवं तेजस्वी होने से मूलांक एक के लिए यह समय सभी दृष्टियों से उन्नतिशील तथा कार्यों में प्रगति देने वाला होता है। इस समय में किये गये कार्य सफल होते हैं।

अक्तूबर, नवम्बर तथा दिसंबर में सूर्य की किरणें तेजस्वी न होने से प्रभावहीन समय रहता है। इस काल में स्वास्थ्य का ध्यान रखना हितकर रहेगा।

रविवार एवं सोमवार के दिन ऐसे जातक के लिये विशेष फलदायक होता है। यदि इनकी अनुकूल तारीखों में ही, किसी तारीख को रविवार या सोमवार पड़ रहा हो तो, ऐसा दिन जातक के लिए अधिक अनुकूल और श्रेष्ठ फलदायक होता है।

ये ऐसे जातकों से मित्रता या साझेदारी स्थापित करें जिनका जन्म 1, 10, 19, और 28 तारीखों को अथवा दिनांक 13 अप्रैल से 12 मई और 17 अगस्त से 16 सितंबर के मध्य हुआ हो। ऐसे जातक मूलांक एक को अनुकूल, सहयोगी, एवं विश्वासपात्र सिद्ध होंगे। ऐसे जातकों से इनकी मित्रता स्थायी एवं दीर्घ रहेगी तथा रोजगार, व्यवसाय, साझेदारी आदि में सहायक होंगे।

इनके लिए अधिक अनुकूल रंग पीला या ताम्रवर्ण है। पीला भी पूर्णतः पीला नहीं, अपितु सुनहरा पीला होना चाहिए। यथासंभव इसी रंग का उपयोग ड्राइंग रूम के पर्दे, चादर, तकिये, बिछावन आदि में लें। हो सके तो अपने पास इस रंग का रुमाल हर समय रखें। स्वास्थ्य की क्षीणता के समय भी इसी रंग के वस्त्र पहनेंगे तो स्वास्थ्य शीघ्र ठीक हो जाएगा।

लिए हमेशा शुभ रहेगी। अतः अपने शहर के पूर्वी क्षेत्र में, या भवन के पूर्वी क्षेत्र में निवास करें। इनके लिए पूर्वी क्षेत्र के व्यक्ति, पूर्वी देशों, पूर्वी स्थानों में नौकरी, रोजगार, व्यापार करना शुभ रहेगा। पहनने के वस्त्रों का चुनाव करते समय भूरा, पीला, सुनहरे, रंगों का समावेश होने से व्यक्तित्व में निखार आएगा। भवन, वाहन, दीवारें, पर्दे, फर्नीचर इत्यादि का रंग भी यदि पीला, सुनहरा या भूरा रखेंगे तो पारिवारिक वातावरण में खुशहाली बढ़ेगी।

यदि ऐसे जातक वाहन आदि खरीदते हैं तो, उसके पंजीकरण नंबर अपने मूलांक तथा मूलांक के मित्र अंक से मेल रखने वाले अंकों को लेना हितकर रहेगा।

मूलांक 1 के लिए अंक 1,4,8, अच्छे रहेंगे। इसलिए इनके वाहन पंजीकरण क्रमांक का योग 1, 4 या 8 होगा, तो अधिक अच्छा रहेगा, जैसे पंजीकरण क्रमांक 5230 = 1 इत्यादि। यात्रा के वाहनों के अंक भी यदि 1, 4, या 8 हैं तो यात्रा लाभप्रद रहेगी। यदि होटल में कमरा बुक करवाते हैं तो उसका नंबर 100 = 1 इत्यादि होगा, तब वह कमरा हितकर रहेगा।

ऐसे जातक को हृदय संबंधी कोई कष्ट अधिक उम्र पर हो सकता है। रक्त संबंधी बीमारियां भी यदा – कदा हो सकती हैं। वृद्धावस्था में रक्तचाप, 'दिल का दौरा' तथा नेत्र पीड़ा जैसे रोगों की संभावना रहेगी, जिसे सूर्योपासना द्वारा दूर कर सकते हैं। जब भी जीवन में रोग की स्थिति आएगी तब डिप्थीरिया, अपच, रक्त दोष, गठिया, रक्तचाप, स्नायविक दुर्बलता, नेत्र पीड़ा आदि रोग होंगे। उक्त रोगों से इन्हें हर समय सावधान रहना चाहिए। रोग, कष्ट तथा विपत्ति के समय सूर्योपासना पर बल देना चाहिए तथा रविवार के दिन नमक रहित भोजन करना चाहिए।

ऐसे जातक के लिए हुकूमत, प्रशासक, नेतृत्व, अधिकारी, आभूषण, जौहरी का कार्य, स्वर्णकारिता, विद्युत की वस्तुएं, चिकित्सा, मेडिकलस्टोर, अन्न का व्यवसाय, भूप्रबंध, मुख्यावास या उच्च स्थान, मकानों की ठेकेदारी, राजनीतिक कार्य, शतरंज के खेल, अग्निसेवा कार्य, सैन्य विभाग, राजदूत, प्रधान पद, जलप्रदाय विभाग, श्रमशील कार्य आदि के क्षेत्र में रोजगार–व्यापार करना

लाभप्रद रहेगा।

इन्हें रविवार का व्रत रखना लाभप्रद एवं रोग मुक्तिकारक रहेगा। भोजन के साथ नमक का सेवन न करने से विशेष फलदायक रहता है। व्रत के दिन भोजन करने से पूर्व प्रातः स्नान के पश्चात सुगंधित अगरबत्ती जला कर 'आदित्य हृदय स्तोत्र' का पाठ करें। तब इन्हें स्वयं अनुभव होगा कि विभिन्न बाधाओं से मुक्त हो रहे हैं एवं बीमारियां इनसे दूर रहेंगी। यह व्रत एक वर्ष, तीस या बारह रविवारों को करें। व्रत के दिन लाल वस्त्र धारण करें, सूर्य गायत्री मंत्र से सूर्य को अर्घ्य दें। तांबे के अर्घ्य पात्र में जल भरें, जल में लाल चंदन, रोली, चावल, लाल फूल एवं दूब डाल कर, सूर्य भगवान का दर्शन करते हुए अर्घ्य प्रदान करें। पश्चात् सूर्य के मंत्र का यथाशक्ति, सूर्य मणि माला पर जप करें।

माणिक इनका प्रधान रत्न है माणिक के अभाव में गारनेट, तामड़ा, लाल मणि, सूर्यमणि या लाल हकीक शुक्ल पक्ष में रविवार के दिन, सूर्य के होरा में, सोने की अंगूठी में, लगभग पांच रत्ती का, दायें हाथ की अनामिका उंगली में, त्वचा को स्पर्श करता हुआ धारण करना शुभ है।

ऐसे जातक को सूर्य के शुभ प्रभावों की वृद्धि हेतु, सूर्य गायत्री मंत्र प्रातः स्नान के बाद ग्यारह, इक्कीस या एक सौ आठ बार जप करना लाभप्रद रहेगा।

सूर्य गायत्री मंत्र –

आदित्याय विद्महे प्रभाकराय धीमहि तन्नः सूर्यः प्रचोदयात्।।

प्रातःकाल उठ कर सूर्य का ध्यान करें, मन में सूर्य को प्रतिष्ठित करें तत्पश्चात् निम्न मंत्र का पाठ करें।

जपा कुसुम संकाशं काश्यपेयं महाद्युतिम्।

तमोऽरिं सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्।।

अशुभ सूर्य को अनुकूल बनाने हेतु सूर्य के मंत्र का जप करना चाहिए। नित्य कम से कम एक माला (एक सौ आठ) जप करने से वांछित लाभ होता हैं। पूरा

अनुष्ठान साठ माला है।

ऊँ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः।। जप संख्या 6000।।

रविवार के दिन बिल्वपत्र की एक इंच लंबी जड़ लाकर, गुलाबी धागे में लपेट कर, दाहिने हाथ में बांधें अथवा स्वर्ण या तांबे के ताबीज में भर कर गले में धारण करें। इससे सूर्य ग्रह का अशुभ प्रभाव कम होगा तथा शुभ प्रभाव में वृद्धि होगी।

प्रत्येक रविवार को एक बाल्टी या बर्तन में कनेर, दुपहरिया, नागरमोथा, देवदारु, मैनसिल, केसर, इलायची, पद्माख, महुआ के फूल, सुगंध बाला आदि औषधियों का चूर्ण कर, पानी में डाल कर स्नान करना सभी प्रकार के रोगों से मुक्ति दायक रहेगा। हर्बल स्नान से त्वचा की कांति में वृद्धि होगी तथा अशुभ सूर्य का प्रभाव क्षीण होकर तेज एवं वांछित लाभ प्रदान करेगा। सभी ग्रहों की शांति के लिए कूठ्ठ, खिल्ला, कांगनी, सरसों, देवदारु, हल्दी, सर्वौषधि तथा लोध, इन सबको मिलाकर चूर्ण कर, किसी तीर्थ के पानी में मिला कर, भगवान का स्मरण करते हुए स्नान करें। ऐसे स्नान से ग्रहों की शांति और सुख–समृद्धि प्राप्त होगी।

सूर्य को अनुकूल बनाए रखने हेतु सूर्य यंत्र को भोजपत्र पर अष्टगंध (केशर, कपूर, अगर, तगर, कस्तूरी, अंबर, गोरोचन एवं रक्त चंदन या श्वेत चंदन) से लिख कर सोने या तांबे के ताबीज में, धूप–दीप से पूजन कर, सोने की जंजीर या लाल धागे में, रविवार को शुक्ल पक्ष में प्रातःकाल सूर्य की होरा में धारण करने से लाभ होता है।

मूलांक 2

सूर्य 16 जुलाई से 16 अगस्त तक कर्क राशि में रहता है। कर्क राशि चंद्रमा की स्वयं की राशि है। 13 मई से 14 जून तक सूर्य वृष राशि में होता है, जो कि चंद्रमा की उच्च राशि है। अतः यह समय मूलांक दो के लिए कोई भी नया कार्य या महत्वपूर्ण कार्य करने के लिए अधिक उपयुक्त रहता है।

दिनांक 17 अगस्त से 16 सितंबर तक सूर्य सिंह राशि में तथा 14 नवंबर से 14 दिसंबर तक वृश्चिक राशि में रहता है, यह चंद्रमा की नीच राशि होने से इस समय कोई भी नया कार्य करने के लिए उपयुक्त नहीं कहा जा सकता।

कोई भी नया या शुभ कार्य करने हेतु सोमवार, शुक्रवार तथा रविवार का दिन अच्छा सिद्ध हो सकता है। यदि इन्ही वारों में इनके मूलांक की तारीख भी हो, तो ऐसा दिन सभी कार्यों के लिये अच्छा रहेगा।

किसी से भी मित्रता करते समय यह देखना इनके हित में रहेगा कि यदि उसका जन्म अंग्रेजी माह की 2, 7, 9, 11, 16, 18, 20, 25, 27, एवं 29 तारीख को हुआ है अथवा 13 मई से 14 जून एवं 16 जुलाई से 16 अगस्त के मध्य हुआ है तो ऐसे जातक इनके लिए हितकारी सिद्ध हो सकते हैं।

इन्हें अपने वस्त्रों का चुनाव करते समय सफेद, काफूरी, हरा एवं अंगूरी रंगों का उपयोग अधिक करने से वांछित लाभ प्राप्त होगा। हो सके तो अपने कमरे के पर्दे, चादर, तकिया इत्यादि में इन रंगो का उपयोग करें। इन रंगों का रुमाल हमेशा अपने पास रखना इनके लिए विशेष लाभप्रद रहेगा।

इनके लिए उत्तर–पश्चिम में वायव्य कोण में रहना शुभ रहेगा। जिस क्षेत्र में ये रहते हों, यदि वह वायव्य कोण में स्थित होगा तो अधिक अनुकूल रहेगा। मकान के नंबर का योग यदि 2, 7, या 9 आता हो तो ऐसा भवन इनके लिए अधिक सुविधाजनक रहेगा।

इन्हें वाहन के पंजीकरण हेतु मूलांक तथा मूलांक के मित्र अंक से मेल रखने वाले अंकों को लेना अच्छा रहेगा। इनका मूलांक 2 होने से इन्हें शुभ अंक 2,7,9 रहेंगे। वाहन इत्यादि के पंजीकरण क्रमांक के शुभ अंक भी रहेंगे, जैसे

पंजीकरण क्रमांक 5231=2 इत्यादि। यात्रा के वाहनों में भी इन अंकों का उपयोग करें, जिसके फलस्वरूप यात्रा सुखमय रहेगी। अगर होटल आदि में कमरा इत्यादि लेते हैं तो उसके लिए यही नंबर 2,7,9 इत्यादि लें, जैसे कमरा 101 = 2 वह कमरा अच्छा साबित होगा।

जब भी जीवन में रोग की स्थिति आएगी तब इन्हें कमजोरी, क्षीणता, उद्वेग, मस्तक पीड़ा, छोटी–छोटी दुर्घटना, हृदय रोग, संवेदनशीलता, भावुकता, स्नायु दुर्बलता, कब्ज, आंत रोग, मूत्र रोग, गैस रोग इत्यादि होंगे। रोग होने या अशुभ समय आने, कष्ट तथा विपत्ति के समय इन्हें शिव उपासना पर बल देना चाहिए।

इनके लिए रोजगार–व्यापार हेतु ये क्षेत्र अनुकूल रहेंगे– जैसे द्रव्य पदार्थ, तैलीय कार्य, समुद्र यात्रा, मुख्यावास या उच्च स्थान, पशु व्यवसाय, चीनी मिल, अन्न का व्यवसाय, तैराकी, रसपूर्ण पदार्थ, दूध, दही, घृत, कागज, जल, कृषि, चीनी के व्यवसाय, औषधि विक्रेता, भ्रमण कार्य, एजेंन्ट, प्रतिनिधित्व, संपादन, लेखन, संगीत, अभिनय, नृत्य, भूप्रबंध, मकानों की ठेकेदारी, चिकित्सा, मोती, हार, मणि, रत्न, क्रय विक्रय, पत्थर व भूगर्भ इत्यादि।

पांच रत्ती मोती इनके लिए प्रमुख रत्न है। यदि मोती न धारण कर सकें तो मूनस्टोन, चंद्रमणि, दूधिया हकीक, सोमवार की सुबह चन्द्र की होरा दायें हाथ की कनिष्ठा अंगुलि में, चांदी की अंगूठी में जड़वा कर लाभ के चौघड़िया मुहूर्त्त में धारण करें।

चंद्रोपासना करें अथवा भगवान शिव की आराधना करें भगवान शिव के पंचाक्षरी मंत्र ओम् नमः शिवाय का नित्य जप करें। प्रति सोमवार को कम से कम इक्कीस या एक सौ आठ बेल पत्र भगवान शिव को अर्पित करेंगे तो इस क्रिया को करने पर विभिन्न रोगों से मुक्त होंगे। यदि यह संभव न हो सके तो भगवान शिव के चित्र का नित्य प्रातः दर्शन करें।

चंद्र के शुभ प्रभावों की वृद्धि हेतु चंद्र गायत्री मंत्र का प्रातः स्नान के बाद ग्यारह, इक्कीस या एक सौ आठ बार जप करना लाभप्रद रहेगा।

चंद्र गायत्री मंत्र –

अमृतांगाय विद्महे कलारूपाय धीमहि तन्नः सोमः प्रचोदयात्।।

प्रातःकाल उठ कर चंद्र का ध्यान करें, मन में चंद्र की मूर्ति प्रतिष्ठित करें तत्पश्चात् निम्न मंत्र का पाठ करें।

दधि शंख तुषाराभं क्षीरोदार्णव संभवम्।
नमामि शशिनं भक्त्या शम्भोमुकुटभूषणम्।।

अशुभ चंद्र को अनुकूल बनाने हेतु चंद्र के मंत्र का जप करना चाहिए। नित्य कम से कम एक माला (एक सौ आठ) जप करने से वांछित लाभ होता है। पूरा अनुष्ठान एक सौ तीस माला का है।

ऊँ श्राँ श्रीं श्रौं सः चंद्रमसे नमः।। जप संख्या 13000।।

सोमवार के दिन एक इंच लंबी खिरनी की जड़ ला कर, सफेद ऊन में लपेट कर, गले या दाहिने हाथ में बांधे अथवा स्वर्ण या तांबे की ताबीज में भर कर गले में धारण करें। इससे चंद्र ग्रह के अशुभ प्रभाव कम होंगे तथा शुभ प्रभावों में वृद्धि होगी।

इन्हें प्रत्येक सोमवार को एक बाल्टी या बर्तन में पंच गव्य–चांदी, मोती, शंख, सीप और कुमुद आदि औषधियों का चूर्ण कर, पानी में डाल कर स्नान करना सभी प्रकार के रोगों से मुक्तिदायक रहेगा। हर्बल स्नान से इनकी त्वचा की कांति में वृद्धि होगी। अशुभ चंद्र का प्रभाव भी क्षीण हो कर, इन्हें तेज एवं वांछित लाभ प्रदान करेगा।

चंद्र की शांति हेतु शिव भक्त को चंद्र के पदार्थ, चावल, कपूर, सफेद वस्त्र, चांदी, शंख, वंशपात्र, सफेद चंदन, श्वेत पुष्प, चीनी, वृषभ, दधि, मोती आदि का दान करना लाभप्रद रहेगा।

चंद्र को अनुकूल बनाए रखने हेतु चंद्र यंत्र को भोजपत्र पर अष्टगंध (केशर, कपूर, अगर, तगर, कस्तूरी, अंबर, गोरोचन एवं रक्त चंदन या श्वेत चंदन) से लिख कर, सोने या चांदी के ताबीज में, धूप–दीप से पूजन कर, चांदी की जंजीर या लाल धागे में, शुक्ल पक्ष सोमवार को प्रातःकाल धारण करें।

मूलांक 3

पाश्चात्य मतानुसार सूर्य 21 नवंबर से 20 दिसंबर तक धनु राशि में एवं 19 फरवरी से 20 मार्च तक मीन राशि में तथा 21 जून से 20 जुलाई तक कर्क राशि में रहता है। भारतीय मत से यह 15 दिसंबर से 13 जनवरी तक धनु में एवं 14 मार्च से 12 अप्रैल तक मीन राशि में तथा 16 जुलाई से 16 अगस्त तक कर्क राशि में रहता है। धनु एवं मीन राशियां गुरु का स्वस्थान अथवा अपना घर है। कर्क राशि गुरु का उच्च स्थान है। अतः उपर्युक्त समय में मूलांक तीन के लिए सबसे अधिक प्रभावकारी एवं लाभप्रद समय रहता है। इस समय में कोई भी नया कार्य, महत्वपूर्ण कार्य इत्यादि करना इनके लिए विशेष योगकारक रहेगा।

मूलांक 3 के लिए माह जनवरी एवं जुलाई किसी भी नये कार्य को प्रारंभ करने हेतु अनुकूल नहीं रहेंगे। इन मासों में कार्यों में रुकावटें आएंगी तथा स्वास्थ्य में क्षीणता उत्पन्न होगी, आलस्य बढ़ेगा, व्यर्थ की परेशानियां तथा भाग दौड़ बढेगी। अतः इस समय ध्यान रखना उचित होगा।

गुरुवार, शुक्रवार, मंगलवार के दिन मूलांक 3 के लिए विशेष शुभ फलदायक रहेंगे। यदि अनुकूल तारीखों में किसी तारीख को गुरुवार, शुक्रवार, मंगलवार पड़ रहा हो तो ऐसा दिन मूलांक 3 के लिए अधिक अनुकूल तथा श्रेष्ठ फलदायक होगा।

किसी भी अंग्रेजी माह की 3, 6, 9, 12, 15, 18, 21, 24, 27 एवं 30 तारीखें किसी भी नये कार्य को प्रारंभ करने, महत्वपूर्ण या विशिष्ट व्यक्तियों से मिलने, पत्र इत्यादि लिखने हेतु शुभ रहेंगी। अतः उपर्युक्त तारीखों में कोई भी महत्वपूर्ण कार्य शीघ्र सफलता देगा।

इन्हें किसी भी अंग्रेजी माह की 4, 8, 13, 17, 22, 26 एवं 31 तारीखें प्रतिकूल हो सकती हैं। अतः कोई भी नया कार्य, महत्वपूर्ण कार्य, उपर्युक्त तारीखों में संपन्न करना हानिकारक है।

ये ऐसे जातकों से मित्रता या साझेदारी स्थापित करें, जिनका जन्म 3, 6, 9, 12, 15, 18, 21, 24 27 एवं 30 तारीखों में, अथवा 15 दिसंबर से 13 जनवरी,

13 मार्च से 13 अप्रैल एवं 16 जुलाई से 16 अगस्त के बीच हुआ हो। ऐसे जातक मूलांक 3 के लिए अनुकूल सहयोगी तथा विश्वासपात्र सिद्ध होंगे। इस प्रकार के जातकों से स्थायी एवं दीर्घ सम्बन्ध होते हैं तथा वे रोजगार, व्यवसाय, साझेदारी आदि में सहायक रहेंगे।

ऐसे जातक को विवाह या प्रेम संबंध स्थापित करते समय यह देखना लाभप्रद रहेगा कि उस महिला या पुरुष का मूलांक 3,6 या 9 हो अथवा ऐसे जातक का जन्म किसी भी अंग्रेजी मास की 3, 6, 9, 12, 15, 18, 21, 24, 27 या 30 तारीख को हुआ हो। इन तारीखों के जातक विशेष फलदायी और अच्छा साथ निभाने वाले होंगे।

मूलांक 3 के लिए अनुकूल रंग हल्का गुलाबी, चमकीला गुलाबी है। पूरा गुलाबी नहीं, बल्कि हल्का गुलाबी होना चाहिए। अतः ड्रॉइंग रूम के पर्दे, चादर, तकिये, बिछावन आदि इसी रंग के लें। हो सके तो इस रंग का रुमाल हर समय रखें। स्वास्थ्य की क्षीणता के समय हो सके तो इसी रंग के वस्त्र पहनें, जिससे स्वास्थ्य ठीक रहेगा।

इन्हें ऐसे मकान में रहना शुभ रहेगा जिसका अंक 3 हो। ईशान कोण दिशा इनके लिए हमेशा शुभ होगा। अतः शहर में ईशान कोण दिशा में अपना निवास बना सकते हैं। इस दिशा में रोजगार–व्यापार संबंधी कार्य करना शुभ रहेगा। पहनने के वस्त्रों का चुनाव करते समय भूरा, पीला, सुनहरी रंगों के होने से व्यक्तित्व में निखार आएगा और यदि दीवारें, पर्दे, फर्नीचर का रंग भी ऐसा ही रखें तो पारिवारिक वातावरण में खुशहाली आएगी।

यात्रा के दौरान कमरा इत्यादि बुक करवाते हैं, तो कमरे का नंबर मूलांक या मूलांक के मित्र अंक से मेल करने वाले अंकों का हो। मूलांक 3 के मित्र अंक 6, 9 हैं। अतः कमरे का नंबर 102= 3 इत्यादि होना चाहिए और यदि वाहन आदि का पंजीकरण करवाते हैं, तब उसके लिए भी शुभ अंक 5232 =3 रहेंगे। यही अंक यात्रा के वाहन के रहेंगे, तो यात्रा सुखमय कहलाएगी।

जब भी जीवन में रोग की स्थिति आएगी तब आपको चर्म रोग, दाद, खाज, खुजली, प्रमेह, ज़हरवाद, पित्त प्रकोप, शूल रोग, स्नायु निर्बलता, मानसिक

उद्वेग, गुप्तेंद्रिय शैथिल्य, भोग के प्रति अरुचि, रक्त दोष जैसे रोग होंगे। रोग, अशुभता, कष्ट और विपत्ति के समय विष्णु उपासना, पूर्णिमा व्रत, सत्यनारायण व्रत कथा श्रवण करना चाहिए।

वस्त्र उद्योग, ढाबे, रेस्टोरेंट, होटल, पान की दुकान, अध्यापन, उपदेशक, व्याख्याता, प्राध्यापक, राजदूत, मंत्री, कानून सलाहकार, वकील, न्यायाधीश, सचिव, दूत कार्य, क्लर्क, चिकित्सा कार्य, बैंकिंग के कार्य, दलाल, आढ़त, विज्ञापनकर्ता, अभिनेता, सेल्समैंन, टाइपिस्ट, स्टेनो, जल जहाज में कार्यकर्ता, पुलिस विभाग, दर्शनशास्त्री, प्रबंधक एवं जलीय व्यापार। आपको लाभ देंगे।

ऐसे जातक बृहस्पतिवार को बृहस्पति अरिष्ट दोष निवारण हेतु व्रत करें। बृहस्पतिवार को पीले वस्त्र धारण कर व्रत करें। पीले पदार्थों का दान करें यह व्रत तीन वर्ष, एक वर्ष या सोलह बृहस्पतिवार को करें। यथाशक्ति पुत्रजीवी की माला पर गुरू मंत्र का जप करें।

पुखराज मूलांक 3 का मुख्य रत्न है। यदि पुखराज न मिले तब सुनेला, टाईगर आई, पीला हकीक धारण कर सकते हैं। इसे सोने की अंगूठी में चार से पांच रत्ती का बनवा कर दायें हाथ की तर्जनी उंगली को स्पर्श करता हुआ धारण करें।

बृहस्पति ग्रह की उपासना करें अथवा विष्णु भगवान की आराधना करें। भगवान विष्णु के द्वादशाक्षरी मंत्र **"ओम् नमो भगवते वासुदेवाय"** का नित्य जप करें। प्रतिदिन कम से कम एक सौ आठ मंत्र का जप करें तथा पूर्णमासी के दिन सत्यनारायण कथा का श्रवण करेंगे तो इस क्रिया को करने पर विभिन्न रोगों और समस्याओं से मुक्त होंगे। यदि यह संभव न हो सके तो भगवान विष्णु के चित्र का नित्य प्रातः दर्शन कर करें।

गुरु के शुभ प्रभावों की वृद्धि हेतु गुरु गायत्री मंत्र का प्रातः स्नान के बाद ग्यारह, इक्कीस या एक सौ आठ बार जप करना लाभप्रद रहेगा।

गुरु गायत्री मंत्र –

ऊँ अंगिरसाय विद्महे दिव्यदेहाय धीमहि तन्नो जीवः प्रचोदयात्।।

प्रातःकाल उठ कर गुरु का ध्यान करें, मन में गुरु को प्रतिष्ठित करें और

तत्पश्चात् निम्न मंत्र का पाठ करें।

देवानां च ऋषीणां च गुरुं कांचनसन्निभम्।
बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम्।।

अशुभ गुरु को अनुकूल बनाने हेतु गुरु के मंत्र का जप करना चाहिए। नित्य कम से कम एक माला एक सौ आठ जप करने से वांछित लाभ मिलता है। पूरा अनुष्ठान एक सौ आठ माला का है।

ॐ ग्राँ ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः।। जप संख्या 10000।।

गुरुवार के दिन एक इंच लंबी नारंगी या केले की जड़ ला कर, पीले धागे में लपेट कर, दाहिने हाथ में बांधे अथवा स्वर्ण या पीतल के ताबीज में भर कर गले में धारण करें। इससे गुरु ग्रह के अशुभ प्रभाव कम होंगे तथा शुभ प्रभावों में वृद्धि होगी।

प्रत्येक गुरुवार को एक बाल्टी या बर्तन में मुलेठी, सफेद सरसों तथा मालती के फूल आदि औषधियों का चूर्ण पानी में डाल कर स्नान करना सभी प्रकार के रोगों से मुक्तिदायक रहेगा। हर्बल स्नान से जातक की त्वचा की कांति में वृद्धि होगी तथा अशुभ गुरु के प्रभाव क्षीण हो कर इनके तेज एवं प्रभाव में वांछित वृद्धि होगी। सभी ग्रहों की शांति के लिए कूठ्ठ, खिल्ला, कांगनी, सरसों, देवदारू, हल्दी, सर्वौषधि तथा लोध इन सबको मिला कर, चूर्ण कर, किसी तीर्थ के पानी में मिला कर भगवान का स्मरण करते हुए स्नान करें तो ग्रहों की शांति होगी और सुख–समृद्धि प्राप्त होगी।

गुरू की शांति के लिए सात्विक ब्राह्मण को गुरु का पदार्थ, पीला वस्त्र, सोना, हल्दी, घृत, पीले पुष्प, पीला अन्न, पुखराज, अश्व, पुस्तक, मधु, लवण, शर्करा, भूमि, छत्र आदि का दान करना लाभप्रद रहेगा।

गुरु को अनुकूल बनाये रखने हेतु गुरु यंत्र को भोज पत्र पर अष्ट गंध (केशर, कपूर, अगर, तगर, कस्तूरी, अंबर, गोरोचन एवं रक्त चंदन या श्वेत चंदन) से लिख कर सोने या तांबे के ताबीज में, धूप–दीप से पूजन कर, सोने की जंजीर या पीले धागे में गुरुवार को शुक्ल पक्ष में प्रातःकाल गुरु की होरा में धारण करें।

मूलांक 4

दिनांक 21 जून से 31 अगस्त तक, पाश्चात्य मतानुसार, सूर्य के कर्क एवं सिंह राशि में रहने पर तथा भारतीय मत से 16 जुलाई से 16 सितंबर तक कर्क एवं सिंह राशि में सूर्य के रहने पर हर्षल या राहु की स्थिति प्रबल मानी गयी है। इस समय जल एवं अग्नि तत्व प्रबल रहते हैं, जो हर्षल या राहु के गुण हैं। अतः उपर्युक्त समय मूलांक 4 के लिये कोई भी नया या महत्वपूर्ण कार्य करने हेतु अधिक उपयुक्त रहता है।

माह अक्तूवर, नवंबर एवं दिसंबर किसी भी नये कार्य को प्रारंभ करने हेतु अनुकूल नहीं रहेंगे। इन मासों में कार्यों में रुकावटें आएंगी तथा स्वास्थ्य में क्षीणता उत्पन्न होगी, आलस्य बढ़ेगा, व्यर्थ की परेशानियां तथा भाग–दौड़ बढ़ेगी। अतः इस समय में ध्यान रखना उचित रहेगा।

किसी भी माह का रविवार, सोमवार, शनिवार आपके लिए शुभ रहेंगे। यदि ऐसे जातक अपना कोई भी कार्य इन दिवसों में तथा अनुकूल तारीखों में प्रारंभ करें तो इनके लिए शुभ रहेगा।

किसी भी अंग्रेजी माह की 3, 5, 12, 14, 21, 23 एवं 30 दिनांक अशुभ फलदायी रहेंगे। अतः कोई भी रोजगार–व्यापार संबंधी या अन्य कार्य अथवा उच्चाधिकारी या किसी विशिष्ट अधिकारी से संबंध बनाने हेतु उपर्युक्त दिनांक मूलांक 4 के लिए ठीक नहीं रहेंगे।

ऐसे जातक अपनी मित्रता ऐसे लोगों से करें जिनका जन्म 1, 4, 8, 10, 13, 17, 19, 22, 26, 28 एवं 31 तारीखों को अथवा 16 जुलाई से 16 सितंबर के मध्य हुआ हो। इन तारीखों को जन्मे लोग इन्हें शुभ रहेंगे तथा ऐसे जातकों से लंबी मित्रता रहेगी एवं रोजगार–व्यवसाय में सहायक सिद्ध होंगे।

मूलांक 1, 4, या 8 प्रभावी महिलाएं अच्छी साथी सिद्ध हो सकती हैं। उपर्युक्त मूलांक वाली महिलाओं से सहज ही प्रेम संबंध स्थापित कर सकते हैं तथा उसमें सफल भी हो सकते हैं। जिनका जन्म किसी भी माह की 1, 4, 8, 10, 13, 17, 22, 26, 28 एवं 31 तारीख को हुआ हो तो वे स्त्रियां सहायक होंगी।

यदि स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता तो मूलांक 4 के जातक को चाहिए कि नीला, धूप–छांव, भूरा, मिश्रित रंग के कपड़े पहनें और हो सके तो इस रंग का रुमाल हर समय अपने पास रखें यह रंग अनुकूल रहेगा। अपने घर की दीवारों तथा पर्दों का चयन भी इन्हीं रंगों का करें। यह रंग शुभ फलदायक रहेगा।

यदि भवन, कॉम्पलेक्स का चुनाव करते समय दिशा का चुनाव करें तो नैर्ऋत्य कोण दिशा शुभ होगी। इनका शयन कक्ष नैर्ऋत्य दिशा में होने से रोजगार–व्यापार शुभ रहेगा तथा फर्नीचर आदि का रंग नीला, धूप छांव, भूरा मिश्रित होगा तो अधिक हितकर रहेगा।

मूलांक 4 के मित्र 1, 8 हैं। ये अंक आपके लिए सफलता के द्योतक हैं। यदि वाहन इत्यादि खरीदते हैं तो उसका पंजीकरण क्रमांक 1, 4, 8 अंकों में से रखें। उदाहरणार्थ वाहन क्रमांक 5233 =4 इत्यादि आपकी यात्रा का वाहन नंबर शुभ होने से यात्रा सफल रहेगी। अगर होटल में कमरा आदि बुक करवाते हैं तो उसका नंबर 103 = 4 लेना चाहिए।

जब भी जीवन में रोग की स्थिति आती है तो रक्तचाप या जुकाम, छूत के रोग शीघ्र हो जाते हैं। रोग होने पर, अशुभ समय आने पर, कष्ट और विपत्ति के समय आप गणेश चतुर्थी का व्रत करें तथा गजानन गणपति की उपासना करें।

दारु, स्पिरिट, तेल, मिट्टी का तेल, अर्क, इत्र, रेल विभाग, वायुसेना, जलदाय विभाग, कुलीगिरी, तकनीशियन, रंगसाज, अभियांत्रिकी, नक्शानवीस, दर्जी, बढ़ई का कार्य, डिजाइन, छापे का कार्य, टेलीफोन ऑपरेटर, स्टेनो, टाइपिस्ट, शिल्पकार, पत्रकार, संग्रहकर्ता, विद्युत कार्य, वक्ता, उपदेशक, राज्य कर्मचारी, खनिज मजदूर, ठेकेदार, मोटर चालक आदि का व्यापार मूलांक 4 के लिए शुभ होगा।

अरिष्ट दोष निवारण हेतु शनिवार का व्रत करें। शनिवार को काले, नीले वस्त्र धारण कर इक्कावन या उन्नीस शनिवारों को व्रत करें। शरीर में तेल मालिश, तैल दान तथा पीपल के वृक्ष की पूजा करें। शनि मंत्र का यथाशक्ति रुद्राक्ष माला पर जप करें।

चांदी की अंगूठी में सात से ग्यारह रत्ती का गोमेद बनवा कर शनिवार के दिन धारण करें। गोमेद न होने पर कत्थई या काला हकीक भी पहन सकते हैं। इसे आप शुक्ल पक्ष में शनिवार के दिन, दायें हाथ की मध्यमा उंगली में, त्वचा को स्पर्श करता हुआ धारण करें।

राहु ग्रह की उपासना करें अथवा गणेश भगवान की आराधना करें। भगवान गणेश के अठ्ठाईशाक्षरी मंत्र '**ओम् श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर वरद सर्व जनं मे वशमानय स्वाहा**' का नित्य जप करें। प्रतिदिन कम से कम एक सौ आठ मंत्र का जप करें तथा चतुर्थी के दिन व्रत करें एवं भगवान गणेश को मोदक का भोग लगाएं। इस क्रिया को करने पर विभिन्न रोगों तथा समस्याओं से मुक्त होंगे। यदि ऐसा संभव न हो सके तो भगवान गणेश के चित्र का नित्य दर्शन कर करें।

राहु के शुभ प्रभावों की वृद्धि हेतु राहु गायत्री मंत्र का प्रातः स्नान के बाद ग्यारह, इक्कीस या एक सौ आठ बार जप करना लाभप्रद रहेगा।

राहु गायत्री मंत्र –

ऊँ शिरोरूपाय विद्महे अमृतेशाय धीमहि तन्नो राहुः प्रचोदयात्।।

प्रातःकाल उठ कर आप राहु का ध्यान करें, मन में राहु की मूर्ति प्रतिष्ठित करें तत्पश्चात् निम्न मंत्र का पाठ करें :

अर्धकायं महावीर्यं चंद्रादित्यविमर्दनम्।

सिंहिकागर्भसंभूतं तं राहुं प्रणमाम्यहम्।।

राहु को अनुकूल बनाने हेतु राहु के मंत्र का जप करना चाहिए। नित्य कम से कम एक माला जप करने से वांछित लाभ होता है। पूरा अनुष्ठान एक सौ अस्सी माला का है। मंत्र जप का प्रत्यक्ष फल स्वयं देख सकेंगे।

ऊँ भ्राँ भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः।। जप संख्या 18000।।

शनिवार के दिन एक इंच लंबी सफेद चंदन की जड़, नीले धागे में लपेट कर, दाहिने हाथ में बांधे या त्रिधातु अथवा लोहे के ताबीज में भर कर गले में धारण

करें। इससे हर्षल या राहु, के अशुभ प्रभाव कम होंगे तथा शुभ प्रभावों में वृद्धि होगी।

प्रत्येक शनिवार को एक बाल्टी या बर्तन में नागबेल, लोबान, तिल के पत्र, गडूची और तगर आदि औषधियों का चूर्ण कर, पानी में डाल कर स्नान करना सभी प्रकार के रोगों से मुक्तिदायक रहेगा। हर्बल स्नान से त्वचा की कांति में वृद्धि होगी तथा अशुभ राहु या हर्षल के प्रभाव क्षीण होकर आपके तेज एवं प्रभाव में वांछित लाभ देंगे। सभी ग्रहों की शांति के लिए कूठ्ठ, खिल्ला, कांगनी, सरसों, देवदारू, हल्दी, सर्वौषधि तथा लोध इन सबको चूर्ण कर, किसी तीर्थ के पानी में मिला कर, भगवान का स्मरण करते हुए, स्नान करें तो ग्रहों की शांति होगी और सुख–समृद्धि प्राप्त होगी।

राहु की शांति के लिए गंदे भिखारी को राहु के पदार्थ–अभ्रक, लौह, तिल, नीला वस्त्र, छाग, ताम्र पात्र, सप्त धान्य, उड़द, गोमेद, काले पुष्प, तेल, कंबल, घोड़ा, रबड़ आदि का दान करना लाभप्रद रहेगा।

राहु को अनुकूल बनाए रखने हेतु राहु यंत्र को भोज पत्र पर अष्टगंध (केशर, कपूर, अगर, तगर, कस्तूरी, अंबर, गोरोचन एवं रक्त चंदन या श्वेत चंदन) से लिख कर, सोने या तांबे के ताबीज में, धूप दीप से पूजन कर, सोने की जंजीर या पीले धागे में, शनिवार को शुक्ल पक्ष में शनि की होरा में धारण करें।

मूलांक 5

दिनांक 22 मई से 21 जून एवं 24 अगस्त से 23 सितंबर तक, पाश्चात्य मत से, मिथुन एवं कन्या राशि में रहता है तथा भारतीय मतानुसार 15 जून से 15 जुलाई तक एवं 17 सितंबर से 16 अक्तूबर तक सूर्य मिथुन तथा कन्या राशि में रहता है। मिथुन बुध की स्वराशि तथा कन्या उच्च राशि है। अतः उपर्युक्त समय मूलांक पांच के लिए कोई भी नया या महत्वपूर्ण कार्य करने के लिए अधिक उपयुक्त है।

माह मई, सितंबर एवं दिसंबर किसी भी नये कार्य को प्रारंभ करने हेतु अनुकूल नहीं रहेंगे। इन मासों में कार्यों में रुकावटें आएंगी तथा स्वास्थ्य में क्षीणता उत्पन्न होगी, आलस्य बढ़ेगा, व्यर्थ की परेशानियां तथा भाग–दौड़ होंगी। अतः इस समय ध्यान रखना उचित रहेगा।

बुधवार, गुरुवार एवं शुक्रवार के दिन मूलांक 5 के जातक अपना कोई भी महत्वपूर्ण कार्य या रोजगार व्यापार संबंधी कार्य अनुकूल दिवसों में प्रारंभ करें तो ऐसे जातक के लिए शुभ होगा। इन दिवसो में अनुकूल तारीखें भी हों तो मूलांक 5 के लिए श्रेष्ठ सिद्ध होता है।

अंग्रेजी के किसी भी माह की 3, 5, 9, 12, 14, 18, 21, 23, 27 एवं 30 तारीखें इनके लिए कोई विशेष कार्य करने हेतु अधिक उपयुक्त हैं। इन तारीखों में ऐसे जातक कोई भी नया कार्य, महत्वपूर्ण कार्य, उच्च अधिकारी या किसी विशिष्ट व्यक्ति से मिलना, पत्र लेखन इत्यादि करें तो विशेष लाभप्रद होता है।

जिन जातकों का जन्म 3, 5, 9, 12, 14, 18, 21, 23, 27 एवं 30 तारीखों अथवा 15 जून से 15 जुलाई एवं 17 सितंबर से 16 अक्तूबर के मध्य हुआ है, तो ऐसे जातकों से मूलांक 5 की मित्रता अच्छी होती है तथा ये लोग रोजगार–व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफल मित्र साबित होते हैं।

कोई भी जातक जिसका मूलांक 3, 5, 9 होता है तथा जिसका जन्म 3, 5, 9, 12, 14, 18, 21, 23, 27 एवं 30 दिनांको में हुआ हो वे इनके लिए विशेष शुभ फलदायक होंगे तथा इन महिलाओं से स्नेहपूर्ण संबंध रख सकते हैं।

ऐसे जातक को हल्का खाकी, सफेद चमकीला उज्जवल रंग उत्तम रहेंगे। अतः ये स्वास्थ्य आदि के लिए भी ठीक रहेंगे। हो सके तो इन रंगों का रुमाल हर समय अपने साथ रखें और यदि अपने ड्राइंग रूम के पर्दे, चादर, तकिये, बिछावन आदि इसी रंग का पसंद करेंगे तो और भी अच्छा लाभ मिलता रहेगा।

इनकी उपयुक्त दिशा उत्तर है इसलिए इन्हें ऐसा मकान या फ्लैट शुभ रहेगा जिसका मूलांक या नामांक 5 हो। उत्तर दिशा इनके लिए हमेशा शुभ रहेगी। ये अपने घर की बैठक उत्तर दिशा में करें एवं घर के फर्नीचर आदि का रंग खाकी, सफेद चमकीला रखें, जो इनके लिए अच्छे फल देने वाले होंगे।

अगर ये स्वयं का वाहन खरीदना चाहते हैं तो उसके लिए इन्हें पहले अपने मूलांक तथा मूलांक के मित्र अंक से मेल स्थापित करने वाले अंकों के अनुसार पंजीकरण क्रमांक लेना हितकर रहेगा। इनका मूलांक 5 है मित्रांक 3 एवं 9 हैं। अतः इनके लिए शुभ पंजीकरण क्रमांक 5234 = 5 आदि होना चाहिए। इनके वाहन का नंबर 104 = 5 इत्यादि हो तो इनके लिए यह शुभ रहेगा।

जब भी इनके जीवन में रोग की स्थिति आती है तथा चर्म रोग, स्नायु निर्बलता, मानसिक चिंता, दुर्बलता, शारीरिक कमजोरी से ग्रसित हो जाते हैं। रोग होने, अशुभ समय आने, कष्ट और विपत्ति के समय इन्हें विष्णु की पूजा, पूर्णिमा का व्रत करें एवं, केले का प्रसाद लेना चाहिए।

तार और टेलीफोन विभाग, ज्योतिष, सेल्समैन, डाकघर, पोस्टमैन, बीमा विभाग, बैंकिंग, बजट निर्माण, रेलवे इंजीनियरी, संपादक, तंबाकू व्यवसाय, रेडियो व्यवसाय, लेखक, पत्रकार, अनुवादक, राजनीति संबंधी कार्य, मुद्रणालय, संचार व्यवस्था, पुस्तक विक्रेता, पुस्तकालय, लाइब्रेरियन, यातायात संबंधी कार्य, इतिहास, खोज एवं पुरातत्व विभाग, आविष्कारक, मुनीम, पर्यटक एवं बुद्धि बल के समस्त कार्य। इनका व्यापार व्यवसाय हो सकता है।

बुध दोष निवारण हेतु व्रत करें। पैंतालीस या सत्रह बुधवारों को यह व्रत करें तथा हरे रंग के कपड़े पहनें एवं हरे पदार्थों का दान करें। तुलसी के पत्ते खाना एवं चढ़ाना लाभप्रद रहता है। पन्ना या मरगज की माला पर बुध मंत्र का जप करें तो इन्हें बुध का पूर्ण फल मिलेगा।

इनके लिए पन्ना शुभ रत्न है उसके न मिलने पर उपरत्न मरगज, ओनेक्स, ग्रीन पेरनीडाट धारण करें। इसे सोने या चांदी में तीन से छह रत्ती में बनवा कर, बुधवार के दिन, शुक्ल पक्ष में दायें हाथ की कनिष्ठा उंगली में, त्वचा को स्पर्श करता हुआ धारण करें तो लाभ होगा।

ऐसे जातक भगवान लक्ष्मी नारायण की आराधना करें तो सफलता मिलेगी। भगवान लक्ष्मी नारायण के चतुर्दशाक्षरी मंत्र **"ओम् ह्रीं ह्रीं श्रीं श्रीं लक्ष्मीं वासुदेवाय नमः"** का नित्य जप करें। प्रतिदिन एक सौ आठ मंत्र का जप करें तथा पूर्णिमा के दिन सत्यनारायण कथा का श्रवण करेंगे तो विभिन्न रोगों तथा समस्याओं से मुक्त होंगे। यदि यह संभव न हो तो भगवान लक्ष्मी नारायण के चित्र का नित्य दर्शन करें।

बुध के शुभ प्रभावों की वृद्धि हेतु बुध के गायत्री मंत्र का प्रातः स्नान के बाद ग्यारह, इक्कीस या एक सौ आठ बार जप करना लाभप्रद रहेगा।

बुध गायत्री मंत्र –

ऊँ सौम्यरूपाय विद्महे बाणेशाय धीमहि तन्नो सौम्यः प्रचोदयात्।।

प्रातःकाल उठ कर बुध का ध्यान करें, मन में बुध की मूर्ति प्रतिष्ठित करें और तत्पश्चात् निम्न मंत्र का पाठ करें तो कार्य सफल होंगे।

प्रियंगुकलिकाश्यामं रूपेणाप्रतिमं बुधम्।

सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम्।।

अशुभ बुध को अनुकूल बनाने हेतु बुध के मंत्र का जप करना चाहिए। नित्य कम से कम एक माला (एक सौ आठ) जप करने से वांछित लाभ मिल होगा तथा पूरा अनुष्ठान नब्बे माला का है।

ऊँ ब्राँ ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः।। जप संख्या 9000।।

बुधवार के दिन विधारा की एक इंच लंबी जड़ ला कर, हरे धागे में लपेट कर, दाहिने हाथ में बांधे अथवा सोने या चांदी के ताबीज में भर कर गले में धारण करें। इससे बुध के अशुभ प्रभाव कम होंगे तथा शुभ प्रभावों में वृद्धि होगी।

इनके लिए प्रत्येक बुधवार को एक बाल्टी या बर्तन में हरड़, बहेड़ा, गोमय, चावल, गोरोचन, स्वर्ण, आंवला और मधु आदि औषधियों का चूर्ण कर, पानी में डाल कर स्नान करना सभी प्रकार के रोगों से मुक्तिदायक रहेगा। इस हर्बल स्नान से त्वचा की कांति में वृद्धि होगी और अशुभ बुध के प्रभाव क्षीण हो कर इनके तेज एवं प्रभाव में वांछित लाभ देंगे। सभी ग्रहों की शांति के लिए कूठ्ठ, खिल्ला, कांगनी, सरसों, देवदारु, हल्दी, सर्वौषधि तथा लोध मिला कर, चूर्ण कर, किसी तीर्थ के पानी में मिला कर भगवान का स्मरण करते हुए स्नान करें तो ग्रहों की शांति और सुख समृद्धि प्राप्त होगी।

बुध की शांति के लिए योग्य व्यक्ति को बुध के पदार्थ कांसा, हाथी दांत, हरा वस्त्र, मूंगा, पन्ना, सुवर्ण, कपूर, शास्त्र, फल, भोजन, घृत, सर्व पुष्प आदि का दान करना लाभप्रद रहेगा।

बुध को अनुकूल बनाए रखने हेतु बुध यंत्र को भोजपत्र पर अष्टगंध (केशर, कपूर, अगर, तगर, कस्तूरी, अंबर, गोरोचन एवं रक्त चंदन या श्वेत चंदन) से लिख कर सोने या तांबे के ताबीज में, धूप–दीप से पूजन कर, सोने की जंजीर या पीले धागे में, बुधवार को शुक्ल पक्ष में प्रातःकाल बुध की होरा में धारण करें तो लाभ होगा।

मूलांक 6

दिनांक 21 अप्रैल से 21 मई तक तथा 24 सितंबर से 13 अक्तूबर तक सूर्य, पाश्चात्यमतानुसार, वृष तथा तुला राशि में रहता है, जो भारतीय मतानुसार 13 मई से 14 जून तथा 17 अक्तूबर से 13 नवंबर तक का समय होता है। यह शुक्र की स्वराशि है। 14 मार्च से 12 अप्रैल तक मीन राशि से शुक्र उच्च का होता है। अतः उपर्युक्त समय मूलांक छह के लिए कोई भी नया कार्य या महत्वपूर्ण कार्य करने हेतु अधिक उपयुक्त रहता है।

इन्हें माह अप्रैल, अक्तूबर एवं नवंबर किसी भी नये कार्य को प्रारंभ करने हेतु अनुकूल नहीं हैं। इन मासों में इनके कार्यों में रुकावटें आएंगी तथा स्वास्थ्य में क्षीणता उत्पन्न होगी, आलस्य बढ़ेगा, व्यर्थ की परेशानियां तथा भाग–दौड़

बढ़ेगी। अतः इस समय ध्यान रखना उचित रहेगा।

इन्हें शुक्रवार, मंगलवार एवं गुरुवार के दिन शुभ रहेंगे और यदि इनकी शुभ तारीखों में शुक्रवार, मंगलवार एवं गुरुवार पड़ रहा हो तो ऐसी तारीखें एवं दिन इन्हें विशेष फलदायी सिद्ध होंगे।

इनके लिए अंग्रेजी माह की 3, 6, 9, 12, 15, 18, 21, 24, 27 एवं 30 तारीखें किसी भी प्रकार का पत्र व्यवहार या किसी उच्चाधिकारी से संबंध या कोई भी व्यवसाय संबंधी नया कार्य प्रारंभ करने हेतु अधिक उपयुक्त तथा विशेष फलदायक रहेंगी।

इन्हें कोई भी महत्वपूर्ण कार्य, रोजगार–व्यापार संबंधी कार्य, पत्र व्यवहार संबंधी कार्य प्रारंभ करने हेतु 1, 8, 10, 17, 19, 26 एवं 28 तारीखें शुभ नहीं हैं। अतः इन दिवसो में मूलांक 6 के जातक कोई भी कार्य प्रारंभ न करें। यही इनके लिए उचित रहेगा।

इन्हें केवल उन्हीं व्यक्तियों से अधिक मित्रता करनी चाहिए जिनका जन्म 3, 6, 9, 12, 15, 18, 21, 24, 27 एवं 30 तारीखों में अथवा 13 मई से 14 जून 12 अक्तूबर से 13 नवंबर एवं 14 मार्च से 13 अप्रैल के बीच हुआ हो। ऐसे व्यक्ति सुख एवं दुख के समय में मित्रता का परिचय देंगे तथा रोजगार–व्यापार में सहायक होंगे।

जिन महिलाओं का जन्म 3, 6, 9, 12, 15, 18, 21, 24, 27 एवं 30 तारीख को हुआ हो तथा जिनका मूलांक 3, 6, 9 हो, ऐसी महिलाएं इनके प्रेम संबंध या विवाह संबंध हेतु उचित रहेंगी तथा रोजगार आदि में सफलता के शिखर पर पहुंचाएंगी।

इनका शुभ रंग हल्का नीला, आसमानी, गहरा नीला, हल्का गुलाबी होने चाहिए। नीला हल्का नीला होना चाहिए और हो सके तो घर की दीवारें, चादर आदि का चुनाव भी इन्हीं रंगों के अनुरूप ही करें और यदि स्वास्थ्य में परिवर्तन लाना हो तो इन्हीं रंगों के वस्त्र पहनें और हो सके तो इन्हीं रंगों में से किसी एक रंग का रुमाल हर समय अपने पास रखें, जो विशेष फलदायी रहेगा।

भवन निर्माण के इच्छुक हैं तो इसके लिए आवश्यक है कि ये सही दिशा का चयन करें इनके लिए अग्नि कोण दिशा उत्तम रहेगी। मकान क्रमांक 3, 6, 9 हो तो श्रेष्ठ रहेगा। शहर के अग्नि कोण क्षेत्र या भवन के अग्नि कोण क्षेत्र में निवास करें तो इनके लिए उत्तम रहेगा। अतः अपने रोजगार संबंधी कार्यों को करते समय भी इन्हीं दिशाओं का चुनाव करें जो इनके लिए श्रेष्ठ फलदायक रहेगा। भवन का रंग, फर्नीचर का रंग हल्का नीला, आसमानी रखना श्रेष्ठ रहेगा।

अगर ये चाहते हैं कि इनकी यात्रा मंगलमय हो तो यात्रा के समय उन्हीं अंकों का चुनाव करें जो इनके मूलांक तथा मूलांक के मित्र अंक से मेल स्थापित करें। मूलांक 6 के मित्र अंक 3, 9 हैं। अतः यात्रा वाहन, रेलवे सीट में इन्हीं अंकों का चुनाव करें और रहने के लिए कमरे का चयन करते समय नंबर 105 = 6 आदि होना उचित है। अगर स्वयं का वाहन खरीदते हैं तो उसका पंजीकरण क्रमांक 3, 6 एवं 9 होने चाहिए जैसे अंक 5235 = 6 इत्यादि। ऐसा वाहन इन्हें अच्छा प्रदान करेंगे।

जब भी इनके जीवन में रोग की स्थिति आएगी, तो फेफड़ों से संबंधित रोग, धातु क्षीणता, स्नायु निर्बलता, सीने की कमजोरी, मूत्र रोग, कफ जनित रोग, कब्जियत तथा जुकाम जैसे रोग पीड़ा प्रदान करेंगे। रोग होने, अशुभ समय आने, कष्ट तथा विपत्ति के समय इन्हें कर्त्तिवीर्यार्जुन की पूजा एवं उपासना करनी चाहिए। स्त्री जातकों को संतोषी माता का व्रत करना चाहिए।

रेस्टोरेंट, होटल, ढाबे, भोजनालय, शिल्पकार, डिजायनर, महाजनी कार्य, संगीतज्ञ, उपन्यासकार, नाट्यकार, कहानीकार, बागवानी, वस्त्र व्यवसायी, अभिनेता, इत्र, तेल और अन्य तेलीय पदार्थों के विक्रेता, पुष्प विक्रेता, वस्त्राभूषण व्यवसाय, रेशम, टेरीलीन, टेरीन, ऊनी वस्त्रादि के विक्रेता, मिष्ठान व्यवसाय, घड़ीसाजी, नृत्याभिनय और काव्य तथा साहित्योपार्जन, सार्वजनिक कार्य, समाज सेवा, दास वृत्ति, यातायात, मुद्रणालय, खाद्य विभाग संबंधी समस्त कार्य व्यापार, व्यवसाय इनके लिए अच्छे हैं।

शुक्रवार को शुक्र अरिष्ट दोष निवारण हेतु व्रत करें। इकतीस या इक्कीस

शुक्रवारों को शुक्र का व्रत करें। सफेद वस्त्र धारण करें एवं सफेद वस्तुओं का दान करें। यथाशक्ति शुक्र मंत्र स्फटिक माला पर जप करें तो इन्हें लाभ होगा।

यदि ये हीरा नहीं खरीद सकते तो ओपल, सफेद पुखराज, जरकन आदि धारण करें। 51 सेंट का हीरा इन्हें शुक्ल पक्ष में, शुक्रवार के दिन लाभ के चौघड़िया मुहूर्त में, प्लेटिनम या चांदी की अंगुठी में, दायें हाथ की अनामिका उंगली में त्वचा को स्पर्श करता हुआ धारण करना शुभ होगा।

ये शुक्र ग्रह की उपासना करें, अथवा भगवती दुर्गा की आराधना करें भगवती दुर्गा के अष्टाक्षरी मंत्र **'ओम् ह्रीं दुं दुर्गायै नमः'** का नित्य जप करें। प्रतिदिन एक सौ आठ मंत्र का जप करें तथा अष्टमी के दिन व्रत करें एवं दुर्गा सप्तशती का पाठ करेंगे तो इन्हें विभिन्न रोगों और समस्याओं से छुटकारा मिलेगा। यदि यह संभव न हो तो भगवती दुर्गा के चित्र का नित्य दर्शन करें।

इनके लिए शुक्र के शुभ प्रभावों की वृद्धि हेतु, शुक्र के गायत्री मंत्र का प्रातः स्नान के बाद ग्यारह, इक्कीस या एक सौ आठ बार जप करना लाभप्रद रहेगा।

शुक्र गायत्री मंत्र –

ॐ भृगुजाय विद्महे दिव्यदेहाय धीमहि तन्नो शुक्रः प्रचोदयात्।।

प्रातःकाल उठ कर ये शुक्र का ध्यान करें, मन में शुक्र की मूर्ति प्रतिष्ठित करें तत्पश्चात् निम्न मंत्र का पाठ करें तो लाभ होगा।

हिमकुंदमृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम्।

सर्वशास्त्रप्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम्।।

अशुभ शुक्र को अनुकूल बनाने हेतु शुक्र के मंत्र का जप करना चाहिए। नित्य एक माला (एक सौ आठ) जप करने से वांछित लाभ होता है। पूरा अनुष्ठान एक सौ साठ माला का हैं मंत्र जप का प्रत्यक्ष फल स्वयं देख सकेंगे।

ऊँ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः।। जप संख्या 16000।।

शुक्रवार के दिन, एक इंच लम्बी सरफोंखा की जड़ ला कर, सफेद धागे में लपेट कर, दाहिने हाथ में बांधे या प्लेटिनॅम या चांदी के ताबीज में भर कर गले में धारण करें इससे शुक्र के अशुभ प्रभाव कम होंगे तथा शुभ प्रभावों में वृद्धि होगी।

इनके लिए प्रत्येक शुक्रवार को एक बाल्टी या बर्तन में हरड़, बहेड़ा, आंवला, इलायची, केसर और मैनसील आदि औषधियों का चूर्ण कर, पानी में डाल कर स्नान करना सभी प्रकार के रोगों से मुक्तिदायक रहेगा। हर्बल स्नान से इनकी त्वचा की कांति में वृद्धि होगी तथा अशुभ शुक्र का प्रभाव क्षीण हो कर तेज एवं प्रभाव में वांछित लाभ प्राप्त होगा। सभी ग्रहों की शांति के लिए इन्हें कूठ्ठ, खिल्ला, कांगनी, सरसों, देवदारू, हल्दी, सर्वौषधि तथा लोध को मिला कर, चूर्ण कर, किसी तीर्थ के पानी में मिला कर भगवान का स्मरण करते हुए स्नान करें तो ग्रहों की शांति और सुख–समृद्धि प्राप्त होगी।

शुक्र की शांति के लिए योग्य व्यक्ति को शुक्र का पदार्थ चांदी, सोना, चावल, घी, सफेद वस्त्र, सफेद चंदन, दही, गंध द्रव्य, आदि का दान करना लाभप्रद होता है।

शुक्र को अनुकूल बनाए रखने हेतु शुक्र यंत्र को भोज पत्र पर अष्टगंध (केशर, कपूर, अगर, तगर, कस्तूरी, अंबर, गोरोचन एवं रक्त चंदन या श्वेत चंदन) से लिख कर, सोने या तांबे के ताबीज में, धूप–दीप से पूजन कर, सोने की जंजीर या पीले धागे में, शुक्रवार को शुक्ल पक्ष में शुक्र की होरा में करें तो अवश्य लाभ होगा।

मूलांक 7

नेपच्यून (केतु) 21 जून से 25 जुलाई तक पाश्चात्य मत से, सूर्य कर्क राशि में रहता है तथा 16 जुलाई से 16 अगस्त तक, भारतीय मत से सूर्य कर्क राशि में रहता है। इस समय जल तत्व की वृद्धि होती है अतः उपयुक्त समय मूलांक सात के लिए कोई भी नया कार्य या महत्वपूर्ण कार्य करने हेतु अधिक उपयुक्त रहता है।

इनके लिए माह जनवरी, फरवरी, जुलाई एवं अगस्त किसी भी नये कार्य को प्रारंभ करने हेतु अनुकूल नहीं होते। इन मासों में इनके कार्यों में रुकावटें आएंगी तथा स्वास्थ्य में क्षीणता उत्पन्न होगी, आलस्य बढ़ेगा, व्यर्थ की परेशानियां तथा भाग–दौड़ बढ़ेगी। अतः इस समय में ध्यान रखना उचित रहेगा।

रविवार एवं सोमवार के दिवस में कोई भी महत्वपूर्ण कार्य, अपने किसी अधिकारी से मिलना, पत्र व्यवहार आदि के कार्य प्रारंभ करना इनके लिए अनुकूल हैं। ये अपना कोई भी कार्य इन्हीं दिवसों में प्रारंभ करें तो लाभ होगा।

किसी भी अंग्रेजी माह के दिनांक 2, 6, 7, 11, 15, 16, 20, 24, 25 एवं 29 इनके लिए विशेष महत्वपूर्ण होंगे। इन तारीखों में ये कोई भी नया कार्य, रोजगार–व्यापार, पत्र लेखन या उच्च अथवा विशिष्ट अधिकारी से मिलने का कार्य संपन्न करेंगे तो वह अधिक सुविधाजनक एवं फलदायक रहेगा।

इनके लिए अंग्रेजी माह की 1, 9, 10, 18, 19, 27 एवं 28 तारीखें इनके लिए प्रतिकूल हैं। इन तारीखों में रोजगार–व्यापार संबंधी कार्य, पत्र व्यवहार या कोई भी महत्वपूर्ण कार्य प्रारंभ करना इनके लिए अनुकूल नहीं हैं। अतः ये जातक इन तिथियों के दुष्प्रभाव से बचें।

ऐसे व्यक्तियों से मेल रखें जिनका जन्म 2, 6, 7, 11, 15, 16, 20, 24, 25 एवं 29 तारीखों को अथवा 16 जुलाई से 16 अगस्त के मध्य हुआ हो। ऐसे व्यक्तियों से इनकी मित्रता घनिष्ठ रहेगी तथा रोजगार, साझेदारी के क्षेत्र में सहायक सिद्ध होंगे। ऐसे व्यक्ति इनके लिए विश्वसनीय भी रहेंगे।

यदि इन्हें प्रेम अथवा विवाह का संबंध स्थापित करना है तो इनके लिए ऐसी महिलाएं शुभ रहेंगी जिनका मूलांक 2, 6, 7 हो तथा जिनका जन्म किसी भी माह की 2, 6, 7, 11, 15, 16, 20, 24, 25 एवं 29 तारीखों में हुआ हो। ऐसी महिलाएं इनके लिए विशेष फलदायी रहेंगी।

इनके लिए हरा काफूरी, सफेद, हल्का तिल रंग का शुभ फलदायक होंगे। वस्त्रों के चयन के समय इन रंगों का ध्यान रखें। ये रंग इनके रोजगार–व्यवसाय तथा स्वास्थ्य के लिए भी अनुकूल रहेंगे। इन्हीं रंगों के तकिये, चादर आदि इनके लिए ठीक रहेंगे। यदि ये इन रंगों का रुमाल अपने पास रखें, तो स्वास्थ्य तथा कार्य सफल रहेगा।

इन्हें ऐसा भवन जिसका मूलांक या नामांक 7 हो तथा वह नैऋत्य कोण दिशा में स्थित हो वह शुभ रहेगा। यदि ये मकान बनवाते हैं या खरीदने के इच्छुक हैं तो इनके लिए नैऋत्य कोण दिशा उपयुक्त रहेगी तथा ये अपने सभी आवश्यक कार्य इसी दिशा की ओर करें। अपने घर का फर्नीचर काफूरी सफेद, हल्के नीले रंग का खरीदेंगे तो पूर्ण फलदायी रहेगा।

मूलांक 7 के जातक यदि स्वयं का वाहन आदि खरीदने के इच्छुक हैं तो उसके पंजीकरण के लिए इन्हें अपने मूलांक तथा मूलांक के मित्र अंक से मेल स्थापित करने वाले अंक अच्छे रहेंगे। इनका मूलांक 7 है, अतः इनके लिए शुभ अंक 2, 6, 7 अच्छा रहेगा, जैसे पंजीकरण क्रमांक 5236 =7 इत्यादि। यात्रा के वाहन, सीट क्रमांक के अंक भी यही होंगे तो इनकी यात्रा सफल रहेगी। यदि ये होटल में कमरा बुक करते हैं तब नंबर 106 = 7 आदि अंकों का चयन करें। इनके लिए हितकर रहेगा।

जब भी इनके जीवन में रोग की स्थिति आती है तब इन्हें पेट दर्द, छूत के रोग, पसीने की अधिकता तथा दुर्गंध, आमाशय दोष, कब्जियत, नींद न आना, भूख न लगना, गुप्तांग संबंधित रोग, वात तथा गठिया इत्यादि रोग होते हैं। रोग होने, अशुभ समय आने, कष्ट और विपत्ति के समय इन्हें नृसिंह भगवान की पूजा एवं उपासना करनी चाहिए।

तैराकी, अभिनय, फिल्म व्यवसाय, वायु सेना, पर्यटन, ड्राइवर का कार्य,

बाबूगिरी, जल जहाज के कार्य, पत्रकारिता, संपादन कार्य, रबर, टायर, ट्यूब, प्लास्टिक वर्क, ललित कला संबंधी कार्य, राज्याधिकारी, जासूसी, तरल पदार्थों का क्रय–विक्रय, जादू के कार्य, कूटनीतिक कार्य, नियंत्रक, भूमिगत पदार्थों का व्यवसाय एवं ट्रांसमीटर, रेडियो, अनुवादक आदि के कार्य व्यापार में इन्हें अधिक सफलता मिलती है।

शनिवार को नेपच्यून अरिष्ट दोष निवारण हेतु व्रत करें एवं शनिवार को काले, नीले वस्त्र धारण कर, इक्कावन या उन्नीस शनिवारों को व्रत करें तथा शरीर में तेल मालिश, तेल दान तथा पीपल के वृक्ष की पूजा करें तथा शनि मंत्र का यथाशक्ति रुद्राक्ष माला पर जप करें तो अवश्य लाभ होगा।

इनके लिए लहसुनिया प्रमुख रत्न है इसके न मिलने पर पीला हकीक भी धारण कर सकते हैं। इसे शुक्ल पक्ष में शनिवार के दिन, चौघड़िया मुहूर्त में, चांदी की अंगूठी में तीन से पांच रत्ती, दाहिने हाथ की कनिष्ठा उंगली में त्वचा को स्पर्श करते हुए धारण करना शुभ है।

केतु ग्रह की उपासना करें अथवा नृसिंह भगवान की आराधना करें। नृसिंह भगवान का मंत्र **'ओम् ह्रीं उग्रं वीरं महा विष्णुं ज्वलंत सर्वतोमुखं नृसिंह भीषणं भद्र मृत्यु मृत्युं नमाम्यहं ह्रीं'** का नित्य जप करें। प्रतिदिन एक सौ आठ मंत्र का जप करें तथा पूर्णिमा के दिन सत्यनारायण कथा का श्रवण करेंगे तो विभिन्न रोंगों तथा समस्याओं से मुक्त होंगे। यदि यह संभव न हो तो नृसिंह भगवान के चित्र का नित्य दर्शन करें।

इनके लिए केतु के शुभ प्रभावों की वृद्धि हेतु, केतु गायत्री मंत्र का प्रातः स्नान के बाद ग्यारह, इक्कीस या एक सौ आठ बार जप करना लाभप्रद रहेगा।

केतु गायत्री मंत्र –

ऊँ पद्मंपुत्राय विद्महे अमृतेशाय धीमहि तन्नो केतुः प्रचोदयात्।।

प्रातःकाल उठ कर केतु का ध्यान करें, मन में केतु की मूर्ति प्रतिष्ठित करें तत्पश्चात् निम्न मंत्र का पाठ करें।

पलाशपुष्पसंकाशं तारकाग्रहमस्तकम्।

रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम्।।

अशुभ केतु को अनुकूल बनाने हेतु इन्हें केतु के मंत्र का जप करना चाहिए। नित्य कम से कम एक माला (एक सौ आठ) जप करने से वांछित लाभ होता है। पूरा अनुष्ठान एक सौ सत्तर माला का है।

ऊँ स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः।। जप संख्या 17000।।

बुधवार के दिन एक इंच लंबी असंगध की जड़ ला कर आसमानी धागे में लपेट कर, दाहिने हाथ में बांधें या चांदी के ताबीज में भर कर गले में धारण करें। इससे नेपच्यून/केतु के अशुभ प्रभाव कम होंगे तथा शुभ प्रभावों में वृद्धि होगी।

इन्हें प्रत्येक बुधवार को एक बाल्टी या बर्तन में सहदेई, लज्जालु (लोबान), बला, मोथा, प्रियंगु और हिंगोठ आदि औषधियों का चूर्ण कर, पानी में डाल कर स्नान करना सभी प्रकार के रोगों से मुक्तिदायक रहेगा। हर्बल स्नान से आपकी त्वचा की कांति में वृद्धि होगी। अशुभ केतु/नेपच्यून का प्रभाव क्षीण हो कर आपके तेज एवं प्रभाव में वांछित लाभ प्राप्त होगा। सभी ग्रहों की शांति के लिए इन्हें कूठ्ठ, खिल्ला, कांगनी, सरसों, देवदारू, हल्दी, सर्वौषधि तथा लोध को मिला कर चूर्ण कर, किसी तीर्थ के पानी में मिला कर, भगवान का स्मरण करते हुए स्नान करें तो ग्रहों की शांति और सुख–समृद्धि प्राप्त होगी।

केतु की शांति के लिए ब्राह्मण केतु का पदार्थ कस्तूरी, तिल, छाग, काला वस्त्र, ध्वजा, सप्तधान्य, कंबल, उड़द, वैदूर्य मणि, काले पुष्प, तेल, सुवर्ण, लोहा, शस्त्र आदि का दान करना लाभप्रद रहेगा।

केतु को अनुकूल बनाए रखने हेतु केतु यंत्र को भोज पत्र पर अष्टगंध (केशर, कपूर, अगर, तगर, कस्तूरी, अंबर, गोरोचन एवं रक्त चंदन या श्वेत चंदन) से लिख कर, सोने या तांबे के ताबीज में, धूप–दीप से पूजन कर, सोने की जंजीर या पीले धागे में, शनिवार को शुक्ल पक्ष में प्रातःकाल धारण करें तो लाभ होगा।

मूलांक 8

दिनांक 23 दिसंबर से 19 फरवरी तक, पाश्चात्य मत से सूर्य मकर एवं कुंभ राशि में रहता है तथा 14 जनवरी से 13 मार्च तक, भारतीय मत से, सूर्य मकर एवं कुंभ राशि में होता है जो शनि की अपनी राशियां है तथा 17 अक्तूबर से 13 नवंबर तक सूर्य तुला राशि में रहता है, जो शनि की उच्च राशि है। अतः उपर्युक्त समय मूलांक आठ के लिए कोई भी नया कार्य या महत्वपूर्ण कार्य करने के लिए अधिक उपयुक्त है।

इनके लिये मार्च, जून, जुलाई एवं दिसंबर किसी भी नये कार्य को प्रारंभ करने हेतु अनुकूल नहीं रहेंगे। इन मासों में इनके कार्यों में रुकावटें आएंगी तथा स्वास्थ्य में क्षीणता उत्पन्न होगी, आलस्य बढ़ेगा, व्यर्थ की परेशानियां तथा भाग–दौड़ बढ़ेगी। अतः इस समय में ध्यान रखना उचित रहेगा।

किसी भी माह में पड़ने वाले शनिवार, रविवार एवं सोमवार इनके लिए अनुकूल दिवस हैं। ये अपना कोई भी महत्वपूर्ण कार्य या रोजगार–व्यापार संबंधी कार्य, विशिष्ट अधिकारी से संबंध आदि अपनी शुभ तारीखों में पड़ने वाले उपर्युक्त दिवसों में प्रारंभ करें तो इनके लिए विशेष फलदायक रहेगा।

इनके लिए कोई भी नया कार्य, महत्वपूर्ण कार्य, रोजगार–व्यापार सम्बंधी कार्य, पत्र या दस्तावेज लिखने हेतु किसी भी अंग्रेजी माह की 1, 4, 8, 10, 13, 17, 19, 22, 26, 28 एवं 31 तारीखें अधिक अनुकूल रहेंगी। अतः कोशिश करें कि कोई भी महत्वपूर्ण कार्य उपर्युक्त तारीखों में ही संपन्न हो।

किसी भी अंग्रेजी माह के दिनांक 3, 6, 12, 15, 21, 24 एवं 30, इनके लिए अनुकूल नहीं रहेंगे। इन तारीखों में कोई भी नया कार्य, व्यापार, पत्र लेखन एवं उच्च तथा विशिष्ट अधिकारी से मिलने का कार्य न करें।

जिन जातकों का जन्म 1, 4, 8, 10, 13, 17, 19, 22, 26, 28 एवं 31 तारीखों को अथवा 14 जनवरी से 13 मार्च तथा 17 अक्तूबर से 13 नवंबर के बीच हुआ हो तो ऐसे व्यक्ति इनके लिए विशेष सहयोगी रहेंगे। इनके सहयोग से इन्हे अच्छी उपलब्धियां प्राप्त होंगी।

ये अपने रोजगार, व्यवसाय या प्रेम, विवाह इत्यादि में ऐसी स्त्री का चुनाव करें, जिसका मूलांक 1, 4, 8 हो तथा उसका जन्म किसी भी माह की 1, 4, 8 10, 13, 17, 19, 22, 26, 28 एवं 31 तारीख को हुआ हो। ऐसी महिलाएं इनके रोजगार, व्यवसाय तथा अन्य महत्वपूर्ण कार्यों के लिए श्रेष्ठ फलदायक सिद्ध होंगी।

इन्हें गहरा भूरा, काला, गहरा नीला, काकरोजी रंग शुभ होंगे। अपने घर के दरवाजे, पर्दे, चादर आदि का चुनाव भी इन्हीं रंगों के अनुरूप करें। यदि इनका स्वास्थ्य ठीक न हो तब इन्हीं रंगों के कपड़े एवं रुमाल हर समय उपयोग करें जिससे इनका स्वास्थ्य ठीक रहेगा। महत्वपूर्ण कार्य करते समय भी इन्हीं रंगों के वस्त्रों को धारण करना इनके लिए विशेष फलदायक रहेगा।

इन्हें कॉम्पलेक्स, फ्लैट या मकान का चुनाव पश्चिम दिशा में करना चाहिए। इनका मूलांक 8 होने से इनके लिए पश्चिम दिशा उपयुक्त रहेगी तथा भवन क्रमांक का योग 8 हो तो अच्छा रहेगा। अतः इस दिशा में फ्लैट या मकान खरीद सकते हैं। चाहें तो शहर में पश्चिम दिशा, या भवन के पश्चिम क्षेत्र में निवास करें ऐसा करना इनके लिए लाभकारी रहेगा तथा आवश्यक कार्य भी इसी दिशा की ओर बैठ कर संपन्न करेंगे तो लाभ होगा।

मूलांक 8 का 1 और 4 मित्र हैं। अतः जब भी कोई नया वाहन इत्यादि खरीदते हैं तो उसके पंजीकरण का योग इन्हीं अंकों में से एक होना इनके लिए लाभप्रद रहेगा। उदाहरणार्थ वाहन पंजीकरण क्रमांक 5237 = 8 आप यदि वाहन में यात्रा करते हैं तब भी शुभ अंक 1,4,8 रहेंगे और यदि होटल में कमरा आदि बुक करवाते हैं तब उसके लिए इनका कमरा नंबर 107 = 8 का चयन करना ही उचित रहेगा।

जब भी इनके जीवन में रोग की स्थिति आएगी तब वायु रोग, वात रोग, शारीरिक क्षीणता, अंध रोग, हृदय की कमजोरी, रक्त की कमी, मलबद्धता, कब्जियत, गठिया, रक्तचाप, सिर की पीड़ा, कुष्ठ रोग, मूत्र के रोग, गंजापन तथा कान–नाक में पीड़ा आदि होगी। रोग होने, अशुभ समय आने, कष्ट तथा विपत्ति के समय इनको शनि की पूजा एवं आराधना करनी चाहिए।

कसरत, खेल–कूद, कूद–फांद, पुलिस और सैन्य विभाग, ठेकेदारी, टीन–चद्दर आदि का कार्य, कुलीगिरी, लद्यु उद्योग, वकालत, ज्योतिष कार्य, वैज्ञानिक कार्य, मुर्गी पालन, बागबानी, कोयला और लकड़ी का व्यवसाय, घड़ीसाज, न्याय वेत्ता, नेतृत्व, नीति निर्धारक, धर्म–कर्म, यज्ञादि कर्त्ता, अध्यापन, संगीतज्ञ आदि कार्य इन्हें लाभ दे सकता है।

शनिवार को शनि अरिष्ट दोष निवारण हेतु व्रत करें तथा शनिवार को काले, नीले वस्त्र धारण कर इक्कावन या उन्नीस शनिवारों को व्रत करें। शरीर में तेल मालिश, तेल दान तथा पीपल के वृक्ष की पूजा करें। शनि मंत्र का यथाशक्ति रुद्राक्ष माला पर जप करें।

इनके लिए नीलम सबसे अधिक लाभकारी रहेगा। इसके न मिलने पर बैंकॉक नीलम, लाजवर्त, नीली इत्यादि धारण कर सकते हैं। इसे ये शनि के दिन, शुक्ल पक्ष में, शुभ मुहूर्त में, त्रिधातु या चांदी की अंगूठी में सवा तीन से सवा पांच रत्ती दाहिने हाथ की मध्यमा उंगली की त्वचा को स्पर्श करता हुआ धारण करें। यह इनके लिए शुभ फलदायक रहेगा।

ये शनि ग्रह की उपासना करें अथवा बटुक भैरव की उपासना करना विशेष लाभप्रद रहेगा तथा नित्य रुद्राक्ष की माला पर बटुक भैरव के मंत्र का एक सौ आठ बार जप किया करें। इससे इनकी सभी समस्याएं, रोग इत्यादि दूर होंगे। बटुक भैरव का मंत्र इस प्रकार है– **'ह्रीं बटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु–कुरु बटुकाय ह्रीं'**। यह इक्कीस अक्षर का यह मंत्र सर्वसिद्धिदाता है। कृष्ण पक्ष की अष्टमी के दिन बटुक भैरव की उपासना करना विशेष लाभप्रद रहेगा।

इनके लिए शनि के शुभ प्रभावों की वृद्धि हेतु शनि के गायत्री मंत्र का, प्रातः स्नान के बाद, ग्यारह, इक्कीस या एक सौ आठ बार जप करना लाभप्रद रहेगा।

शनि गायत्री मंत्र –

ॐ भगभवाय विद्महे मृत्युरूपाय धीमहि तन्नो शनिः प्रचोदयात्।।

प्रातःकाल उठ कर शनि का ध्यान करें, मन में शनि की मूर्ति प्रतिष्ठित करें और तत्पश्चात् निम्न मंत्र का पाठ करें तो कार्य सिद्ध होगा।

नीलांजनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्।

छायामार्तंडसंभूतं तं नमामि शनैश्चरम्।।

अशुभ शनि को अनुकूल बनाने हेतु शनि के मंत्र का जप करना चाहिए। नित्य एक माला (एक सौ आठ) जप करने से वांछित लाभ होता है। पूरा अनुष्ठान दो सौ तीस माला का है।

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय **नमः**।। जप संख्या 23000।।

शनिवार के दिन एक इंच लंबी विच्छू लता की जड़ ला कर, काले धागे में लपेट कर, दाहिने हाथ में बांधे या शीशे अथवा लोहे के ताबीज में भर कर गले मे धारण करें। इससे शनि के अशुभ प्रभाव कम होंगे तथा शुभ प्रभावो में वृद्धि होगी।

इन्हें प्रत्येक शनिवार को एक बाल्टी या बर्तन में सुरमा, काले तिल, सौंफ, नागरमोथा और लोध आदि औषधियों का चूर्ण कर, पानी में डाल कर स्नान करना सभी प्रकार के रोगों से मुक्तिदायक रहेगा। हर्बल स्नान से इनकी त्वचा की कांति में वृद्धि होगी तथा अशुभ शनि का प्रभाव क्षीण हो कर इनके तेज एवं प्रभाव में वांछित वृद्धि होगी। सभी ग्रहों की शांति के लिए इनको कूठ्ठ, खिल्ला, कांगनी, सरसों, देवदारू, हल्दी, सर्वौषधि तथा लोध को मिला कर चूर्ण कर, किसी तीर्थ के जल में मिला कर, भगवान का स्मरण करते हुए स्नान करें तो ग्रहों की शांति और सुख–समृद्धि प्राप्त होगी।

शनि की शांति के लिए योग्य व्यक्ति को शनि के पदार्थ–तिल, उड़द, लोहा, तेल, काला वस्त्र, कुलथी, काले पुष्प, जूता, कस्तूरी, आदि का दान करना लाभप्रद होता है।

शनि को अनुकूल बनाए रखने हेतु शनि यंत्र को भोज पत्र पर अष्टगंध (केशर, कपूर, अगर, तगर, कस्तूरी, अंबर, गोरोचन एवं रक्त चंदन या श्वेत चन्दन) से लिख कर, सोने या तांबे के ताबीज में, धूप–दीप से पूजन कर, सोने की जंजीर या पीले धागे में, शनिवार को शुक्ल पक्ष में प्रातःकाल धारण करने से शनि शुभ प्रभाव देता है।

मूलांक 9

दिनांक 23 मार्च से 20 अप्रैल तक एवं 24 अक्तूबर से 21 नवंबर तक पाश्चात्य मत से, सूर्य मेष तथा वृश्चिक राशि में रहता है। भारतीय मत से यह समय 13 अप्रैल से 12 मई एवं 14 नवंबर से 14 दिसंबर होता है। मेष एवं वृश्चिक मंगल की अपनी राशियां हैं। दिनांक 14 जनवरी से 13 फरवरी तक सूर्य मकर राशि में रहता है, जो मंगल कि उच्च राशि है अतः उपर्युक्त समय मूलांक 9 के लिए कोई भी नया या महत्वपूर्ण कार्य करने के लिए अधिक उपयुक्त रहता है।

मूलांक 9 के लिए माह जनवरी एवं जुलाई तथा 15 नवंबर से 27 दिसंबर तक, किसी भी नये कार्य को प्रारंभ करने हेतु अनुकूल नहीं रहेंगे। इस समय में आपके कार्यों में रुकावटें आएंगी तथा स्वास्थ्य में क्षीणता उत्पन्न होगी, आलस्य बढ़ेगा, व्यर्थ की परेशानियां तथा भाग–दौड़ बढ़ेगी। अतः इस समय ध्यान रखना आवश्यक होता है।

मंगलवार, शुक्रवार एवं गुरुवार इनके लिए ठीक दिन रहेंगे। यदि ये किसी भी कार्य को करते हैं तो इन्ही दिवसों में प्रारंभ करें और यदि इन दिवसों में अनुकूल तारीखें भी आ जाएं तो श्रेष्ठ फलदायक रहेगा।

इनके लिए किसी भी अंग्रेजी मास की 3, 6, 9, 12, 15, 18, 21, 24, 29 एवं 30 तारीखें अधिक अनुकूल रहेंगी। इन तारीखों में महत्वपूर्ण कार्य, रोजगार–व्यापार के कार्य, अधिकारी या विशिष्ट व्यक्तियों से संबंधित कार्य अथवा पत्र इत्यादि लिखना अधिक उपयुक्त तथा सफलतादायक होता है।

इनके लिए किसी भी अंग्रेजी माह की 1, 7, 10, 16, 19, 20, 25 एवं 28 तारीखें ठीक नहीं हैं। पत्र इत्यादि लिखना या दस्तावेज लिखने हेतु अथवा विशिष्ट अधिकारी से मिलने हेतु या कोई भी नया कार्य प्रारंभ करना हो तो इन तारीखों में प्रारंभ न करें अन्यथा हानि हो सकती है।

जिन व्यक्तियों का जन्म 3, 6, 9, 12, 15, 18, 21, 24, 27 एवं 30 तारीखों को अथवा 13 अप्रैल से 12 मई एवं 14 नवंबर से 14 दिसंबर तथा 14 जनवरी से

13 फरवरी के मध्य हुआ हो, ऐसे व्यक्तियों से इनकी मित्रता अच्छी रहती है तथा रोजगार, व्यापार के क्षेत्र में भी ये उच्चता के शिखर पर होते हैं। ऐसे व्यक्ति इनके लिए विशेष फलदायी होते हैं।

मूलांक 3, 6, 9 वाली महिलाएं तथा जिनका जन्म 3, 6, 9, 12, 15, 18, 21, 24, 27 एवं 30 दिनांकों में हुआ हो तो वे इनके लिए विश्वसनीय सिद्ध होंगी। ऐसी स्त्रियों से प्रेम अथवा विवाह संबंध स्थापित कर सकते हैं जो इनके लिए शुभ फलदायी रहेगा।

इनके लिए अनुकूल रंग गुलाबी, गहरा लाल है। अपने घर में दीवारें, खिड़कियां, पर्दे आदि का रंग चुनाव करते समय इन रंगों को ध्यान में रखें। यदि इनका स्वास्थ्य साथ नहीं दे रहा है तब इन रंगों का रुमाल अपने पास हमेशा रखें तथा कोई भी रोजगार–व्यापार संबंधी कार्य करते समय इन रंगों के वस्त्र धारण करना न भूलें, जो इनके उज्ज्वल भविष्य के लिए अच्छा रहेगा।

इनके लिए दक्षिण दिशा शुभ है अतः मकान या कॉम्पलेक्स वहां शुभ रहेगा जो दक्षिण में स्थित हो। अतः ये शहर की दक्षिणी दिशा या भवन की दक्षिणी दिशा का चुनाव कर सकते हैं। रोजगार–व्यापार की बैठक भी दक्षिण दिशा में रख सकते हैं, जो उज्ज्वल भविष्य के लिए अच्छा रहेगा। भवन के फ्लैट का क्रमांक का योग 3, 6 या 9 रखना लाभप्रद रहेगा।

नये वाहन का पंजीकरण क्रमांक इनके मूलांक 9 या मूलांक के मित्र अंक 6 तथा 3 में से कोई एक लेना हितकर होता है, जैसे वाहन पंजीकरण क्रमांक 5238 = 9 इत्यादि । यदि होटल में कमरा आदि बुक करते हैं, तो उसके लिए अंक 108 = 9 होना इनके लिए हितकर रहेगा। अथवा ये वाहन द्वारा यात्रा करते हैं, तो सीट इत्यादि का क्रमांक इनके मूलांक या मित्र अंक भाग्यशाली अंक साबित होंगे। इन्हीं शुभ अंकों के प्रभाव से ही इनकी यात्रा सफल हो सकती है।

जब भी इनके जीवन में रोग की स्थिति आएगी तब इन्हें क्रोध, झल्लाहट, दुर्घटना, चोट, अंग शैथिल्य, हृदय रोग, रक्तचाप इत्यादि पीड़ा देंगे। रोग होने, अशुभ समय आने, कष्ट और विपत्ति के समय ये हनुमान की उपासना तथा

आराधना करें, मंगलवार का व्रत करें और एक समय भोजन करें।

संगठन, संघ संचालक, नियंत्रक, चिकित्सा, ज्योतिष, धर्मोपदेशक, सैन्य विभाग, गोला–बारूद, आतिशबाजी का व्यवसाय, वकालत, औषधि विक्रेता, लौह तथा अन्य धातु संबंधी कार्य प्रभुता के कार्य, आदि इन सबको अंक 9 में समाविष्ट कर सकते हैं अतः जातक को ये व्यापार शुभ होंगे।

मंगलवार को भौम अरिष्ट दोष निवारण हेतु व्रत करें तथा यह व्रत पैंतालीस मंगलवार या कम से कम इक्कीस मंगलवारों को करें। लाल वस्त्र धारण करें एवं लाल वस्तुओं का दान करें। यथाशक्ति मंगल के मंत्र का मूंगे की माला पर जप करें।

मूंगा न मिलने पर संगसितारा, लाल हकीक, लाल मून स्टोन धारण कर सकते हैं। इसे मंगलवार के दिन, शुक्ल पक्ष में, शुभ मुहूर्त में, तांबा, सोना, मिश्रित धातु या चांदी में छह से नौ रत्ती का मूंगा, दाहिने हाथ की अनामिका उंगली में त्वचा को स्पर्श करते हुए धारण करें तो मंगल लाभान्वित करायेगा।

ये जातक मंगल ग्रह की उपासना करें अथवा हनुमान जी की उपासना करने से इनके सभी प्रकार के अरिष्ट दूर होंगे। इन्हें मंगलवार एवं शनिवार को सुंदर कांड का पाठ करना शुभ है। हनुमान जी के मंत्र का नित्य एक सौ आठ बार मूंगे की माला पर जप करें। हनुमान जी का मंत्र इस प्रकार है : **'हं हनुमत रुद्रात्मकाय हुं फट्'**। मंगलवार को एक समय भोजन करें तथा चने एवं मिष्ठान का प्रसाद हनुमान जी को अर्पण करने से इनके सभी कार्य बनेंगे।

इनके लिए मंगल के शुभ प्रभावों की वृद्धि हेतु, मंगल गायत्री मंत्र का प्रातः स्नान के बाद, ग्यारह, इक्कीस या एक सौ आठ बार जप करना लाभप्रद रहेगा।

भौम गायत्री मंत्र –

ऊँ अंगारकाय विद्महे शक्तिहस्ताय धीमहि तन्नो भौमः प्रचोदयात्।।

प्रातःकाल उठ कर इन्हें मंगल का ध्यान करना चाहिए, मन में मंगल की मूर्ति प्रतिष्ठित करें और तत्पश्चात् निम्न मंत्र का पाठ करें :

धरणीगर्भसंभूतं विद्युत्कांतिसमप्रभम्।

कुमारं शक्तिहस्तं तं मंगलं प्रणमाम्यहम्।।

अशुभ मंगल को अनुकूल बनाने हेतु मंगल के मंत्र का जप करना चाहिए। नित्य कम से कम एक माला एक सौ आठ जप करने से वांछित लाभ मिलता है, पूरा अनुष्ठान सौ माला का है।

ॐ क्राँ क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः।। जप संख्या 10000।।

इनके मंगलवार के दिन एक इंच लंबी अनंतमूल की जड़ ला कर, लाल धागे में लपेट कर, दाहिने हाथ में बांधें अथवा स्वर्ण या तांबे के ताबीज में भर कर गले में धारण करने से इनके मंगल का अशुभ प्रभाव कम होगा तथा शुभ प्रभावों में वृद्धि होगी।

इनके लिए प्रत्येक मंगलवार को एक बाल्टी या बर्तन में सोंठ, सौंफ, लाल चंदन, सिंगरफ, माल कांगनी और मौलसरी के फूल आदि औषधियों का चूर्ण कर, पानी में डाल कर स्नान करना सभी प्रकार के रोगों से मुक्तिदायक रहेगा। हर्बल स्नान से इनकी त्वचा की कांति में वृद्धि होगी एवं अशुभ मंगल के प्रभाव क्षीण हो कर इनके तेज एवं प्रभाव में वांछित लाभ होगा। सभी ग्रहों की शांति के लिए इनको कूठ्ठ, खिल्ला, कांगनी, सरसों, देवदारू, हल्दी, सर्वौषधि तथा लोध, को मिला कर, चूर्ण कर किसी तीर्थ के पानी में मिला कर, भगवान का स्मरण करते हुए, स्नान करें तो ग्रहों की शांति और सुख–समृद्धि प्राप्त होगी।

मंगल की शांति के लिए योग्य व्यक्ति को मंगल के पदार्थ–तांबा, सोना, गेहूं, लाल वस्त्र, गुड़, लाल चंदन, लाल पुष्प, केसर, कस्तूरी, लाल वृषभ, मसूर की दाल, पृथ्वी, विद्रुम आदि का दान करना लाभप्रद होता है।

मंगल को अनुकूल बनाए रखने हेतु मंगल यंत्र को भोज पत्र पर अष्टगंध (केशर, कपूर, अगर, तगर, कस्तूरी, अंबर, गोरोचन एवं रक्त चंदन या श्वेत चंदन) से लिख कर, सोने या तांबे के ताबीज में, धूप–दीप से पूजन कर, सोने की जंजीर या पीले धागे में, शनिवार को शुक्ल पक्ष में प्रातःकाल धारण करने से मंगल का शुभ प्रभाव शीघ्र ही मिलता है।

5. Yantra and Numerology

भारतीय ज्योतिष एवं वैदिक गणित के अतिरिक्त वेदों और पुराणों में भी अंक और अंक के महत्व तथा प्रभावादि के सम्बन्ध में अनेकों विवेचनाएँ आई हैं। भारतीय ज्योतिष तो अंको के प्रभाव पर ही आधारित है इसके अतिरिक्त पाश्चात्य अंकशास्त्री एवं प्रसिद्ध ज्योतिर्विद ने भी अंकों के शुभाशुभ को स्वीकार किया है।

4	9	2
3	5	7
8	1	6

3	5	7
8	1	6
4	9	2

8	1	6
3	5	7
4	9	2

• पाश्चात्य विचारों के अनुसार उपर्युक्त यंत्र को पूर्णता का प्रतीक मानते हैं।

• कुरान शरीफ में 786 अंक अर्थात् अंक को पूर्ण ब्रह्म का प्रतीक माना गया है क्योंकि इसका योग 3 आता है।

• हिन्दू धर्म ग्रन्थों में ब्रह्मा–विष्णु और महेश को त्रिदेव तथा ओउम् की लिखावट में मध्य 3 अंक आया जो वह पूर्णता का प्रतीक है।

इस प्रकार का चित्र व्यवसायिक स्थल दुकान के मुख्यद्वार पर, ऋद्धि–सिद्धि तथा कोष समृद्धि की पूर्णता हेतु चित्रित किया जाता है। पाश्चात्य ज्योतिषी इस प्रकार के यंत्र को शनि से सम्बन्धित मानते हैं परन्तु भारतीय ज्योतिष के अनुसार पन्द्रह अंक का यंत्र सूर्य एवं लक्ष्मी का प्रतीक माना जाता है। यंत्र चिकित्सा एवं कामना की पूर्ति हेतु, विघ्न–बाधा के शमनार्थ तथा ग्रहों की अनुकूलता हेतु ज्योतिष ग्रन्थों के अतिरिक्त पूजन पद्धति–यज्ञानुष्ठान की पुस्तकों में तथा तंत्र शास्त्र में इस प्रकार के यंत्र का निर्माण एवं उपयोग विधि तथा यंत्र धारण से लाभ के सम्बन्ध में प्रमाण मिलते हैं।

भारतीय कर्म–काण्ड एवं मंत्र–यंत्र तन्त्र की पुस्तकों में इस प्रकार के यंत्र के

निर्माण की विधि एवं सामग्रियों के सम्बन्ध में बताया गया है। विधिपूर्वक केसरादि, अष्टगन्ध एवं सिन्दूर, कुमकुम से भोजपत्र पर अनार, चमेली आदि की लेखनी से यंत्र लिखने का विधान एवं पूजन विधान के अनुसार यंत्र निर्माण कर स्वर्ण या ताम्र ताबीजों में बन्द कर गले अथवा बाँह में धारण करने से चमत्कारिक लाभ होता है।

इस प्रकार के यंत्रों के सम्बन्ध में मंत्र महार्णव, मंत्र–महोदधि, यंत्र चिन्तामणि आदि ग्रन्थों में वर्णित है।

सूर्य यंत्र

6	1	8
7	5	3
2	9	4

चंद्रयंत्र

7	2	9
8	6	4
3	10	5

भौम यंत्र

8	3	10
9	7	5
4	11	6

बुध यंत्र

9	4	11
10	8	6
5	12	7

बृहस्पति यंत्र

10	5	12
11	9	7
6	13	8

शुक्र यंत्र

11	6	13
12	10	8
7	14	9

शनि यंत्र

12	7	14
13	11	9
8	15	10

राहु यंत्र

13	8	15
14	12	10
9	16	11

केतु यंत्र

14	9	16
15	13	11
10	17	12

जिस प्रकार ज्योतिष और अंक का संबंध है, उसी प्रकार अंक और यंत्र तथा मंत्र का सम्बन्ध है। ज्योतिष विज्ञान की अनेकानेक शाखाएँ हैं तथा अनेक विज्ञान, दर्शन, मीमांसा, निरुक्त, छन्द आदि वैदिक विज्ञान से सम्बन्धित है जो अलौकिक तथा आश्चर्यजनक प्रभावदि से सम्बन्धित हैं।

ज्योतिष के अनुसार जब किसी भी अनिष्ट ग्रह की महादशा, अन्तर्दशा, प्रत्यन्तर दशा अथवा गोचर दशा चलती है तथा जातक पर अनिष्ट ग्रहों का दुष्प्रभाव पड़ने लगता है उस दशा में विधि–पूर्वक सम्बन्धित ग्रहों का यंत्र निर्माण कर धारण करने से पूतिकूलता दूर हो जाती है।

प्रसिद्ध अंक शास्त्री एवं पाश्चात् भविष्य वक्ता डाक्टर यूनाइट क्रॉस के मतानुसार विभिन्न भाग्यांक वालों के लिए शुभाशुभ विचार करने के बाद जातक को यंत्र का उपयोग करना चाहिए। यंत्र उपयोग से अनेक प्रकार के लाभ होंगे।

❒